बारहठ कृष्ण सिंह का
जीवन-चरित्र और

राजपूताना का अपूर्व इतिहास

(सन् 1850-1898)

- प्रथम भाग -

बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र
और
राजपूताना का अपूर्व इतिहास

मनोहरम्

जीवन चरित्र यह बारहठ कृष्णजू को,
अधुना अधीशन के गुणागुण ज्ञाता है।
नीति को निकेत अरु अनीति को धुम्रकेतु,
न्याय धर्म सेतु सत्य भाषन को त्राता है।
राजन के राज-रोग काटन को वैद्यराज,
विमल विचक्षण भुवालन को भ्राता है।
साधु-मति मंडन त्यों खण्डन कुमंत्रन को,
दुष्ट जन दंडन अनेक फल दाता है॥

बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र
और
राजपूताना का अपूर्व इतिहास

प्रथम भाग

[सन् 1850 - 1888]

-:: सम्पादक ::-

फतहसिंह मानव

-:: सह-सम्पादक ::-

प्रो. हरिशंकर भार्गव

(पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर)

श्रीमती नगेन्द्रबाला

(भू.पू. विधायक)

SCIENTIFIC
PUBLISHERS

"Barhat Krishna Singh Ka Jeevan-Charitra Aur Rajputana ka Apoorva Itihas" : PRATHAM BHAG Edited by Fateh Singh Manav : 2009 - Price

प्रथम संस्करण : 2009

प्रकाशक :
तनय शर्मा
साईन्टिफिक पब्लिशर्स (इंडिया)
5-ए न्यू पाली रोड, पो.बॉ. नं. 91,
जोधपुर
फोन - 0291 2433323, 2624154
फेक्स - 0291 2613449
E-mail: info@scientificpub.com

© फतहसिंह मानव, 2009

ISBN : 978-81-7233-568-7 (vol. 1)
978-81-7233-569-4 (vol. 2)
978-81-7233-570-0 (vol. 3)
978-81-7233-571-7 (Set)
eISBN: 978-93-8791-303-5 (Set)

पुस्तक सज्जा : डॉ. शैल चोयल एवं अमित कुमार

आवरण पृष्ठ : अमित कुमार

लेज़र टाइप सेटिंग : काम्पटैक प्रिन्टर्स्, 41, शास्त्री नगर, अजमेर, फोन (मो. 94130 40624)
भारत में मुद्रित

श्रीमती माणिक कँवर

विपत्ति की विषमतम बेला में जब सन् 1914 में अँगरेजों के दबाव से शाहपुरा की हवेली छोड़ने का वह क्षण उपस्थित हुआ, तब तिजोरी में सुरक्षित इस इतिहास के यही तीनों भाग लेकर अपने आँचल में छिपाये हुए, नितान्त असहाय अवस्था में जिसने अपना प्रतिष्ठित गृह सदा के लिए त्याग दिया, ग्रन्थकर्ता की उस ज्येष्ठ पुत्र-वधु वीराङ्गना माणिक कँवर सहधर्मिणी, क्रांतिकारी केसरीसिंह को समर्पित।

..... सम्पादक

PROFESSOR SATISH CHANDRA
Former Chairman,
University Grants Commission,
Society for Indian Ocean Studies
Secular House.

Secular House, 1 Aruna Asaf Ali Marg,
New Delhi - 110067
Ph.: (O) 2651 2701,
(R) 95124-2335-3655, 26123896
Fax: 91-11-2696 8171

PREFACE

It has frequently been said that India did not have an historical tradition except Kalhan's Raj Tarangini. If we look to Rajasthan, however, it is clear that there was a strong indigenous tradition consisting of Khyat, Vat, Vanshavali, Pidhi. This was a direct continuation of the Pauranik works, which included tradition, stories, narratives and genealogies. How far there was an impact of Persian historiography on the Rajasthan historical tradition is a matter of dispute. Quite apart from the Khyat and the Vartas, beginning from the time of Muhnot Nainsi's Khyat and Vigat and the series of Khyats written in the 17th, 18th and 19th centuries, which were used in a highly selective manner by Tod, there was a continuation of the Rajasthani historical tradition in the work of Kaviraj Shymaldas. This was followed by many Rajasthan historians who tried to bring together the indigenous tradition of historiography and the Persian trends of historiography. This was evident in the work of Pt. G.H. Ojha and many other Rajasthan historians. However, the work of Shri Krishna Singh Barhat dealing with Rajasthan in the second half of the 19th century remained unknown to the historical world due to a number of factors including the author's insistence that the work would only be published after his death. Shri Krishna Singh Barhat, who came from a distinguished family of Charans and was related to Kaviraj Shymaldas died in 1907 and his work remained unknown and forgotten, till it was retrieved by Shri Fateh Singh.

In his Introduction to the book, Shri Krishna Singh Barhat briefly mentions his early education and his close association with Swami Dayanad Saraswati. He also sets out the principles on the basis of which he had composed his work. He says there are "Many works in which there are praises for the routine administrative work of the rulers. Why should, I, therefore, waste my time labouring to repeat them? I shall, therefore, only write the truthful account of the rajas and maharajas whom I have seen or heard. It is argued that many others also write of what they have seen or heard, I would like to assert that I would write only what I have heard or seen myself so that people have no doubt about the veracity of the account".

How far the author was able to carry out the noble principles he set out is something, which would have to be judged by historians after reading his three-volume account. However, I would like to say that memoirs of this type are rare in our country and the effort of Shri Fateh Singh Manav to bring together the manuscript which has remained in neglect for such a long time is highly commendable. I congratulate him for his effort and look forward to the early publication of the work which, I am sure, would be welcome to the historians and would throw fresh light on social, political and economic conditions in Rajasthan during the second half of the 19th Century- a period of stagnation as well as flux.

December 06, 2006
Delhi

Satish Chandra

प्राक्कथन

मेरे प्रपितामह स्वनामधन्य कृष्णसिंहजी ने आज से सवा सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन राजपूताना का सत्य इतिहास 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' नामक लिखना प्रारम्भ किया था। उस समय वे उदयपुर महाराणा सज्जनसिंहजी के दरबार में शाहपुरा राजाधिराज नाहरसिंहजी की तरफ से वकील थे। महाराणा ने उन की योग्यता से प्रसन्न हो कर तनख़्वाह मुक़र्रर कर उन्हें अपने विश्वासपात्र मर्ज़ीदानों में ले लिया था। ऐसा दोहरा दायित्व निभाना वास्तव में बड़ी टेढ़ी खीर थी। मेरे प्रपितामह का जन्म शाहपुरा राज्यान्तर्गत उन के पैतृक गाँव देवपुरा में फाल्गुन सुदी एकम शुक्रवार वि.सं. 1906 तदनुसार सन् 1850 को हुआ था। उन के पिता का नाम ओनाड़सिंहजी और माता का नाम शृँगार कँवर था जो कविराजा श्यामलदासजी की बड़ी सहोदरा थीं। इस रिश्ते से कविराजा श्यामलदासजी उन के मामा हुए। कृष्णसिंहजी ने विद्याध्ययन शाहपुरा में परमहंस सीतारामजी से किया। कृष्णसिंहजी ने अपने माता-पिता और गुरु की वन्दना इस ग्रंथ के तीनों भागों में 'मंगलाचरण' के रूप में अनन्य श्रद्धा से की है। कृष्णसिंहजी शाहपुरा राजाधिराज के वंशानुगत पोळपात (प्रतोलीपात्र) थे एवं राज्य में उन के साथ बड़ी इज़्ज़त का बरताव था।

कृष्णसिंहजी शुरू से ही अन्धविश्वास, पाखण्ड, मूर्ति-पूजा, फलित्-ज्योतिष आदि में विश्वास नहीं रखते थे। उन की मेधा में नव-चेतना की अरुणिम रश्मियों का प्रकाश पहुँच चुका था और उन को वैसा ही समर्थ अवलम्बन स्वामी दयानन्द सरस्वती के रूप में प्राप्त हो गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती देश में नव-जागरण के पुरोधा और स्वातंत्र्य के अग्रदूत थे। राजपूताना में उन का सर्व-प्रथम आगमन सन् 1882 में चित्तौड़ में हुआ था और वहीं कृष्णसिंहजी का साक्षात्कार उन से हुआ। उस के बाद उदयपुर-प्रवास में उन्होंने महाराणा सज्जनसिंहजी के साथ स्वामी दयानन्द सरस्वती से मनुस्मृति, न्याय, दर्शन, वैशेषिक आदि शास्त्रों का अध्ययन किया और ऋषि का शिष्यत्व ग्रहण किया। सुप्रसिद्ध इतिहासकार जयचंद्रजी विद्यालंकार* ने उन की गणना स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रमुख शिष्यों श्यामजी कृष्ण वर्मा बार-एट-लॉ व स्वामी श्रद्धानन्द के साथ की है।

कृष्णसिंहजी हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी के विद्वान् थे और डिंगल एवं पिंगल के उत्तम कवि थे। उन्होंने संस्कृत में अनेक श्लोकों की रचना की। वे अपने समय के माने हुए राजनीतिज्ञ एवं इतिहासकार थे। सभी रियासतों में उन का बड़ा सम्मान था। जोधपुर महाराजा जसवंतसिंहजी ने उन्हें पाँव में सोना (स्वर्णाभूषण) प्रदान किया जो उस ज़माने में बड़ा सम्मान-सूचक था।

प्रस्तुत ग्रंथ तीन भागों में है और एक हजार पृष्ठों में है। इस के अतिरिक्त कृष्णसिंहजी ने महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण-कृत 'वंशभास्कर' की 'उदधि-मंथिनी-टीका' लिखी। यह ग्रंथ 'महाभारत' के आकार का है। उन की एक और महती कृति थी 'कृष्ण नाममाला डिंगल कोश' जिस में अस्सी हजार शब्द संकलित किये गये थे। विधि की विडम्बना है कि वह ग्रंथ हमेशा के लिए विलुप्त हो चुका और उस की स्मृति-मात्र शेष रही है।

महाराणा सज्जनसिंहजी उदयपुर की सेवा में रहते हुए और स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धान्तों को आत्मसात् करने के बाद सन् 1882 में जब कृष्णसिंहजी की उम्र बत्तीस वर्ष की थी, उन के मानस में एक

---

* भूमिका, पृ.सं. ङ 'हमारा राजस्थान' लेखक पृथ्वीसिंह मेहता, उदयपुर

ऐसे सार्थक संकल्प का उदय हुआ कि उन्हें कोई ऐसा काम करना चाहिए जिस से मरणोपरान्त उन का नाम विद्वानों के जिह्वाग्र पर रहे। इस कार्य हेतु सब पहलुओं पर विचार करने के बाद यह निश्चय किया कि साधारणतया मनुष्य के लिए अपने समय का सत्य इतिहास लिखना असम्भव होता है इसलिए वे वर्तमान समय के राजपूताना का सत्य इतिहास लिखेंगे। परन्तु यह कार्य बहुत दुरूह था इसलिए उन्होंने इस सम्बंध में महाराणा सज्जनसिंहजी की अनुमति प्राप्त की और उन्हें सभी तथ्यों से अवगत कराया कि इस में आपके गुण और दोष यथार्थ रूप से लिखे जायेंगे। अत: यदि इतनी सहनशीलता हो और मेरे मरण- पश्चात् इसे नष्ट नहीं करें तो मैं इस इतिहास का लिखना प्रारम्भ करूं। गुणज्ञ महाराणा ने सहर्ष आज्ञा प्रदान कर दी और ऐसी ही अनुमति शाहपुरा राजाधिराज नाहरसिंहजी ने प्रदान की। यह इतिहास गुप्त रूप से लिखा गया जो लेखक ने आजन्म किसी को नहीं दिखाया एवं प्रस्तुत इतिहास का प्रकाशन उन के मरणोपरान्त होना था। इस इतिहास में केवल सत्य ही लिखा जायगा इस के लिए उन्होंने संकल्प के अनुरूप ही कठोर नियम पालन करने की यह शपथ ली *''मैं (बारहठ कृष्णसिंह) शपथ-पूर्वक नियम करता हूँ कि ईर्षा, द्वेष, असूया, लोभ, क्रोध, भय, प्रीति आदि कारणों से मिथ्या लेख कदापि नहीं लिखूंगा।''*

सन् 1892-93 में कई राजनीतिक कारणों से उदयपुर का पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल माइल्स महाराणा फतहसिंहजी के इतना ख़िलाफ़ हो गया कि उस ने महाराणा के राज्याधिकार को दो साल की अवधि के लिए छीनने हेतु अपनी गुप्त-रिपोर्ट एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल कर्नल ट्रेवर को प्रेषित कर दी। इस पूरे षड्यंत्र की जड़ में था रियासत का दीवान पन्नालाल मेहता जिस पर कर्नल माइल्स का वरद-हस्त था इसलिए वह बेख़ौफ़ हो कर महाराणा के विरुद्ध काम करता था। उस ने कर्नल माइल्स को यहाँ तक भड़काया कि यदि वे किशनजी और बलवंतसिंह मेहता को अलग करवा दें तो *''महाराणा साहब लाचार होकर आप से दब जावें और जो आप कहें वह कर लेवें।''* इस कुचक्र की परिणिति ए.जी.जी. कर्नल ट्रेवर के ख़रीते दिनांक 1 मई 1893 के रूप में हुई जिस के अनुसार महाराणा साहब को सख़्त चेतावनी दी गयी और कृष्णसिंहजी को महाराणा की नौकरी एवं उदयपुर से निष्कासित कर दिया गया। उधर, कर्नल माइल्स ने देवली के पोलिटिकल एजेन्ट थॉरन्टन से कह कर उन्हें शाहपुरा से निकलवा दिया और वकालत से भी हटा दिया। उस ज़माने में कृष्णसिंहजी जैसे सभ्रान्त-व्यक्ति के लिए अँगरेज सरकार के हुक्म से रियासत से निकाले जाने को बड़ी बदनामी का द्योतक माना जाता था।

कृष्णसिंहजी जैसे प्रबुद्ध पुरुष के लिए यह अनुमान लगाना कठिन नहीं था कि उन पर निकट भविष्य में कोई बड़ी विपत्ति आने वाली है। अत: जब वे महाराणा साहब की तरफ से गुप्त-मंत्रणा हेतु जोधपुर के मुसाहिब-आला महाराज सर प्रतापसिंहजी के पास भेजे गये तो उन्होंने सर प्रतापसिंहजी को सारी परिस्थिति से वाक़िफ़ कर महाराजा जसवंतसिंहजी से मौखिक आश्वासन प्राप्त कर लिया था कि उदयपुर से निकाले जाने की सूरत में उन्हें जोधपुर में रख लिया जायेगा। अत: मई सन् 1893 में उदयपुर और शाहपुरा से निकाले जाने के साल भर बाद वे जोधपुर चले गये। वहाँ उन्हें सन् 1898 में पक्षाघात हो गया और उसी के साथ प्रस्तुत इतिहास के लिखने पर विराम लग गया। दैवी कृपा से क़रीब तीन साल बाद उन्हें ऐसी घातक बीमारी से मुक्ति मिल गयी। जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने दो महत्वपूर्ण साहित्यिक कार्य किये जिन का उल्लेख उपरोक्त पंक्तियों में किया गया है। मेरे प्रपितामह का देहावसान सन् 1907 में जोधपुर में हुआ।

प्रस्तुत इतिहास प्रारम्भ करने के साथ ही कृष्णसिंहजी ने निश्चय कर लिया था कि इस का प्रकाशन उन के मरणोपरांत कराया जाये और इस हेतु पाँच हजार रुपये भी अलग रख दिये थे जो उस समय के लिहाज़ से पर्याप्त थे। लेकिन उस समय अँगरेजों के राज्य में और देशी रियासतों में ऐसे सत्य इतिहास को छापने के लिए कोई भी मुद्रणालय मालिक हिम्मत नहीं कर सकता था। अत: सन् 1947 में देश के आज़ाद होने और सन् 1949 में रियासतों के विलीनीकरण तक इस इतिहास को सूर्य की रोशनी दिखाना असम्भव था।

प्रपितामह के निधन के सात साल बाद ही उन के बड़े पुत्र केसरीसिंहजी, छोटे जोरावरसिंहजी और पौत्र कुँवर प्रतापसिंह देश के स्वातंत्र्य-संग्राम में सर्वतोभावेन कूद पड़े और सशस्त्र-क्रांति के अग्नि-पथ का वरण किया। फलस्वरूप, उन पर राजद्रोह और फ़ौजदारी कानून के अंतर्गत संगीन मुक़द्दमे चलाये गये। जोरावरसिंहजी फ़रार हो गये और आजन्म ग़िरफ़्तार नहीं किये जा सके। पकड़े जाने की सूरत में उन्हें फाँसी के तख़्ते पर झूलना था। केसरीसिंहजी को आजन्म काला-पानी (अण्डमान्स) की सज़ा हुई। प्रताप को पाँच साल की सज़ा भोगने के लिए बरैली सैंट्रल जेल के Solitary-Cell में रखा गया। वहीं पर अमानुषिक अत्याचारों को सहते-सहते उस ने अपने प्राणों की बलि दी एवं उसे जेल-परिसर में क़ब्र में दफ़ना दिया गया। केसरीसिंहजी को सुदूर हजारी बाग सैंट्रल जेल के Solitary-Cell में बन्द रखा गया और प्रथम विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद सन् 1919 में उन्हें मुक्त किया गया। उन का देहावसान अगस्त सन् 1941 में हुआ।

एक तरफ अँगरेज सरकार का दमन और दूसरी तरफ उस के दबाव से शाहपुरा राजाधिराज नाहर सिंहजी द्वारा प्रपितामह की पुश्तैनी जागीर, गढ़-नुमा हवेली और समस्त चल-अचल सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गयी। इस प्रकार सारा परिवार छिन्न-भिन्न हो कर पार्थिव दृष्टि से सर्व-लुंठित हो गया था। ऐसी विकट परिस्थिति में प्रस्तुत इतिहास को नष्ट होने से मेरी दादी माँ माणिक कँवरजी ने बचाया। उन्होंने सब कुछ छोड़ कर पितु: श्री की इस अमूल्य थाती को अपने आँचल में छिपा कर हमेशा के लिए गृह-त्याग किया। मुझे प्रसन्नता है कि वही आज एक शताब्दी बाद आप के सम्मुख प्रस्तुत है। इस के साथ ही मेरे प्रपितामह द्वारा अठारह वर्ष-पर्यन्त किया गया अथक परिश्रम और सत्य-लेखन साकार हो रहा है। यह ईश कृपा और सत्य की जय है।

दिनांक 25-06-2008 नगेन्द्रबाला

सम्पादकीय

(1) विषय-प्रवेश

जीवन की कुछ अनमोल स्मृतियाँ ऐसी होती हैं जो मानस-पटल पर अमिट बन कर हृदय में निरन्तर नवीन-स्फुरण का संचार करती रहती हैं। ऐसी ही स्मृतियों में से एक स्मृति यह है। बात सन् 1940-41 की है जब मैं जसवंत कॉलेज, जोधपुर में तृतीय वर्ष का विद्यार्थी था और अपने सहपाठी अभयकरणजी बारहठ के साथ नागौरी दरवाजे के अन्दर राजकीय प्राइमरी स्कूल, बागर में कार्यरत मास्टर साहब सीतारामजी लालस (बाद में पद्मश्री एवं 'राजस्थानी सबद कोस' के कोशकार) से मिलने गया। यद्यपि उस प्रसंग के बीते छह दशक से अधिक समय हो गया परन्तु आज भी उस की स्मृति वैसी ही तरोताज़ा बनी हुई है। लम्बा क़द, दुबली-पतली शरीर-यष्टि और खाकी साफा बाँधे मास्टर साहब हम से वार्तालाप करते हुए चल रहे थे। जोधपुर का उत्तुंग दुर्ग हमारे सामने खड़ा था। सहसा, मास्टर साहब चलते हुए रुके और कहने लगे ''कृष्णसिंहजी बारहठ ने अपने समय के राजपूताना का सच्चा-सच्चा इतिहास लिखा और आदेश दिया कि इसे उन के मरणोपरान्त प्रकाशित किया जाए।'' यह सुनते ही मन में सहसा जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक था कि वास्तव में वह इतिहास कैसा है और उस के लेखक ने अपनी मृत्यु के पश्चात् इस के प्रकाशन के लिए क्यों कहा? यह था मेरा प्रथम परिचय 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' के साथ। पूरे परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इसे भी एक विचित्र संयोग ही कहा जायगा कि इस इतिहास के सम्पादन का दायित्व इन पंक्तियों के लेखक को मिला।

प्रस्तुत इतिहास के लेखक कृष्णसिंह बारहठ का जन्म वि. संवत् 1906 फाल्गुन सुदी एकम (तदनुसार ईसवी सन् 1850) को उनके पैतृक गाँव देवपुरा, शाहपुरा राज्य में हुआ था। उस के पिता का नाम ओनाड़सिंह और माता का नाम श्रृंगार कँवर था। प्रस्तुत इतिहास प्रारम्भ करने के पूर्व सन् 1882 में कृष्णसिंह महाराणा उदयपुर, सज्जनसिंह के दरबार में शाहपुरा का वकील हो कर चला गया था। इस से पूर्व कृष्णसिंह शाहपुरा में रेवेन्यू ऑफीसर के पद पर था। इसी दौरान देवली का पोलिटिकल एजेण्ट केप्टिन मेवर उस की हवेली के पास वाली ज़मीन पर एक महाजन द्वारा दायर दीवानी मामले में मौक़ा देखने शाहपुरा आया। कृष्णसिंह इस ख़याल से पोलिटिकल एजेन्ट से मिलने नहीं गया कि वह इस दावे में एक फ़रीक़ है इसलिए न्याय की दृष्टि से बिना बुलाये नहीं जाना चाहिए। लेकिन पोलिटिकल एजेन्ट ने कृष्णसिंह के मिलने न आने को उलटा समझा कि उस को इतना ग़ुरूर हो गया है कि वह हम से मुलाक़ात करने नहीं आया। पोलिटिकल एजेन्ट इतना नाराज़ हुआ कि राजाधिराज नाहरसिंह से कहा कि कृष्णसिंह को पाँच साल के लिए शाहपुरा से बाहर निकाल दिया जाये। राजाधिराज के पास इस हुक्म की तामील करने के अलावा और कोई चारा न था। फलस्वरूप, कृष्णसिंह को महाराणा के दरबार में भेज दिया गया और यह निर्देश दे दिए कि पाँच साल तक वह शाहपुरा न आये।

इस अवधि में सन् 1882 चित्तौड़ में कृष्णसिंह का साक्षात्कार नव-युग के पुरोधा स्वामी दयानन्द सरस्वती से हुआ। इसी साल स्वामी दयानन्द सरस्वती का उदयपुर में छह माह का प्रवास हुआ। महाराणा सज्जनसिंह नित्य-प्रति उन से मनुस्मृति, न्याय, दर्शन, वैशेषिक आदि पढ़ने जाते थे तब कृष्णसिंह भी उन के साथ जाता और अध्ययन के साथ उस ने स्वामीजी के सभी सिद्धान्त आत्मसात् कर लिये। स्वामी दयानन्द

सरस्वती के सान्निध्य में कृष्णसिंह के मन की सभी शंकाओं का समाधान हो गया। महाराणा सज्जनसिंह ने कृष्णसिंह की योग्यता से प्रभावित हो कर उसे अपनी सेवा में ले कर साठ रुपये प्रतिमाह की तनख़्वाह मुक़र्रर कर अपने अन्तरंग मज़ीदानों में ले लिया यद्यपि कृष्णसिंह शाहपुरा के अर्द्ध-स्वतंत्र राज्य का वकील था। कृष्णसिंह के मातुल कविराजा श्यामलदास मेवाड़ के प्रधान थे। इस समय कृष्णसिंह की आयु बत्तीस वर्ष की थी। इस अवधि में सन् 1882 में उस के मन में संकल्प पैदा हुआ कि मनुष्य जीवन में आ कर उसे व्यर्थ न गँवाकर कोई ऐसा काम किया जाए जिस से चिरकाल तक उस का नाम विद्वानों की जिव्हा पर बना रहे। अंत में सब विकल्पों पर मनन करने के बाद यह निश्चय किया कि वह राजपूताना का अपने समय का सत्य इतिहास गुप्त रीति से लिखे जिसे आजन्म किसी को नहीं बताये और उस की मृत्यु के पश्चात् ही उसे प्रकाशित किया जावे। इस प्रकार, इस अवधि में उस ने प्रस्तुत इतिहास की सम्पूर्ण रूप-रेखा निश्चित कर ली थी। अंतत: दिनांक 27 जुलाई सन् 1884 को इस इतिहास के प्रथम भाग का विधिवत् लिखना प्रारम्भ हुआ और यह क्रम अनवरत गति से चौदह साल तक चलता रहा जो 29 अक्टोबर सन् 1898 को जोधपुर में समाप्त हुआ जब कृष्णसिंह फ़ालिज जैसे घातक रोग से आक्रान्त हो गया। इस अवधि में ग्रंथकर्ता ने प्रथम और द्वितीय भाग समाप्त कर लिए परन्तु तृतीय भाग को बीमारी के कारण अधूरा छोड़ना पड़ा। इस अंतराल में प्रस्तुत इतिहास के तीनों भागों के फुल-स्केप साइज के तीन लाइनदार जिल्द-बन्ध रजिस्टरों में 979 पृष्ठ लिखे गये। तीनों भागों के काल-खण्ड की अवधि विक्रमी और ईसवी सन् में तथा पृष्ठ संख्या का विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र.सं.	भाग संख्या	अवधि		पृष्ठ सं.	वि. विवरण
		विक्रमी संवत्	इसवी सन्		
1.	प्रथम	1941-1945	1884-1888	382	-
2.	द्वितीय	1946-1950	1889-1893	367	-
3.	तृतीय	1951-1955	1894-1898	230	-
			कुल पृष्ठ सं.	979	

तीनों रजिस्टर एक ही आकार के हैं जिन की लम्बाई 13'' और चौड़ाई 8'' है। प्रत्येक पृष्ठ में 33 पंक्तियाँ हैं। ग्रंथकर्ता ने सर्वत्र काली स्याही प्रयुक्त की है जैसा कि पुराने ज़माने में प्रचलन था। लिखावट बारीक और अक्षरों के सिर बँधे हुए नहीं हैं। आश्चर्य है कि इतने विपुल पृष्ठ-संख्या वाले ग्रंथ में कहीं एक भी शब्द कटा हुआ नहीं है। गुप्त-रीति से लिखे गये इस इतिहास को ग्रंथकर्ता ने आजीवन अपनी तिजोरी में सुरक्षित रखा और अपने जीवन-काल में किसी को नहीं दिखाया।

प्रथम भाग सन् 1884 से 1888 तक पाँच साल की अवधि का है जैसा कि ग्रंथकर्ता ने ग्रंथारम्भ के पूर्व निश्चय किया था कि प्रत्येक भाग पाँच साल का होगा। ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह का संकल्प था कि वह अपने जीवन-काल के राजपूताना का सत्य इतिहास लिखेगा। अत: प्रथम भाग कृष्णसिंह के जन्म सन् 1850 से प्रारम्भ हो कर सन् 1888 को समाप्त होता है। अस्तु, सन् 1850 से 1884 तक जो भी राजा शासन कर के गुजर गये, उन सभी का इतिहास इस में समाविष्ट किया गया है ताकि इतिहास में क्रम-भङ्ग का दोष

न रहे। इस प्रकार, ग्रंथकर्ता ने इस भाग के पृष्ठ सं. 133 पर पूर्वापर-संगति मिलाई है। इस स्थल पर पहुँचने पर कृष्णसिंह को विचार आया कि मानव शरीर क्षणभङ्गुर है इस का कोई भरोसा नहीं है इसलिए यदि वह इस के आगे कुछ न लिख सके तो भी यहाँ तक का इतिहास अवश्य छप जाना चाहिए ताकि उस का परिश्रम निष्फल न जाये।

(2) ग्रंथकर्ता के मन्तव्या-मन्तव्य

कृष्णसिंह ने अपनी मान्यताओं के सम्बंध में काफी विस्तार के साथ लिखा है। वह बहु-पठित और अपने सिद्धान्तों का पक्का था। उस के सभी सिद्धान्त विज्ञान-सम्मत थे, अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता में उस का तनिक भी विश्वास नहीं था। वह स्वर्ग-नरक, मूर्ति-पूजा, मुहूर्त्त आदि को नहीं मानता था और न फलित् ज्योतिष, कर्मकाण्ड आदि में ही विश्वास था। वह केवल एक निराकार, सर्वव्यापी, सर्वसमर्थ परमात्मा में विश्वास रखता था, देवी-देवताओं को नहीं मानता था। वह सत्य और अहिंसा पर आधारित सार्वभौम, सर्व-कालिक सिद्धान्तों, जैसे 'परोपकाराय पुण्याय, पापाय पर पीड़नम्' व 'अहिंसा परमोधर्मः' में विश्वास रखता था। कृष्णसिंह स्वामी दयानन्द सरस्वती का शिष्य था इसलिए उसे केवल उन्हीं के सिद्धान्त मान्य थे। वह वेद-मत को मानने वाला था। वेद को वह अपौरुषेय न मान कर मानव-कृत मानता था। इस संदर्भ में यह नहीं भूलना चाहिए कि तत्कालीन समाज अशिक्षा और पाखण्ड में आकण्ठ डूबा हुआ था, रुढ़ियों व जड़ता की मजबूत जंजीरों से जकड़ा हुआ था। ऐसे समय में इन से बच कर निकलना बड़े साहस का काम था। ऐसे ही बिरले मनुष्यों में था कृष्णसिंह और इसीलिए वह ऐसे दुष्कर कार्य को हाथ में लेने का साहस कर सका।

(3) ग्रंथ मुद्रण के सम्बंध में ग्रंथकर्ता के निर्देश और उन की अनुपालना

कृष्णसिंह ने प्रस्तुत इतिहास लिखना प्रारम्भ किया उस के साथ ही उस ने ग्रंथ मुद्रित होने के सम्बंध में इतने स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए कि जिस से छापने वाले को किसी प्रकार की दुविधा न रहे और उस के लिए सीमा तय कर दी गई जिस का उल्लंघन किसी सूरत में न हो। यह ग्रंथ कृष्णसिंह के मरणोपरान्त प्रकाशित होना था इसलिए ऐसे निर्देश अनिवार्य थे जिस से कि मूल-ग्रंथ में किसी प्रकार के हस्तक्षेप की सम्भावना ही न रहे।

ग्रंथकर्ता ने प्रथम भाग की 'द्वितीय भूमिका और ग्रंथ लिखने के नियम' के संदर्भ में एक उप-विषय 'इस ग्रंथ के नियम और संकेत' के अन्तर्गत 'संकेत सं. 6 व 8 में निर्देशों को स्पष्ट किए हैं जो नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं। कृष्णसिंह की दिनचर्या बहुत व्यस्त थी क्योंकि वह महाराणा सज्जनसिंह के सोने के कुछ देर बाद घर आता और प्रातः महाराणा के जागने के पूर्व महलों में पहुँच जाता था। ऐसी अवस्था में इतिहास जैसे महत्वपूर्ण विषय पर लिखना बड़ा कठिन काम था। अतः यह संकेत आवश्यक हुए :-

1. *संकेत सं. 6 में ग्रंथकर्ता लिखता है ''लिपि में तालव्यादि 'शकार' लिखने का नियम छोड़ कर सब स्थानों में हमने दंती 'सकार' लिखने का क्रम रखा है। यह केवल सुगमता और शीघ्रता के कारण लिखा है क्योंकि नागरी अक्षरों के सिरे नहीं बाँधे जायें तब तक शुद्ध लिपि नहीं हो सकती जैसा कि (ख)। इस अक्षर का सिर लकीर खींच कर नहीं बाँधा जावे तो (र) और (व) जुदे प्रतीत हो कर (र व) पढ़ा जायेगा और सिरे बाँधने में देरी होती है। इतना हम को अवकाश नहीं। इस कारण से जिस समय यह ग्रंथ मुद्रित किया जावे, मुद्रण करने वाले तालव्यादि 'शकार' अपने अपने*

स्थानों में शुद्ध करके छापें। यहाँ पर (ख) की जगह मूर्धा (ष) लिखा जावेगा जो सभी पुस्तक में यही क्रम जानना चाहिए।''

2. संकेत सं. 8 में उपरोक्त संकेत को और स्पष्ट करते हुए ग्रंथकर्ता लिखता है *''मुझ को समय बहुत ही कम मिलता है इससे यह ग्रंथ बड़ी शीघ्रता से लिखा जाता है इस कारण शुद्ध लिपि का ख़याल रखना भी मैंने छोड़ दिया है जो बहुधा अशुद्ध लिखा हुआ मिलेगा जिसको छापने वाले शुद्ध करके छापें। परन्तु मेरे लिखे हुए आशय (मज़मून) को बदलने का किसी को अधिकार नहीं है। केवल लिपि शुद्ध कर लेवें जैसा कि लिखने में (वृ) वहाँ (ब्र) अथवा (ब्रि) लिखा जावे और इख़्तियार के स्थान में (इक्तियार) या (इकतियार) लिखा दिया जावे। इसी तरह से बख़्त की जगह (बखत) और गवर्नमेंट की जगह (गवरमेंट) और एक की जगह (येक) लिख दिया जावे उनको शुद्ध करके छापें। यहाँ केवल सूचना मात्र लिख दिये हैं परन्तु बुद्धिमान् मुद्रित करने वाले इसी तरह अन्य शब्दों को भी समझ लेवें।''*

उपरोक्त दोनों संकेतों को अविकल रूप से इसी उद्देश्य से दिया गया है कि जिस से पाठकों को संतोष हो जाय कि ग्रंथ का सम्पादन करते समय इन निर्देशों का अक्षरसः पालन किया गया है और कहीं पर भी उल्लंघन नहीं हुआ है।

(4) मंगलाचरण

आधुनिक इतिहास ग्रंथों में मंगलाचरण नहीं देखा जाता परन्तु ग्रंथकर्ता ने प्रस्तुत इतिहास के तीनों भागों का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया है जैसा कि प्राचीन ग्रंथों में होता आया है। ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह संस्कारशील व्यक्ति था। उस ने हर मंगलाचरण में माता-पिता और गुरु की वन्दना बड़े मार्मिक शब्दों में की है। कृष्णसिंह की माता शृंगार कँवर ईशभक्त, गृह-कार्य में दक्ष और पतिव्रत-धर्म-परायणा थीं एवं पिता ओनाड़सिंह चतुर, जितेन्द्रिय, उदार-मना, धीर, वीर और गुणशील थे। कृष्णसिंह माता-पिता का पूर्ण भक्त था। उस के गुरु सीताराम परमहंस ऋषि-तुल्य थे, वे बड़े वैरागी और ज्ञानी थे। ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह को जो कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ वह सद्गुरु सीताराम के अनुग्रह से ही हुआ था।

इस मंगलाचरण के माध्यम से ग्रंथकार कृष्णसिंह का आशय पितृ-ऋण और ऋषि-ऋण से मुक्त होना है। इस संदर्भ में द्वितीय भाग के मंगलाचरण में दिये गये तीन दोहों को उद्धृत किया जाता है :-

चतुर जितेन्द्रि उदारचित, धीरवीर गुणधाम।
'कृष्ण' पिता अवनाड़ कौं, प्रथमहि करत प्रणाम ॥1॥
पूर्ण दक्ष गृहकर्म प्रति, पतिव्रतधर्म प्रवीन।
कृष्ण मातु श्रृँगार की, अहिनिशि भक्ति अधीन ॥2॥
रहे लाग वैराग्य रत, विप्र वंश मुनि वेश।
सीताराम अलोभ सुचि, मम गुरु सिद्ध हमेश ॥3॥

(5) मनहर : 'जीवन चरित्र यह बारहठ कृष्णसिंहजू को'

ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह ने मूल ग्रंथ के प्रथम और द्वितीय भाग की भूमिकाओं में एक 'मनहर' छंद लिखा है। यह छंद इतना सटीक है कि इसे एक प्रकार से प्रस्तुत इतिहास की विशिष्ठता का परिचायक कहा जा सकता है। इस में ग्रंथकर्ता ने स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है कि यह ग्रंथ नीति का निकेतन और अनीति

पर चलने वालों के लिए पुच्छल तारे के समान अमंगलकारी है। यह इतिहास न्याय और धर्म का सेतु और सन्मार्ग का अनुसरण करने वालों का रक्षक और शुद्ध न्याय-सम्मत नीति पर चलने वालों का प्रशंसक है, उसी प्रकार दुर्नीति और दुर्जनों की भर्त्सना करने वाला है।

ग्रंथ के सम्पादन के दौरान कुछ विद्वान् मित्रों की सम्मति हुई कि इस 'मनहर' छंद को ग्रंथ के तीनों भागों के प्रारम्भ में प्रथम पृष्ठ पर दिया जाय। उन की सम्मति का आदर करते हुए इसे ग्रन्थारम्भ में दिया गया है। इस से समूचा ग्रंथ संक्षेप में परिभाषित हो जाता है।

(6) नामवरी की पाँच बातें, महाराणा सज्जनसिंह से सत्य इतिहास लिखने बाबत अनुमति प्राप्त करना

कृष्णसिंह ने ग्रंथ की भूमिका में चिरकाल तक मनुष्य नाम बना रहे इस संदर्भ में पाँच बातें गिनाई हैं :- (i) नवीन मत स्थापन कर मज़हब का पेशवा बनने से, (ii) अपनी शक्ति से अधिक दान देने व वदान्यता का नियम रखने से (iii) वीरता से शत्रुओं को पराजित कर मरने, मारने से (iv) जलाशय, शिवालय आदि बनाने से व (v) नवीन आशय का उत्तम ग्रंथ बनाने से जो सत्य के विमुख न हो। इन में से प्रथम चार के लिए अपनी असमर्थता बताते हुए पाँचवा उपाय करना ही योग्य समझा परन्तु इस में भी उस की मान्यता है कि भाषा कविता के क्षेत्र में महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण विरचित 'वंशभास्कर' के आगे भाषा कविता करना वृथा चेष्टा है क्योंकि वेदव्यास के बाद सूर्यमल्ल जैसा कवि नहीं हुआ। 'खण्डन-मण्डन' की दिशा में स्वामी दयानंद सरस्वती के 'सत्यार्थप्रकाश' को देख कर आगे लिखने की रुचि नहीं रहती कारण कि शंकराचार्य के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा कोई विद्वान् भारतवर्ष में नहीं हुआ और इतिहास बनाने के सम्बन्ध में उस के मातुल कविराजा श्यामलदास राजपूताना का नवीन इतिहास 'वीर विनोद' बना रहे हैं उस के आगे राजपूताना का नया इतिहास बनाना अपनी अयोग्यता प्रकट करना है। वास्तव में महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण, स्वामी दयानन्द सरस्वती और कविराजा श्यामल दास अपने-अपने क्षेत्र में Last of the Giants थे।

परिणामतः कृष्णसिंह ने निश्चय किया कि वर्तमान समय का सत्य इतिहास किसी से कदापि नहीं लिखा जा सकता इसलिए वह राजपूताना की रियासतों का सत्य इतिहास लिखे और *''हमने यह युक्ति निकाली कि यह पुस्तक गुप्त रीति से लिखी जाय जो मेरे जीवन-पर्यन्त किसी को नहीं दिखाऊँ इस अवस्था में मुझे किसी का कुछ भय नहीं है क्योंकि मेरे मरण पश्चात् यह पुस्तक प्रसिद्ध होवेगी तो मैं उन क्रोध-कर्ताओं के अधिकार में नहीं होऊँगा तो उनका क्रोध करना व्यर्थ है। इस कारण से मुझे सबसे सुगम यही उपाय मिला कि मेरी दिनचर्या के नाम से नवीन यह ग्रंथ बनाऊँ जिस में राजपूताना की रियासतों का वर्तमान समय का अपूर्व इतिहास आ जाय। कृष्णसिंह की सत्य लेखन के प्रति कितनी प्रतिबद्धता थी वह ग्रंथारम्भ करने के पूर्व ली गयी उस की इस शपथ से स्पष्ट होती है ''मैं (बारहठ कृष्णसिंह) शपथपूर्वक नियम करता हूँ कि ईर्षा, द्वेष, असूया, लोभ, क्रोध, भय, प्रीति आदि कारणों से मिथ्या लेख कदापि नहीं लिखूंगा।''* इतिहासकार पी.एन. ओक, पूना का कथन है कि उन्होंने किसी इतिहासकार को ग्रंथ लिखने के पूर्व इस प्रकार की शपथ लेते नहीं देखा। वास्तव में कृष्णसिंह द्वारा ऐसी कठोर शपथ लेना अनिवार्य था क्योंकि ऐसी शपथ के अभाव में उस के लेखन का सत्यापन होना सम्भव नहीं था। मुख्य बात यह है कि चारित्रिक-दृढ़ता के बिना सत्य लिखना असम्भव है और ऐसे लिखने वाले भी बिरले ही होते हैं।

प्रस्तुत इतिहास लिखने के पूर्व बारहठ कृष्णसिंह ने *''महाराणा सज्जनसिंह उदयपुर और शाहपुराधिप राजाधिराज नाहरसिंह से निवेदन किया उक्त आशय का ग्रंथ बनाने का विचार है जो यदि मुझ से यह नियम*

कर लेवें कि आप इस ग्रंथ को देखने का कभी हठ नहीं करें और मेरा शरीर न रहने के पीछे नष्ट नहीं करेंगे तो इस ग्रंथ का लिखना प्रारम्भ करूं। इस में आप के अनेक दोष दिखाये जायँगे जिन के सहनशीलता की शक्ति हो तो उसे आज्ञा देवें।'' महाराणा सज्जनसिंह से ग्रंथकर्ता का स्वामी-सेवक का सम्बंध था और महाराणा बड़े गुणग्राही थे। उन्होंने कहा कि ऐसा अपूर्व ग्रंथ अवश्य होना चाहिए और सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। इसी प्रकार शाहपुरा राजाधिराज नाहरसिंह, जिन का कृष्णसिंह पोळपात (प्रतोली-पात्र) था और महाराणा के दरबार में वकील था, ने भी स्वीकृति दे दी। इसके बाद ही प्रस्तुत इतिहास का लिखना प्रारम्भ किया गया।

ग्रंथकर्ता ने एक बार इस इतिहास का लिखना प्रारम्भ किया उस के बाद चौदह साल तक [सन् 1884-1898] निर्बाध गति से अनवरत लिखता रहा और क़रीब एक हजार पृष्ठ लिखने के बाद ही अपनी लेखनी को विराम दिया और वह भी फ़ालिज़ जैसी घातक बीमारी से ग्रस्त होने के बाद। उस के नियमित जीवन और अध्यवसाय को देख कर भर्तृहरि का निम्न श्लोक सहसा स्मरण आ जाता है :-

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमनजना न परित्यजन्ति॥ (नीति-शतक)'

भावार्थः- अधम मनुष्य विघ्नों के भय से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते। मध्यम श्रेणी के मनुष्य कार्य प्रारम्भ कर के विघ्नों से पीड़ित हो कर कार्य को बीच में ही छोड़ देते है किन्तु उत्तम कोटि के पुरुष विघ्नों से बारम्बार पीड़ित होते हुए भी आरम्भ किये कार्य को नहीं छोड़ते - उसे अवश्य पूरा करते हैं। निस्संदेह, उत्तम कोटि के पुरुषों द्वारा ही ऐसा अध्यवसाय सम्भव है।

कृष्णसिंह के असाधारण अध्यवसाय के संदर्भ में एक छोटे-से संस्मरण का उल्लेख करना पर्याप्त होगा। इस की प्रामाणिकता असंदिग्ध है क्योंकि ग्रंथकर्ता की प्रपौत्री साधना देवी ने अपने पितामह केसरीसिंहजी से सुना था - ''पितुःश्री इतना लिखते थे कि दाँया हाथ गरम रहता था इसलिए सोते समय दाँया हाथ हमेशा लिहाफ़ के बाहर रखते थे।... वे बहुत अनुशासन-प्रिय थे ... दिन में कभी सोते नहीं थे। गरमी की मौसम में वैशाख और ज्येष्ठ के महीनों में सिर्फ़ आधा घंटे के लिए सोते थे।''

(7) ग्रंथ की भाषा

इस 'ग्रंथ के नियम और संकेत' शीर्षक के अन्तर्गत नियम सं. 5 में कृष्णसिंह ने प्रस्तुत इतिहास में प्रयुक्त भाषा के सम्बंध में लिखा है कि वह लोक में प्रचलित भाषा का ही प्रयोग करेगा और 'नात्यन्तं संस्कृतं चैव नात्यन्तं देशभाषया, कथां गोष्ठीषु कथयँल्लोके बहुमतो भवेत्' अर्थात् 'विशेष संस्कृत भी नहीं और विशेष देश-भाषा भी नहीं, ऐसी कथा को सभा में कहता हुआ माननीय होता है।' इस सिद्धान्त के अनुसार कृष्णसिंह ने अरबी, फ़ारसी, उर्दू, अँगरेजी आदि भाषाओं से मिश्रित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। उस ज़माने में यह भाषा 'खड़ी-बोली' के नाम से जानी जाती थी। कृष्णसिंह की भाषा चुस्त, परिमार्जित और नयापन लिए हुए है।

इस इतिहास में उर्दू, फ़ारसी के शब्दों की बहुतायत है इसलिए उन का शब्दार्थ दिये बिना साधारण पाठक के लिए सही अर्थ समझ पाना कठिन है। अस्तु, इस सम्बंध में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि

पुरुषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी-भवन लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'उर्दू-हिन्दी शब्दकोश' को काम में लिया गया है। इस के सम्पादक श्री मुहम्मद मुस्तफ़ा खां ''मद्दाह'' अरबी, फ़ारसी, तुर्की और हिन्दी भाषाओं के विद्वान् हैं। यह कोश प्रस्तुत इतिहास के सम्पादन में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। इसी प्रकार हिन्दी के लिए 'हिन्दी शब्दसागर' (ग्यारह जिल्द) प्रकाशक, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी काम में लिया गया है।

(8) प्रस्तुत इतिहास की आप-बीती

कृष्णसिंह ने प्रस्तुत इतिहास में कई बार लिखा है 'श्रेयान्सि बहु विघ्नानि' यानी श्रेष्ठ कार्य में बहुत विघ्न आते हैं। परन्तु विघ्नों का असली क़हर तो इस इतिहास पर ग्रंथकर्ता के निधन के बाद टूटा। कृष्णसिंह का निधन सन् 1907 में आसोप की हवेली, जोधपुर में हुआ था। उस समय यह इतिहास शाहपुरा की हवेली की तिजोरी में सुरक्षित रखा हुआ था। ग्रंथकर्ता के निधन के सात साल बाद ही सन् 1914 में उसके पुत्रों केसरीसिंह, जोरावरसिंह और पौत्र प्रतापसिंह पर राजद्रोह (SEDITION), षड्यंत्र एवं संगीन क्रिमिनल मुक़द्दमे चलाये गये। केसरीसिंह को आजन्म कारावास और काला-पानी (अण्डमान्स) की सज़ा हुई। जोरावरसिंह मृत्यु-दण्ड का क़फ़न सर पर बाँधे फ़रार हो गया, पौत्र प्रतापसिंह को बनारस षड्यंत्र केस (1914) के अंतर्गत पाँच साल की सज़ा हो कर बरेली सैंट्रल जेल के Solitary Cell (काल-कोठरी) में रखा गया। केसरीसिंह को सुदूर बिहार के हजारीबाग सैंट्रल जेल के Solitary Cell (काल-कोठरी) में बंद किया गया। इन मुक़द्दमों के बाद ब्रिटिश सरकार के दबाव से राजाधिराज शाहपुरा नाहरसिंह ने कृष्णसिंह की आनुवंशिक जागीर का गाँव, विशाल हवेली और सारी चल-अचल सम्पत्ति ज़ब्त कर ली। घर के बर्तन तक नीलाम कर दिए गये। राजाधिराज नाहरसिंह को प्रारम्भ से ही पता था कि कृष्णसिंह गुप्त-रीति से राजपूताना का इतिहास लिख रहे हैं जिसमें उन का कच्चा-चिट्ठा अवश्य लिखा होगा जो किसी प्रकार हस्तगत किया जाय। अतः ग्रंथकार की विशाल लाइब्रेरी को राजमहलों में मँगवा लिया गया। परन्तु यह इतिहास हवेली के अन्दर तिजोरी में बंद पड़ा था इसलिए राजाधिराज का मनोरथ सफल न हो सका। भूतपूर्व शाहपुरा राज्य के उच्चाधिकारी श्री ब्रह्मदत्तजी शर्मा आर.ए.एस. उप-सचिव, रेवेन्यू विभाग राजस्थान, कहा करते थे कि राजाधिराज ने कई किताबों पर लाल पेन्सिल से निशान लगाये। इस प्रकार बहुत तलाश करने के बाद भी प्रस्तुत इतिहास उन के हाथ न लग सका। यदि किसी प्रकार वे इस इतिहास को प्राप्त करने में सफल हो जाते तो उस की क्या गति होती इसकी सहज कल्पना ही की जा सकती है। शायद उस का नामो-निशाँ भी नहीं बचता।

इस प्रसंग की कहानी बड़ी रोमाञ्चकारी है। इस के साथ ही दो और तथ्य स्पष्ट रूप से उजागर होते हैं। प्रथम, 'सत्ये नाऽस्ति भयं क्वचित्' और द्वितीय, परमात्मा अदृश्य रूप से सत्य की रक्षा किस प्रकार करता है। सीमा-पार विषम परिस्थितियों को झेलते हुए भी परिवार की उन सम्भ्रान्त महिलाओं को विश्वास था कि जब तक वे हवेली के अन्दर हैं तब तक ही यह उन की है। कृष्णसिंह को रियासत जोधपुर से पुश्तैनी सोना व ताज़ीम मिले हुए थे और शाहपुरा रियासत में पीढ़ियों से उस के परिवार के साथ बड़े सम्मान का व्यवहार होता आया था इसलिए महिलाओं को बलपूर्वक बाहर निकाल कर हवेली पर क़ब्जा करना कल्पना से परे की बात थी।

इसी अन्तराल में केसरीसिंह की धर्मपत्नी श्रीमती माणिक कँवर के निकटस्थ भ्राता का निधन हो गया। माणिक कँवर और जोरावरसिंह की पत्नी अनोप कँवर दोनों सगी चचेरी बहिनें थीं। अतः दोनों को कोटा जाना लाज़िमी हो गया। परिवार में कोई वयस्क सदस्य नहीं बचा था। बच्चे छोटे थे। बैल गाड़ी द्वारा

कोटा तक का लम्बा रास्ता तय करना था। अस्तु, जब सदा के लिए हवेली छोड़ कर माणिक कँवर प्रस्थान करने लगीं तो तिजोरी में से पितु: श्री की अनमोल इस कृति के तीनों रजिस्टर ही निकाले। आत्म-परीक्षा की उस घड़ी में माणिक कँवर को नारी-सुलभ स्वर्णाभूषणों का मोह विचलित न कर सका और उस ने अपने ज़िगर के टुकड़े सात माह की छोटी पुत्री को गोदि से उतार कर दासी को दिया एवं प्रस्तुत इतिहास के तीनों भारी रजिस्टर सावधानी से आँचल में छिपाये अपने गृह को सदा के लिए त्याग दिया। किसी ग्रंथ की ऐसी करुणाजनक आप-बीती का विवरण आज तक पढ़ने में नहीं आया।

दूसरी बार प्रस्तुत इतिहास को विलुप्त होने से परमात्मा ने किस तरह बचाया उस का विवरण इस प्रकार है- ग्रंथकर्ता के मँझले पुत्र किशोरसिंह बार्हस्पत्य माने हुए इतिहासकार और पुरावृत्तवागीश थे। वे पटियाला रियासत के 'स्टेट हिस्टोरियन' थे एवं रॉयल ऐसियाटिक सोसाइटी, लन्दन के मेम्बर थे। वे जब भी कोटा आते तो अपने अग्रज केसरीसिंहजी से आग्रह करते कि यह इतिहास उन्हें दे दिया जाय। इस सम्बंध में ग्रंथकर्ता की प्रपौत्री श्रीमती साधना के संस्मरण इस प्रकार हैं ''मेरे मँझले दादा किशोरसिंहजी कोटा आते तो दाता केसरीसिंहजी से हर बार आग्रह करते, दादाभाई साहब, यह इतिहास मुझे दे दिया जाय, यह मेरे बड़ा काम आयगा। इस पर दाता यही जवाब देते कि भाई, मेरे पास पितु:श्री की यही थाती शेष बची है इसलिए मैं इस को अपने से अलग नहीं कर सकता। इस प्रकार कई बार माँगने पर भी दाता ने यह इतिहास उन्हें नहीं दिया।'' नियति का खेल भी विचित्र है। श्री किशोरसिंहजी का अचानक हृदयाघात से अक्टोबर सन् 1937 में निधन हो गया। उन की मृत्यु के कुछ समय बाद उन की जितनी भी पुरानी पाण्डुलिपियाँ और स्वयं द्वारा लिखा गया इतिहास एवं सारा रेकार्ड आदि पटियाला रियासत के 'ARCHIVES' में मँगवा लिये गये। वे ग्रंथ अब न जाने किस दशा में और कहाँ पड़े हुए हैं कोई नहीं जानता। यदि उस समय यह इतिहास श्री किशोरसिंहजी को दे दिया गया होता तो उस की भी यही नियति होती और इस की केवल स्मृति मात्र शेष रहती।

उन विकट परिस्थितियों में प्रस्तुत इतिहास को यदि किसी ने अपने साहस और सूझबूझ से नष्ट होने से बचाया तो इस का श्रेय ग्रंथकर्ता की ज्येष्ट पुत्र-वधु श्रीमती माणिक कँवर को है। अत: विनीत भाव से इस ग्रंथ का समर्पण श्रीमती माणिक कँवर को किया गया है।

(9) प्रस्तुत इतिहास के प्रकाशित होने के सम्बंध में ग्रंथकर्ता की चिन्ता

ग्रंथकर्ता ने द्वितीय भाग में प्रस्तुत इतिहास के सम्बंध में अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए स्पष्ट लिखा है *''मेरे इस ग्रंथ के दोनों भाग राजकीय विषयों से इतने बढ़ गये हैं जिन के मुद्रित होकर प्रकट होने में कई संदेह प्रकट हो गये हैं इस कारण मेरे इस लेख को आगे बढ़ाना नहीं चाहता।'' इस सम्बंध में उल्लेखनीय है कि ग्रंथकर्ता ने अपने दूसरे वसीयतनामा में यहाँ तक निर्देश दिए हैं कि उसके पास जो भी रुपये हैं उन से पहले यह ग्रंथ छापें और जो शेष बचें उसे तीनों पुत्र बाँटें। कम से कम पाँच सौ प्रतियाँ तो छपनी ही चाहिए।''* कृष्णसिंह ने इस इतिहास के लिए पाँच हजार रुपये अलग रख दिए थे जिस समय एक मोहर की कीमत केवल बाईस रुपये थी। आज उस राशि की मोहरों की कीमत की कल्पना ही की जा सकती है।

(10) सत्य इतिहास-लेखन के पथ में भय और आशंकाएं

कृष्णसिंह ने ग्रंथ के प्रथम भाग की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि ''वर्तमान समय का इतिहास

लिखना असम्भव है।'' इस के साथ ही उस की मान्यता थी कि ''इतिहास में जो कुछ लाभदायक वस्तु है वह सत्यता ही है। यदि सत्यता को छोड़ देवें तो 'अलिफ़-लैला' और 'ग़ुल बक़ावली' का किस्सा हो जाए जिसका प्रमाण 'पृथ्वीराज-रासौ' विद्यमान है।'' ग्रंथकर्ता ने वर्तमान समय के सत्य इतिहास लिखने में लेखक को जितने भी भय और आशंकाएं हैं, उन का विश्लेषण किया है। कृष्णसिंह ने लिखा है कि यदि कोई देख ले कि *''वह क्या लिख रहा है तो या तो मुझे देश-निकाला दे दे या ज़हर दे दे।'' इतना सब कुछ जानते हुए भी वह अपने निर्णय पर अटल रहते हुए लिखता है कि ''मैं चाहता हूँ कि इस समय का सच्चा इतिहास भावी पीढ़ी को मिल सके।''*

एक ऐसे ही अन्य संदर्भ में कृष्णसिंह ने यहाँ तक लिखा है *''अपने बड़पन्न के घमण्ड वाले ज़िद्दी रईस या तो इस ग्रंथ को जला देवें और मरहठा-ग़र्दी का ज़माना हो तो मुझे क़त्ल कर दिया जाय।''* किसी इतिहास-लेखक के सम्मुख इस से बढ़ कर और भयावह आशंका क्या हो सकती है? इतना सब कुछ जानते हुए और पूर्ण रूप से जागरूक होते हुए भी जो अपने निश्चय पर अडिग रहे, उस की बलिहारी है।

(11) इतिहासकारों की प्रथम प्रतिक्रियाएँ

इस इतिहास के तीनों भाग माणिक-भवन, कोटा में 'कृष्ण-भारती-भवन, पुस्तकालय' के हॉल की अलमारियों में सुरक्षित रूप से रखे जाते थे। अत: एक दिन निश्चय किया कि इस इतिहास की नकल कराने के बाद ही इस का पढ़ना सम्भव हो सकेगा और अन्य चुनिन्दा विद्वान् भी इस से परिचित हो सकेंगे। अस्तु, सन् 1957 में श्री मदनसिंहजी मेहड़ू, ग्राम ठीकरिया, जिला बूंदी को पारिश्रमिक दे कर नकल का कार्य करवाया गया जिसे उन्होंने माणिक-भवन के हॉल में बैठ कर पूरा किया। श्री मदनसिंहजी विद्वान् और कवि थे। उन्होंने सुन्दर अक्षरों में पाँच रजिस्टरों में नकल पूर्ण की। यहाँ से इस इतिहास की पुस्तकालय से बाहर आने की यात्रा प्रारम्भ होती है जिस के बाद ही विद्वानों को इस का पढ़ना और अधिक जानकारी उपलब्ध करने का मौक़ा मिला।

अस्तु, जब सन् 1959-60 में राजकीय सेवा में मेरी प्रथम बार नियुक्ति जयपुर हुई तो सबसे पहले प्रो. नाथूराम खड़गावत, विभागाध्यक्ष इतिहास, राजस्थान विश्वविद्यालय को यह इतिहास पढ़ने हेतु दिया। प्रो. नाथूराम खड़गावत को राज्य सरकार द्वारा 'राजस्थान में स्वाधीनता-संग्राम' का इतिहास लिखने का दायित्व सौंपा गया था और वे कई बार इस सम्बंध में मुझ से मिल चुके थे। प्रो. खड़गावत बाद में स्टेट आर्काइव्ज, बीकानेर के डाइरेक्टर बने। जिन अन्य विद्वानों को पढ़ने हेतु यह इतिहास दिया उन के नाम हैं :- (1) रानी लक्ष्मी कुमारीजी चूंडावत, (2) श्री ओंकारसिंहजी, आई.ए.एस. बाबरा और (3) श्री अक्षयसिंहजी रत्नू।

इस बार जयपुर में मेरी नियुक्ति अल्प काल के लिए ही थी अत: कुछ ही विद्वान् प्रस्तुत इतिहास को पढ़ सके परन्तु जब दुबारा मेरी नियुक्ति जयपुर में सन् 1972 में हुई तो ज्यादा विद्वानों ने पढ़ा। उन के नाम इस प्रकार हैं :- (1) राजकुमार मानसिंहजी बनेड़ा, बार-एट्-लॉ, (2) श्री ए.के. रॉय आई.ए.एस., अध्यक्ष राजस्थान स्टेट इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड और श्री बी.एल. पनगड़िया, उप सचिव, वित्त विभाग, राजस्थान। उपरोक्त विद्वानों द्वारा प्रस्तुत इतिहास पढ़ कर जो प्रथम प्रतिक्रियाएं प्रकट की गई उन्हें नीचे उद्धृत किया जाता है:-

1. **प्रो. नाथूराम खड़गावत** ने कहा ''कृष्णसिंहजी रिश्वतख़ोरों और व्यभिचारियों के पीछे लट्ठ ले कर ही पड़ गये।'' मेरा सूक्ष्म उत्तर था - वे शिष्य किसके थे?
2. **रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूँडावत** की सम्मति थी ''बारहठजी साहब ने बिलकुल सच्चा इतिहास लिखा

है जो अवश्य प्रकाशित होना चाहिए।''

3. **श्री ओंकारसिंहजी,** आइ.ए.स. बाबरा ने कहा ''श्री कृष्णसिंहजी विलक्षण पुरुष थे और उन्होंने राजपूताना के इतिहास लेखकों के सामने एक आदर्श उपस्थित किया है।''

1. **राजकुमार मानसिंहजी बनेड़ा, बार-एट्-लॉ**, ''यह इतिहास तत्कालीन राजपूताना के इतिहास की Missing Link (लुप्त-कड़ी) है।''

2. **श्री ए.के. रॉय** ''आश्चर्य होता है कि कृष्णसिंहजी ने इतना लिखा कैसे?''

3. **श्री अक्षयसिंह रत्नू** ''इस इतिहास में चारणों के ख़िलाफ़ लिखा है। अतः जब प्रकाशित करायें तब ठीक करके छापें।''

4. **श्री बाबूलालजी पनगड़िया** ने मूल ग्रंथ की केवल भूमिका पढ़ कर कहा ''कृष्णसिंहजी जैसे व्यक्ति के ही केसरीसिंहजी, जोरावरसिंहजी जैसे पुत्र हो सकते थे।''

5. **श्री मधुसूदनसिंहजी पालावत** (वर्तमान में आइ.पी.एस. और डी.आइ.जी., जयपुर) ने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. इतिहास में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के बाद यह इतिहास पढ़ा और सन् 1977 में राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर के अधिवेशन में ''कृष्णसिंह बारहठः एक इतिहासवेत्ता'' विषय पर पत्र-वाचन किया। उन्होंने लिखा ''इस प्रस्तुति के पश्चात् कांग्रेस में उपस्थित इतिहासकारों, अध्यापकगण एवं उपस्थित विद्वद्जन द्वारा इस इतिहास और ग्रंथकर्ता की मुक्त-कंठ से सराहना की गयी। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. एम.आर. सिंह ने की थी जो कालान्तर में विक्रम विश्वविद्यालय में इतिहास के विभागाध्यक्ष बने।''

(12) प्रकाशन की दिशा में उद्योग और विफलता

इस के पश्चात् प्रस्तुत इतिहास के सम्भावित प्रकाशन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास हुआ था उसका उल्लेख करना आवश्यक है जो इस प्रकार है। एक दिन डॉ. राजेन्द्र जोशी, रीडर इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय और पदेन डायरेक्टर, 'प्रोजेक्ट फॉर प्रिजर्वेशन ऑफ मेनुस्क्रिप्ट्स' मेरे निवास पर आये और इस इतिहास के प्रकाशन के सम्बंध में बहुत रुचि दिखाई और कहा कि यह इतिहास अब अवश्य प्रकाशित होना चाहिए। इस पर नगेन्द्रबालाजी, प्रपौत्री ग्रंथकर्ता से कह कर मूल ग्रंथ के तीनों रजिस्टर अपने पास मँगवा लिए। यह बात सन् 1979-80 की है जब एक दिन डॉ. जोशी अपने साथ प्रो. सतीशचंद्रजी चेयरमैन, युनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन, नई दिल्ली को मेरे यहाँ लाये जिन के साथ विजयदानजी देथा और श्री कोमल कोठारी भी थे। इस सम्बंध में काफी चर्चा हुई और डॉ. सतीशचन्द्रजी ने बड़े ध्यान से तीनों भागों को देखा और आश्वासन दिया कि इस इतिहास के प्रकाशन के लिए वे अनुदान स्वीकृत करेंगे। मैंने उन के सामने ही 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' ग्रंथ के तीनों मूल रजिस्टर डॉ. जोशी को दे दिये।

इस के बाद साल भर तक डॉ. जोशी से इस ग्रंथ के प्रकाशन के सम्बंध में जब कुछ भी नहीं सुना तो उन से पत्र व्यवहार किया गया। इस के बाद डॉ. जोशी का एक पत्र दिनांक 13 अप्रैल 1981 को श्रीमती नगेन्द्रबाला, भूतपूर्व विधायक और तत्कालीन अध्यक्ष, राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड, जयपुर के नाम आया जो नीचे उद्धृत किया जाता है :-

''आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री कृष्णसिंहजी बारहठ की आत्मकथा छपवाने हेतु हमें

भारत सरकार से अनुदान प्राप्त हो गया है। आत्म-कथा के सम्पादन का कार्य भी नियमित रूप से चल रहा है। प्रथम खण्ड का कार्य दस दिन में समाप्त कर लेंगे। आप के जयपुर निवास का पता व फोन नम्बर से सूचित करें ताकि आप से सम्पर्क में असुविधा न हो। ..... ह. राजेन्द्र जोशी''

दूसरा पत्र दिनांक 22-1-1982 को लिखा जिसकी नकल नीचे दी जाती है :-

PROJECT FOR PRESERVATION OF MANUSCRIPTS,
UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR.

Rajendra Joshi — Deptt. of History
Director, — Dated the 22-01-1982

Dear Mrs. Nagendra Balaji,

"I have written a letter to you in Dec., 81 on the address of Shri Fateh Singh ji requesting you to kindly contact me during your next visit to Jaipur. As you already know that our Project is prepared to edit & publish Shri Krishna Singhji's autobiography. In this regard we had approached the Govt. of India for publication grant. You will be glad to know that the Govt. of India has sanctioned a grant of Rs. 30,000/- on the condition that we are able to manage the matching grant of Rs. 10,000/- from any other source. I have requested the State Govt. for the same.

"Though we have started the editing work but before editing & publishing it, certain formalities are to be completed with you, being the direct descendent of late Shri Krishna Singhji.

I will, therefore, request you to kindly contact me on your next visit to Jaipur.

With regards,"

Yours sincerely,

(Sd. Rajendra Joshi)
Director

उपरोक्त पत्र से स्पष्ट है कि प्रस्तुत इतिहास के प्रकाशन हेतु यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन द्वारा रुपये 30,000.00 अनुदान राशि स्वीकृत की गयी और राज्य सरकार से इसकी Matching Grant कराने के प्रयास जारी हैं। कुछ समय बाद यह राशि भी स्वीकृत कर दी गयी। इस प्रकार प्रकाशन हेतु कुल रुपये 40,000.00 डॉ. जोशी के नाम पर स्वीकृत हुए। यह राशि उस समय के लिए काफी पर्याप्त थी। डॉ. जोशी ने सर्व-प्रथम मूल ग्रंथ के तीनों भागों के रजिस्टरों की फोटोस्टेट तैयार कराई थी।

इसके बाद काफी समय बीत जाने के बाद डॉ. जोशी द्वारा प्रकाशन की प्रगति के सम्बंध में जब कुछ भी सूचना नहीं दी गयी तो बड़ी चिंता हुई और इस परिस्थिति में यही उचित समझा गया कि कम से कम मूल इतिहास के तीनों रजिस्टर तो उन से वापस ले ही लिए जाएँ। अत: एक दिन श्रीमती नगेन्द्रबालाजी को साथ ले कर विश्वविद्यालय स्थित डॉ. जोशी के कार्यालय में जा कर तीनों मूल रजिस्टर प्राप्त कर लिए। दु:ख है कि इतना अनुदान प्राप्त करने के बाद भी डॉ. जोशी द्वारा इस इतिहास के प्रकाशन के सम्बंध में कुछ भी सार्थक प्रयास नहीं किया गया और सारी स्वीकृतियाँ विफल गयीं। बाद में दरियाफ़्त करने पर पता चला कि डॉ. जोशी द्वारा तैयार की गई प्रस्तुत इतिहास की फोटोस्टेट तक भी सम्बंधित कार्यालय अथवा विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में उपलब्ध नहीं है!

प्रस्तुत इतिहास के प्रकाशन के सम्बंध में अस्सी के दशक में अखिल भारतीय इतिहास कांग्रेस के सचिव श्री पृथ्वीसिंहजी मेहता विद्यालंकार, उदयपुर ने अध्यक्ष जयचंद्रजी विद्यालंकार के निर्देशासुनसार कृष्णसिंहजी के प्रपौत्र राजेन्द्रसिंहजी को पत्र लिखा कि इस इतिहास के प्रकाशन के सम्बंध में विचार किया जा रहा है। अत: आप प्रकाशन की शर्तों के विषय में सूचना भेजें। वाँछित सूचना यथा-समय प्रेषित कर दी गयी परन्तु बाद में कोई प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

कुछ वर्ष पूर्व श्रीमती शारदा द्विवेदी (राम महल, दिनशा वाचा रोड, मुम्बई) अजमेर स्थित चारण साहित्य शोध संस्थान में आयीं। वे होल्कर पर पुस्तक लिख रही थीं और डॉ. सी.पी. देवल से मिलीं। उन्होंने श्रीमती द्विवेदी को प्रस्तुत इतिहास में इंदौर के तत्कालीन शासक सियाजी राव होल्कर के सम्बंध में दो-तीन जगह विस्तार से लिखे गये प्रसंगों के पृष्ठों के फोटोस्टेट श्रीमती द्विवेदी को प्रेषित की जिन्हें पढ़ कर श्रीमती द्विवेदी इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने मुझे कहा कि वे *इस इतिहास का अंगरेजी में अनुवाद कर अमेरिका या इंग्लैण्ड में प्रकाशित करायेंगी।*

इस शृंखला में सबसे अंत में एक बार फिर पद्मश्री, विदुषी रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत के पत्र दिनांक 15-08-03 के उत्साह-वर्धक अंश को उद्धृत करना चाहूँगा जो उन्होंने प्रस्तुत इतिहास के सम्पादन और टंकन आदि की प्रगति की सूचना मिलने पर लिखा :- *''मेरा हृदय आनन्द से भर गया कि 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। एक सच्चा और असली इतिहास तो यही होगा जिसमें कोई लाग-लगाव नहीं, अपनी आँखों से देखे दृष्य। बारहठजी साहब ने बिलकुल सही लिखा है कि वे क्या लिख रहे हैं, कोई देख ले तो सीधा देश-निकाला या फिर ज़हर। प्रकाशित पुस्तक को देखने के लिए बेताब हो रही हूँ। ईश्वर करे और मैं जीवित हूँ तब तक यह मेरे हाथों में आ जाय और मैं पढ़ लूँ। भगवान् मेरी आँख की दृष्टि बनाये रखे। हाँ, कार्य बेशक़ बहुत वृहद् है। सवा सौ वर्षों पूर्व लिखा इतिहास आप लोगों के अथक परिश्रम व साधना से ही प्रकाशित होने जा रहा है।''*

(13) ग्रंथकर्ता का कृतित्व

कृष्णसिंह का कृतित्व असाधारण कोटि का था। इस का विवरण नीचे प्रसतुत किया जाता है :-

(i) 'मेवाड़ का गजेटियर'

कृष्णसिंह ने मेवाड़ का गजेटियर बना कर महाराणा फतहसिंह को प्रस्तुत किया जिस पर ''महाराणा ने हुक्म दिया कि इसको छपवाने में बहुत खर्च लगेगा और अरसा भी ज्यादा चाहिए इसलिए यह पुस्तक तो हमारे पास पड़ी रहेगी जिसको कभी छपवायेंगे मगर एक पुस्तक उक्त आशय की दूसरी बना दो जिसे जल्दी छपवा दी जाय। .... इसके बाद यह दूसरी पुस्तक बना कर दी जिसमें महाराणा लाखा से ले कर महाराणा फतहसिंह के चित्रों के नीचे महाराणाओं के इतिहास लिखे गये थे। इस पुस्तक लिखने में हमें डेढ़ महीना लगा।''

(ii) 'वंशभास्कर की उदधि-मंथिनी टीका'

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण विरचित 'वंशभास्कर' महाभारत के आकार का ग्रंथ है। इस के टीकाकार में कितने वैदूष्य और निष्ठा की अपेक्षा है, इस की सहज कल्पना ही की जा सकती है। ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह

ने सन् 1898 में पक्षाघात जैसी घातक बीमारी से आक्रांत होने के क्ररीब तीन साल पश्चात् 16 सितम्बर सन् 1901 श्रावण वदि शुक्रवार (वि. संवत् 1958) को 'वंशभास्कर' की टीका प्रारम्भ की और इसे अपने ऊपर परमात्मा की कृपा का प्रतिफल माना कि वह ऐसी भयंकर बीमारी से निज़ात पा कर पुनः तंदुरुस्त हो गया। राजपूताना और हिन्दी-जगत में शायद ही ऐसा कोई विद्वान् होगा जिसने इस ग्रंथ को अपनी निधि नहीं बनाया हो। इस की कुल पृष्ठ संख्या 4,360 है। देश के सभी बड़ी-बड़ी पुस्तकालयों की यह ग्रंथ शोभा बढ़ाता है। प्रस्तुत टीका से संतुष्ट हो कर महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने टीकाकार को पत्र लिख कर अपने भाव प्रकट किये उसका एक अंश इस प्रकार है ''**टीका आछी बणी छै।**''*

(iii) 'कृष्ण नाममाला डिंगल कोश'

जैसा कि ग्रंथकर्ता ने पूर्व में लिखा है कि जब पक्षाघात जैसी असाध्य बीमारी से ठीक हो गया तो वह पारमार्थिक कार्यों में प्रवृत्त हो गया और उस ने उक्त 'उदधि-मंथिनी टीका' के अतिरिक्त एक और महत् कार्य आरम्भ किया और वह था डिंगल-कोश का निर्माण। कृष्णसिंह ने वि. संवत् 1957 आश्विन् वदि 8 आदित्यवार तदनुसार 16 सितम्बर सन् 1900 को इस डिंगल कोश का लिखना प्रारम्भ किया। ग्रंथकर्ता की इस अज्ञात कृति पर सबसे प्रथम सन् 1971 में राजस्थान के जाने-माने विद्वान् और शोधकर्ता श्री अगरचंदजी नाहटा, बीकानेर ने बिसाऊ, जिला झुन्झूनू से प्रकाशित होने वाली शोध-पत्रिका ''वरदा'' में एक सविस्तर लेख प्रकाशित किया। इस में कोशकार द्वारा लिखी गयी भूमिका अविकल रूप से दी है। यह आलेख इस ग्रंथ के तृतीय भाग के परिशिष्ठ संख्या 3 में उद्धृत किया गया है क्योंकि ग्रंथकर्ता ने प्रस्तुत इतिहास समाप्त करने के दो साल बाद यह कोश लिखना प्रारम्भ किया था। श्री अगरचंदजी नाहटा ने अपने आलेख की समाप्ति के बाद श्री ईश्वरदानजी आशिया की तथ्यात्मक टिप्पणी, अनन्त चतुर्दशी वि. संवत् 2004 की उद्धृत की है जिससे स्पष्ट है कि कोशकार ने डिंगल के 80 हजार शब्द इकट्ठे किये थे लकिन अब 15 हजार ही शेष बचे हैं। श्री ईश्वरदानजी आशिया ने लिखा है कि श्री किशोरसिंहजी की मृत्यु के बाद पटियाला राज्य ने उन के अन्य ग्रंथों के साथ सारा रेकार्ड अपने इतिहास कार्यालय में मँगवा लिया।

इस संदर्भ का थोड़ा स्पष्टीकरण देना आवश्यक है। कृष्णसिंह के मँझले पुत्र किशोरसिंह बार्हस्पत्य प्रख्यात विद्वान् एवं इतिहासवेत्ता थे। वे पटियाला रियासत के 'स्टेट हिस्टोरियन' होने के साथ-साथ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंदन के मेम्बर और राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता के अध्यक्ष भी थे। इसे विधि की विडम्बना ही कहना चाहिए कि ऐसे विद्वान् एवं सुयोग्य पुत्र के पास यह डिंगल कोश होने के उपरान्त भी न इस के प्रकाशन के सम्बंध में कुछ हो सका और न भविष्य के लिए सुरक्षित ही रखा जा सका। घटना-क्रम ऐसा चला कि श्री किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य का अचानक हृदय-गति रुक जाने से अक्टोबर सन् 1937 में निधन हो गया और जैसा कि ऊपर लिखा है, उन के ग्रंथ आदि पटियाला राज्य के इतिहास कार्यालय में मँगवा लिए गये जब कि उस राज्य का प्रस्तुत डिंगल कोश से किसी प्रकार का कोई लेना-देना नहीं था। दुःख है कि इस प्रकार कृष्णसिंह की यह अनमोल कृति हिन्दी साहित्य से हमेशा के लिए लुप्त हो गयी। श्री अगरचंदजी नाहटा के अनुसार यह कोश सबसे पूर्ववर्ती डिंगल कोश था और उन्होंने इसके शेष बचे 15 हजार शब्दों का रजिस्टर कलकत्ता के ''बंगाल-हिन्दी-मण्डल'' से प्राप्त कर 'शार्दूल रिसर्च इन्स्टीट्यूट', बीकानेर में जमा करा दिये।

---

* **यह असल पत्र चारण साहित्य शोध संस्थान, अजमेर के पुस्तकालय में है। ... सं.**

(iv) 'चारण कुल प्रकाश'

कृष्णसिंह ने चारण जाति का पौराणिक काल से अपने समय तक का प्रामाणिक इतिहास लिखा। यह पुस्तक सन् 1902 में प्रकाशित हुई थी।

(v) 'सात सौ प्राचीन गीतों का संग्रह'

कृष्णसिंह ने अपने जीवन-काल में सात सौ प्राचीन गीतों का संकलन किया था लेकिन उन के 'कृष्ण- भारती-भवन पुस्तकालय' कोटा में वर्तमान में केवल कुछ पृष्ठ ही उपलब्ध हैं। इन पृष्ठों को देखने से पता चलता है कि संकलनकर्ता ने प्रत्येक गीत के संदर्भ में इतिहास सम्बंधी टिप्पणी दी है और सभी क्लिष्ट शब्दों के अर्थ दिए हैं।

(vi) 'कृपणोपदेश'

यह एक छंद-बद्ध लघु रचना है जिस की प्रेस-कॉपी वैंकटेश्वर प्रेस, बम्बई प्रकाशनार्थ भेजने हेतु तैयार कर ली गयी थी लेकिन प्रेस में नहीं भेजी जा सकी। कृष्णसिंह की यह सबसे अंतिम कृति है।

संक्षेप में, ग्रंथकर्ता की कालजयी कृति 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' के अतिरिक्त जिस कृतित्व का उल्लेख उपरोक्त पंक्तियों में किया गया है वह इतना विपुल है कि उसे उन्नसवीं शताब्दी के शीर्ष साहित्यकारों में स्थान दिए जाने के लिए पर्याप्त है।

ग्रंथकर्ता की दिनचर्या इतनी व्यस्त थी कि उसे यह इतिहास लिखने के लिए सप्ताह में केवल एक दिन का अवकाश मिलता था। कृष्णसिंह का इस सम्बंध में लिखना है *''मुझे सिर्फ़ शुक्रवार की छुट्टी मिलती है जिसमें घर के सब काम करने के बाद यह इतिहास लिखता हूँ।''* यहाँ पर इस बिन्दु को थोड़ा स्पष्ट करना आवश्यक है कि ग्रंथकर्ता यह इतिहास गुप्त रीति से लिखता था इसलिए अन्य दिनों में उसे साथ ले जाने का तो प्रश्न ही नहीं था और लिखे हुए रजिस्टरों को वह अपनी तिजोरी में सुरक्षित रखता था। इस में किसी तरह की असावधानी बरतना स्वयं के लिए बड़े ख़तरे की बात थी। इतनी व्यस्तता में इतिहास जैसे प्रामाणिक ग्रंथ का लिखना बड़ी चुनौती भरा काम था। इतनी बंदिशों के रहते हुए नियमपूर्वक अपने अभीष्ठ कार्य को वर्षों तक बिना किसी प्रकार के प्रमाद के सतत किये जाना अपने आप में एक तपस्या है। ग्रंथकर्ता ने कठोर परिश्रम के परिचायक अँगरेजी भाषा के इस मुहावरे 'Burning the midnight oil' को न जाने कितनी अनगनित रात्रियों में तेल जला कर चरितार्थ किया होगा?

(14) तत्कालीन समस्याओं के सम्बंध में ग्रंथकर्ता के निष्कर्ष

(i) मर्दुमशुमारी सन् 1881 और हिन्दू क़ौम के पतन के कारण

देश की पहली मर्दुमशुमारी सन् 1881 में हुई थी। जब सरकार ने इस के आँकड़े सार्वजनिक किए तो उन का ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह ने सूक्ष्म विश्लेषण कर सही निष्कर्ष निकाला कि देश की अवनति और पतन का मुख्य कारण हिन्दू क़ौम का क़रीब दो हजार जातियों और उतने ही मज़हबों में विभाजित होना है। ऐसी हालत में देश में एकता होना असम्भव है। एक इतिहासकार के नाते व्यक्त किये गये उसके विचार द्रष्टव्य हैं :- *''जिस मुल्क में उगणीस सौ गुणतीस क़ौम के हिन्दू और एक-एक क़ौम में भी अनेक मज़हब और मज़हबी पेशवा एक दूसरे के ख़िलाफ़, फिर ऐसी हालत में हिन्दुओं की और हिन्दुस्तान की अब्तरी और तनज़्ज़ुल[1] होवे तो उसमें क्या ताज्जुब है। मेरी समझ में इस देश की और देशवासियों की हानि इन्हीं क़ौमों*

1. **(अ) पतन, अवनति, ह्रास**

और मज़हबों की बहुतायत से हुई है वर्ना जहाँ एक मज़हब और कम क़ौमें हैं उनकी बराबर उन्नति होती जाती है। हिन्दुस्तान देश में बेचारी एकता का क्या पता लग सकता है कि जहाँ जंगल की झाड़ी के माफिक हजारों क़ौमें और हजारों मज़हब एक दूसरे के विरुद्ध हैं।''

(ii) इंडियन नेशनल कांग्रेस और अँगरेजी सरकार की पॉलिसी

इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में कलकत्ता में हुई। उस समय देश का राजनीतिक परिपेक्ष्य कैसा था इस सम्बंध में कृष्णसिंह के विचार पठनीय हैं। बड़ी वेदना के साथ वह लिखता है *''हिंदुस्तानियों का दिन-ब-दिन तनुज्जल होता है और अँगरेज लोग इन्हें हिक़ारत की निगाह से देखते हैं - न तो हिन्दुस्तानियों को बड़े ओहदों पर मुक़र्रर करते हैं और न इन पर भरोसा रखते हैं। इसके अलावा हिन्दुस्तान के इन्साफ़ और नफ़ा-नुक़्सान में कुछ भी राय नहीं ली जाती।''* देशवासियों में काँग्रेस और उस के सिद्धान्तों के प्रति रुझान बढ़ा तो अँगरेजी सरकार को बड़ा भय हुआ कि काँग्रेस को जल्दी ही नहीं बिखेरी गयी तो यह ज्यादा जोर पकड़ लेगी तो इंग्लैंड की पार्लामेंट के माफिक यहाँ भी हिन्दुस्तानियों को राज-सत्ता में इख़्तियार देने पड़ेंगे। कृष्णसिंह लिखता है *''चुनांचे, वाइसरॉय लॉर्ड डफरिन के इशारे से अँगरेजी अफ़सरों ने हिन्दुस्तानी लोगों को फोड़ने की कोशिश शुरू की है और पोलिटिकल ऑफिसरों ने रईसों को हिदायत कर दी कि यह एक बदमाशों का ज़ारी किया हुआ सिल्सिला है जिसमें आप लोग हर्गिज शरीक़ न हों और न इनको मदद देवें।''*

(iii) राजाओं की राज-सत्ता : प्रातःकाल के दीपक के समान

प्रस्तुत इतिहास में कृष्णसिंह ने कई विषयों का विश्लेषण करने के बाद अपने निष्कर्ष निकाले हैं जो उस की पैनी दृष्टि और विषय के गहन अध्ययन के परिचायक हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ नीचे दिए जाते हैं :-

'इतिहास विद्या से यह सिद्ध है कि शत वर्ष-पर्यन्त द्रव्य और सहस्र वर्ष-पर्यन्त पृथ्वी एक वंश में एक स्थिति पर कदापि नहीं रहते।'

आज से एक सौ पंद्रह वर्ष पूर्व देश में राजा महाराजाओं की राज-सत्ता के सम्बंध में किसी को संशय नहीं था कि इस के अस्तित्व को कोई ख़तरा हो सकता है। परन्तु कृष्णसिंह को सन् 1892 में इस बात की आशंका हो गई थी जो कालान्तर में कितनी सत्य सिद्ध हुई इसे इतिहास का विद्यार्थी जानता है। निष्कर्ष नीचे प्रस्तुत है:-

''वर्तमान राजा-महाराजाओं की हीन-दशा प्रतिदिन होती जाती है और इनकी राज-सत्ता प्रातःकाल के दीपक के समान बहुत शीघ्र नाश होने वाली है जिसका इनको कुछ भी बोध नहीं है।''

इस संदर्भ में ग्रंथकर्ता ने जो सलाह राजाओं को दी, वह इस प्रकार है:-

''यदि आप लोगों ने (राजाओं ने) अपने बचाव का यत्न नहीं किया तो न तो आपको सेना रखने का अधिकार रहेगा ..... न फ़ौजदारी, दीवानी अधिकार रहेंगे .... और इस समय जो हजारों मनुष्य आपको 'खम्मा-खम्मा' और 'अन्नदाता' और 'पृथ्वीनाथ' कहते हैं जो भी नहीं कहेंगे।''

(iv) शाही क़ौम का सर्वोपरित्व

'राजपूताना के पोलिटिकल एजेन्टों की बेईमानी' शीर्षक के अंतगर्त आठ पोलिटिकल एजेन्टों की रिश्वतख़ोरी और बेईमानी का ब्यौरेवार विवरण देते हुए कृष्णसिंह लिखता है कि इन *''आठ अफसरों का*

रिश्वत लेने का हाल जो लिखा है जो सही तौर पर हम को मालुम हुआ है। उसमें किसी तरह का शक़-शुब्हा नहीं है और दरियाफ़्त किया जाय तो दूसरे एजेण्टों का हाल भी मालूम हो सकता है।'' इस संदर्भ में कृष्णसिंह ने जो निष्कर्ष निकाले हैं वे उसके लम्बे अनुभव और स्वतंत्र-चिंतन के परिचायक हैं:-

''अँगरेज लोग हिन्दुस्तानियों पर इस बात का इल्ज़ाम लगाते हैं कि ये लोग मुन्सिफ़ और ईमानदार नहीं होते लेकिन हम कहते हैं कि हिन्दुस्तानी अँगरेजों से अच्छे होते हैं। लेकिन यह आम क़ायदा है कि शाही क़ौम उम्दा समझी जाती है और शाही क़ौम का आदमी बुरा होने की हालत में भी दूसरी क़ौम वालों से अच्छा रहता है। ... अँगरेजों की बुराई को खुद गवर्न्मेन्ट दबा देती है।'' (देखो, द्वितीय, भाग पृ.सं. 111-112)

(v) इंग्लिस्तान की राजनीति

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अँगरेजों का राजनीतिक और सैनिक वर्चस्व विश्व में सर्वोपरि था। लेकिन अँगरेजों की राजनीति थी कि किसी से युद्ध न हो। इस विषय पर ग्रंथकर्ता विवेचन करता हुआ लिखता है *''इंग्लिस्तान का मुल्क बहुत फैला हुआ है और हर वक़्त मुल्क बढ़ाने की कोशिश में रहते हैं इसलिए इनके साथ किसी न किसी के साथ छेड़छाड़ बनी ही रहती है। मगर ऊपर की दस विलायतों (रूस, फ्रांस, जर्मनी, उत्तरी अमेरिका वग़ैरा) के साथ लड़ना नहीं चाहते। साम, दाम और भेद, इन तीन उपायों से अपना काम निकाल लेते हैं। ज़बर्दस्त से डरना और कमजोर को दबाना इनकी राजनीति है। इसी से दूसरी विलायत वालों ने इनको 'बनिये' का ख़िताब दे रखा है।''* (देखो प्रथम भाग, पृष्ठ सं. 174)

(vi) तुर्की की स्थिति

तुर्की का मुल्क सामरिक दृष्टि से यूरोप में बहुत महत्वपूर्ण स्थान पर आया हुआ है लेकिन उस की आंतरिक दशा बहुत कमजोर थी। इस परिपेक्ष्य में कृष्णसिंह लिखता है *''तुर्की वाले सब की ख़ुराक हैं। हर वक़्त दम गिना करते हैं। उन की ताक़त अपना बचाव करने की भी नहीं है। मगर मुल्क ऐसे मौक़े पर आ गया है कि यूरोप की किसी विलायत के हाथ में आ जावे तो वह कुल दुनिया भर पर ग़ालिब हो सकता है इसीलिए किसी एक के हाथ में जाने को दूसरे पसन्द नहीं करते। यही सूरत तुर्की वालों के बचाव की हो रही है। सन् 1873 में रूस वालों ने इस मुल्क को फ़तह कर ही लिया था मगर दूसरी विलायतों वालों ने बर्लिन शहर में कमीशन बैठा कर रूस को रोक दिया।''* (देखो प्रथम भाग, पृष्ठ सं. 174)

(vii) रूसियों की मध्य-एशिया में पेशक़दमी और अँगरेजी सरकार की हिन्दुस्तानी रईसों के प्रति राजनीति में बदलाव

शाहज़ादा प्रिन्स ऑफ वेल्स जब सन् 1874 में ग्वालियर आया तो महाराजा जियाजी राव ने उस से दरख़्वास्त की थी कि सन् 1857 को ग़दर में ग्वालियर का किला उस से ले लिया गया था, अब उसे पीछा मिल जाना चाहिए परन्तु उस की कोई सुनवाई नहीं हुई। लेकिन अभी फरवरी सन् 1885 में जब रूस की पेशक़दमी[1] हिन्दुस्तान की ओर बढ़ी तो अँगरेजी सरकार को बड़ा भय हुआ और उस की पॉलिसी में एकदम बदलाव आया कि जहाँ तक हो सके हिन्दुस्तानी रईसों को खुश रख कर सरकार अँगरेजी का ख़ैरख़्वाह बनाया जावे। जब वाइसरॉय लॉर्ड डफरिन ग्वालियर के दौरे पर गया तो वहाँ घोषणा की कि महाराजा की वफ़ादारी देख कर सरकार अँगरेजी ने ग्वालियर का किला महाराजा सिंधिया को पीछा देना तजवीज़ किया है वह आज निहायत खुशी के साथ महाराजा को दे रहे हैं।

---

1. **(अ.) सेना का आक्रमण के लिए आगे बढ़ना**

अँगरेजी सरकार की राजनीति में आये इस एकाएक बदलाव के कारणों पर कृष्णसिंह ने बड़ा सूक्ष्म विवेचन करते हुए लिखा है *''हमारी समझ में हिन्दुस्तानी रईसों के लिए यह हालत बहुत ग़नीमत है कि रूसियों का अँगरेजों से मुक़ाबला तो नहीं होवे और मध्य एशिया में हिरात की परली तरफ धमकाते रहें। अगर रूसियों की तरफ का ख़ौफ़ अँगरेजी सरकार का निकल गया तो देशी रियासतों को कमजोर करने व ख़जाना, फौज की ताक़त में क़ोताही[1] नहीं की जायगी और अगर रूस से मुक़ाबला हो तो हिन्दुस्तानी रईसों पर दबाव डाल कर रूसियों से लड़ायेंगे जिसमें इन रईसों के जान और माल के नष्ट होने में किसी तरह का शक़ नहीं है और अगर किसी रईस ने सरकार अँगरेजी को मदद देने से इन्कार किया और बेवफ़ाई की तो उस हालत में वह सबसे ज्यादा बरबाद कर दिया जायेगा इसलिए जो हालात इस समय बन रही है उस का बना रहना हिन्दुस्तानी रईसों का जीवन है। अगर रूस का दबाव बना रहा और लड़ाई शुरू नहीं हुई तो इन रईसों के दीवानी, फौज़दारी इख़्तियारात भी कुछ अर्से तक बने रहेगें हालांकि फौज़दारी मामलों में तो इस वक़्त रईसों को बराये-नाम इख़्तियार हैं और जो कुछ हैं वह भी जल्दी चले जाने वाले हैं। मगर दीवानी इख़्तियार कुछ समय तक बने रहेंगे। मगर मालुम नहीं ज़माना क्या हेर-फेर दिखायेगा? परमेश्वर इन रईसों को सुमति देवें और आपस में प्रेम बढ़ा कर एकता बढ़ावें जिसमें इनके बचाव की सूरत है।'' (देखो प्रथम भाग, पृ.सं. 196-197)*

(viii) अँगरेज पोलिटिकल अफसरों के षड्यंत्र और जम्मू कश्मीर के महाराजा प्रतापसिंह का पाँच साल के लिए बेइख़्तियार होना

अँगरेज सरकार का बहुत वर्षों से इरादा था कि कश्मीर का जिला महाराजा से ले लिया जाए क्योंकि कश्मीर की सरहद रूस से लगती है इसलिए रूसियों के आने के रास्तों का इत्मिनान कर लेना चाहते हैं चाहे इन्साफ़ से होवे या बेइन्साफ़ी से और वाइसरॉय लॉर्ड लिटन ने तो पुख़्ता राय क़ायम कर ली थी। परन्तु अफ़ग़ानिस्तान का झगड़ा शुरू होने के कारण बच गये। बाद में लॉर्ड डफरिन का इरादा हुआ कि महाराजा प्रतापसिंह को किसी बड़े तुहमत[2] में रियासत से बेदख़्ल कर देवें। अत: पोलिटिकल एजेन्ट मि. प्लौडन को रवानगी इशारा हो गया कि वह महाराजा को दबा कर उनकी शिकायती रिपोर्ट करे और कोई तुहमत लगावे। ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह *इस संदर्भ में लिखता है ''तब मि. प्लौडन ने दीवान लछमनदास से चंद कागज़ात महाराजा के नाम के जाली बनवा कर उसमें रूसियों को हिन्दुस्तान में बुलाना और अपने मुल्क में उनको रास्ता देना व मि. प्लौडन को और महाराजा के भाई अमरसिंह व रामसिंह को ज़हर देकर मार डालना लिखवाया। यह कागज महाराजा के नाम से दीवान लछमनदास और मीरमबक्ष के नाम से लिखे गये जो कुल कागज बैरिस्टर स्पीता को इसलिए दिए कि महाराजा प्रतापसिंह पर मुक़द्दमा क़ायम कर उसे सरकार का खैरख़्वाह साबित कर पीछा जम्मू-कश्मीर का दीवान बना देवें।''*

कुछ समय बाद कर्नल प्लौडन का तबादला कर उसे बरार का कमिश्नर नियुक्त कर दिया गया और उस की जगह कर्नल निस्बट आया। उस ने बैरिस्टर मि. स्पीता की मैम से वे कागज मँगवाये और यह कागजात महाराजा प्रतापसिंह को दिखाये और कहा *''रूसियों को हिन्दुस्तान में बुलाने व पोलिटिकल एजेन्ट को ज़हर दिलाने की तहरीर करने बाबत आपको शख़्त सज़ा दी जायेगी। महाराजा ने इन ख़तों से लाइल्मी ज़ाहिर करके जबाव दिया है कि यह कागज जाली बनाये गये हैं। मुझे इन का हाल बिलकुल मालूम*

---

1. **(फा.) कमी, त्रुटि** 2. **लाँछन, आरोप**

नहीं, न तो मैंने लिखे हैं और न किसी से लिखवाये हैं, सिर्फ़ मुझ पर तुहमत लगाने के लिए यह फ़रेब किया गया है। इस पर कर्नल निस्बट ने कहा कि आप किस भरोसे भूले हुए हैं? ज़रा होश में आकर देखिए कि आपका घर फूटा हुआ है यानी आप के हक़ीक़ी भाई अमरसिंह और रामसिंह, दीवान शिवशरण, सरदार हवासिंह, दीवान जानकी प्रसाद, सूरज कौल, राधाकिशन कौल आदि मौज़िज आदमी इन खतों को सही बताते हैं और मुक़द्दमा दायर होने पर ये लोग गर्वनमेंट में आपके ख़िलाफ़ ग़वाही देंगे फिर आपका बयान क्यों कर सही समझा जा सकता है? यह बात सुनते ही महाराजा घबरा गये और कर्नल निस्बट से कहा कि मेरे नौकर बेईमानी से मुझे फँसाना चाहते हैं जिससे बचने की आप मुझे कोई सूरत बतायें। इस पर निस्बट ने सलाह दी कि पाँच साल के लिए अपनी रियासत का इस्तिफ़ा लिख कर देवें तो मैं आपको बचा सकता हूँ। इस पर महाराजा ने इन्कार तो किया लेकिन आख़िर में कर्नल निस्बट के ज्यादा दबाने पर पाँच वर्ष के लिए रियासती कामों से दस्तबरदार[1] होने बाबत इस्तिफ़ा लिख दिया जो कर्नल निस्बट ले कर लॉर्ड लैन्सडोन के पास गया।''

जब ये अति-गोपनीय कागजात वाइसरॉय लॉर्ड लैन्सडोन के सामने पेश हुए तो उस ने हुक्म दिया कि *''रूसियों को हिन्दुस्तान में बुलाने और पोलिटिकल एजेन्ट को ज़हर देने के बाबत जो ख़त पेश हुए हैं उस के लिए महाराजा इन्कार करते हैं इसलिए इनके झूठा या सच्चा होने बाबत हम कुछ भी हुक्म नहीं देते लेकिन पाँच साल के लिए जो इस्तिफ़ा रियासती कामों का पेश हुआ है वह महाराजा साहिब के हाथ का लिखा हुआ है इसलिए पाँच साल तक रियासत जम्मू-कश्मीर का राज-कारोबार सरकार के हाथ में लेना जरूरी है।''* यह हुक्म होते ही रियासत के इन्तिज़ाम के लिए पोलिटिकल एजेन्ट की मातहती में एक कौंसिल मुक़र्रर कर दी गई। फौज़ और 'माल' पर अँगरेजी अफसर मुक़र्रर कर दिए गए और महाराजा की पाँच लाख सालाना की पेंशन कर दी गई। लाचार, महाराजा ने गवर्नमेंट में इस बात की दख़्वास्त पेश की कि हाल की काररवाई में उस पर सख़्त ज़ुल्म हुआ है और धोखादेही से उस का इस्तिफ़ा लिखवाया गया है जिस का इन्साफ़ होना चाहिए परन्तु महाराजा की कुछ समाअत नहीं हुई।

ग्रंथकर्ता आगे लिखता है कि *''महाराजा ने लॉर्ड लैन्सडोन के नाम चिट्ठी लिख कर तहरीर किया कि मेरा इन्साफ़ होकर या तो मेरा राज्य मेरे सिपुर्द होना चाहिए वर्ना बेहतर है कि आप अपने हाथ से मेरे सीने में गोली लगा कर मेरा काम तमाम कर देवें इसीमें मुझे आराम है। लॉर्ड लैन्सडोन ने इस चिट्ठी का जवाब बहुत मुलामियत के साथ दिया मगर अख़ीर में यही लिखा कि आपके मामले में जो हुक्म हो चुका है उसको मैं पलट नहीं सकता। इस पर महाराजा प्रतापसिंह ना उम्मीद हो कर बैठ रहे।''*

इस सारे दुष्चक्र और अँगरेजी सरकार की कुटिल राजनीति के सम्बंध में अपने लम्बे राजनीतिक अनुभव के आधार पर कृष्णसिंह लिखता है कि ''यह पाँच साल की मीआद महाराजा की उम्र भर के लिए समझना चाहिए .... अगर खास सबब से पीछा इख़्तियार दिया जाए तो यह शर्त जरूर कर देते हैं कि पोलिटिकल एजेन्ट की राय लेकर काम करें। इस हालत में इख़्तियार मिलना बराये-नाम समझना चाहिए।'' (देखो, प्रथम भाग पृ.सं. 324-327)

जम्मू-कश्मीर के अभागे महाराजा प्रतापसिंह के विरुद्ध अँगरेज सरकार की तरफ से नियुक्त दोनों पोलिटिकल एजेन्टों ने जिस प्रकार के षड्यंत्र और कुचक्रों को सफल बनाने में अंज़ाम दिया उस के विवरण

---

1. **(फ़ा.) जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले।**

को पढ़ कर सरकार का असली व घिनौना मुखौटा स्पष्ट हो जाता है। ऐसा सच्चा-सच्चा विवरण तत्कालीन किसी इतिहास में मिलना कल्पना के बाहर की बात थी। अधिकांश पोलिटिकल एजेन्ट ब्रिटिश सेना के सेवा-निवृत्त घुटे-घुटाये अधिकारी होते थे और प्राय: वे ही 'पोलिटिकल सर्विस' में भर्ती किए जाते थे। हिन्दुस्तानी रईसों के पास पोलिटिकल एजेन्टों के सामने उन का 'हुकुम का ग़ुलाम' बन कर रहने के अलावा और कोई चारा नहीं था। कृष्णसिंह ने इस प्रकरण के घटना-क्रम के सभी पहलुओं का विवेचन किया है और सब के अन्त में वाइसरॉय लॉर्ड लैन्सडोन का यह कथन कि मैंने जो हुक्म दिया है उसको मैं पलट नहीं सकता, इस सारे परिच्छेद की असली मंशा को उजागर करता है।

(15) महाराणा सज्जनसिंह : आत्म-सम्मान का एक प्रेरणास्पद प्रसंग

महाराणा सज्जनसिंह सन् 1884 के अंतिम दिनों में जोधपुर गये तब महाराजा जसवंतसिंह ने उन से कहा कि जामनगर (गुजरात) में उन का ससुराल है। वहाँ के जाम वीभाजी ने अपनी मुसलमान पासवान के पेट से पैदा हुए लड़के को रियासत का हक़दार बना कर अँगरेजी सरकार से मंज़ूरी हासिल कर ली है जिस को किसी तरह रोका जाय। जोधपुर से लौटते हुए महाराणा और महाराजा जसवंतसिंह दोनों अजमेर आये तो राजपूताना का एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल, कर्नल ब्रॉडफोर्ड उन से मिलने आया। तब महाराणा सज्जनसिंह ने इस मामले को उठाया और कर्नल ब्रॉडफोर्ड को जिस आत्म-सम्मान के साथ कहा वह उद्धृत किया जाता हैं:- *''आप अपनी क़ौम की और अपने मज़हब की तरक़्क़ी के लिए कैसी-कैसी कोशिशें कर रहे हैं। पादरी लोगों की मिशन को रियासतों में व दूसरे मुल्कों में भेज कर हर तरह की मदद देते हैं और उनके रहने के लिए जगह और गिरजा वग़ैरा के लिए ज़मीन देने को हम लोगों पर दबाव डालते हैं। चुनांचे जिस तरह आपको अपनी क़ौम का ख़याल है उसी तरह हमको हमारी क़ौम का होना चाहिए। क्या हम मनुष्य नहीं हैं जो ऐसे मामलों में कोशिश न करें? अगर वह रियासत राजपूताना की नहीं है मगर राजपूतों की तो है। फिर हम उसको बिगड़ती कैसे देख सकते हैं?''* महाराणा सज्जनसिंह के इस निर्भीक कथन से कर्नल ब्रॉडफोर्ड बहुत प्रभावित हुआ और कहा कि आप दोनों रईसों के ख़रीते सरकार अँगरेजी में भेजूंगा और बम्बई गवर्नर से वह असल मिसल मँगवा कर आपके पास भेजूंगा। (देखो, प्रथम भाग, पृ.सं.-151)

तत्कालीन राजपूताना के रईसों में एकमात्र महाराणा सज्जनसिंह में ही ऐसा स्वाभिमान था जो अँगरेजी सरकार के आला अफसरों को इस साहस के साथ ऐसी खरी-खरी बात कह सकते थे। इस प्रकार के तथ्य अन्य इतिहास ग्रंथों में मिलना दुर्लभ है।

(16) स्वामी दयानंद सरस्वती और मौलवी अब्दुल रहमान के शास्त्रार्थ में ग्रंथकर्ता की मध्यस्थता

स्वामी दयानंद सरस्वती का आगमन प्रथम बार चित्तौड़ में सन् 1882 में हुआ था। देश में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड और जड़त्व को समूल उखाड़ फेंकने के लिए उन का किसी प्रदेश में जाना प्रचण्ड आँधी के समान था। इस के अतिरिक्त क्रिश्चियन मिशनरीज के कुचक्र और बलात् धर्म-परिवर्तन को रोकना भी उन का महत् उद्देश्य था। उन के साथ कई स्थानों पर पण्डितों, मौलवियों से शास्त्रार्थ हुआ था। चित्तौड़ में मौलवी अब्दुल रहमान के साथ शास्त्रार्थ हुआ तो महाराणा सज्जनसिंह ने ठाकुर मनोहरसिंह लावा, ब्रजनाथ व पद्मनाथ पुरोहित तथा ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह को मध्यस्थ मुक़र्रर किया। इस समय ग्रंथकर्ता की आयु मात्र बत्तीस वर्ष की थी परन्तु उस की विद्वत्ता से महाराणा परिचित थे इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे अद्वितीय विद्वान् के साथ शास्त्रार्थ की मध्यस्थता हेतु कृष्णसिंह को योग्य समझा। किसी भी काल में ऐसा दायित्व

प्राप्त करना गरिमामय है।

(17) कृष्णसिंह को महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर द्वारा पाँव में सोना पहिनने (स्वर्णाभूषण) की इज़्ज़त प्रदान करना

महाराणा फतहसिंह को पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल माइल्स एवं मि. विंगेट ने सरहद-बचाव के लिए फौज़ देने के मामले में हर बात पर दबाना शुरू किया और महाराणा को नुक़्सान पहुँचाने की नीयत से ऐसे कई नये मामलात शुरू कर दिये जिन के कारण महाराणा अत्यधिक दिक़ हो गये। इन दुश्चकों की जड़ में था दीवान पन्नालाल मेहता। उस ज़माने में जहाँ पोलिटिकल एजेन्ट और दीवान आपस में मिल कर किसी रईस के विरुद्ध एक हो जाएं तो उस रईस की परेशानियों का कोई अन्त ही नहीं था। इस से बचने का केवल एक ही उपाय था - रईसों में एकता स्थापित करना और इस हेतु महाराणा फतहसिंह ने ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह को जोधपुर महाराजा एवं उन के छोटे भाई कर्नल सर प्रतापसिंह, मुसाहिब-आला के पास गुप्त-मंत्रणा हेतु भेजा और साथ ही यह भी दायित्व सौंपा कि महाराणा की बड़ी राजकुमारी की सगाई महाराजकुमार सरदारसिंह के साथ तय कर दी जाए। रईसों में एकता क़ायम करने सम्बंधी काम बड़ा ज़ोखिम भरा था क्योंकि यह काम अँगरेजी सरकार की पॉलिसी के ख़िलाफ़ था और कृष्णसिंह खूब अच्छी तरह जानता था कि अन्ततः इस प्रयास के परिणाम उस के लिए एक दिन कितने घातक सिद्ध होंगे? परन्तु कृष्णसिंह के लिए स्वामिभक्ति सर्वोपरि थी। कृष्णसिंह ने महाराणा की राजकुमारी की सगाई का काम बड़ी योग्यता से सम्पादित किया जिस से महाराजा जसवंतसिंह कृष्णसिंह पर बहुत प्रसन्न हुए और 30 अगस्त सन् 1891 को उसे पाँव में सोना (स्वर्णाभूषण) पहिनने की इज़्ज़त प्रदान की। वैसे, महाराजा जसवंतसिंह और सर प्रतापसिंह जब सन् 1882 में महाराणा सज्जनसिंह का आराम पूछने उदयपुर गये थे तब उदयपुर से प्रस्थान करते समय दोनों ने ठाकुर मनोहरसिंह लावा और कृष्णसिंह को ही महाराणा की तंदुरुस्ती का पूरा ध्यान रखने की हिदायत की थी। यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि तत्कालीन राजपूताना में एकमात्र कर्नल सर प्रतापसिंह ही राज-परिवारों में ऐसे सुयोग्य व्यक्ति थे जिन से अँगरेजी सरकार के सभी आला पोलिटिकल अफसर खुश थे और स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धान्तों का अनुसरण करने के कारण देश-हित के कार्यों में भी उन की उतनी ही रुचि रहती थी। महाराजा जसवंतसिंह ने जोधपुर रियासत का सम्पूर्ण राज-कार्य सर प्रतापसिंह के भरोसे कर रखा था और उन्होंने रियासत की हर क्षेत्र में तरक़्क़ी की जिस से यह राज्य राजपूताना में अग्रणी हो गया था।

(18) आसन्न-विपत्ति का पूर्वाभास

उस ज़माने में किसी रईस और उसके पोलिटिकल एजेन्ट के बीच तीव्र मतभेद होने की सूरत में रईस के ख़ैरख़्वाह सलाहकारों पर आफ़त आना मानी हुई बात थी। अतः जब महाराणा फतहसिंह के विरुद्ध पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल माइल्स की रियासती कामों में दस्तअंदाज़ी हद के बाहर निकल गई तो महाराणा ने कृष्णसिंह को महाराजा जसवंतसिंह के पास जोधपुर भेजा और मुसाहिब-आला कर्नल सर प्रतापसिंह के नाम पत्र में जरूरी सवालात लिखाये जिन के बाबत कृष्णसिंह को सर प्रतापसिंह से मश्वरा कर उन का जवाब लाना था। महाराणा ने कृष्णसिंह से कहा कि मेरे पास दूसरा कोई भरोसे का आदमी नहीं है इसलिए तुम्हें ही आगे कर रहा हूँ। इस पर कृष्णसिंह ने महाराणा से अर्ज़ की कि जिन शब्दों में आप मुझे फ़रमा रहे हैं उस में मुझे यह काम करने में कोई गुरेज़ नहीं है चाहे मेरे ऊपर कैसी ही आफ़त आवे। फिर मैं

इस से अनजान तो हूँ नहीं। इस प्रकार कृष्णसिंह को आसन्न-विपत्ति का पूर्वाभास अच्छी तरह हो गया था जो साल भर बाद ही सही हो गया।

उस समय जोधपुर में महाराजा जसवंतसिंह की कृष्णसिंह के प्रति बड़ी मेहरबानी रही। कृष्णसिंह ने जोधपुर कविराजा मुरारिदान के मार्फ़त सर प्रतापसिंह से कहलाया कि अगर वह उदयपुर से निकाला जाये तो क्या आप जोधपुर में रख लेंगे? इस पर सर प्रतापसिंह ने खुशी के साथ उसे रख लेना मंज़ूर किया। थोड़े समय बाद ही मई सन् 1983 में कृष्णसिंह को उदयपुर महाराणा की सेवा से निकाला गया तो उसे ख़याल हुआ कि यदि मैं अभी जोधपुर जाऊँ और कर्नल माइल्स वहाँ के पोलिटिकल एजेन्ट से इशारा कर दे तो उस का जोधपुर में रहना भी सदा के लिए नामुमकिन हो जाएगा इसलिए वह अपने गाँव देवपुरा चला गया। कृष्णसिंह को उस समय सबसे ज्यादा अफ़सोस इस बात का था कि अब उसे इस इतिहास के लिखने में उतनी ख़बरें नहीं मिल सकेंगी जितनी उदयपुर में रहते हुए मिलती थीं और उसे अशिक्षित ग्रामीणों के बीच रहना पड़ेगा। परन्तु इतना संतोष है कि वह स्वतंत्र हो कर रहेगा और कई महीनों तक गाँव में अकेला रहा। इस के कुछ समय बाद आर्य-समाज में एक विशेष मुद्दे को ले कर दो फ़िरके पड़ने की सम्भावना देख कर सर प्रतापसिंह ने कृष्णसिंह को जोधपुर बुलाया तो कृष्णसिंह ने सोचा कि काफी समय बीत चुका है इसलिए अब मुझे जोधपुर चले जाना चाहिए और सर प्रतापसिंह से इस बाबत कहा तो उन्होंने कृष्णसिंह से कहा *''मैं लायक मनुष्यों की क़द्र करता हूँ और आप को बहुत लायक समझता हूँ इसलिए आप को खुशी से रखूंगा। आप बेशक़ चले आवें।''* (देखो द्वितीय भाग, पृ.सं. 298)

(19) कृष्णसिंह का उदयपुर और शाहपुरा से निकाला जाना

षड्यंत्रकारी तत्वों के मुख्य सूत्रधार दीवान पन्नालाल मेहता ने महाराणा फतहसिंह और पोलिटिकल एजेन्ट के बीच ग़लतफ़हमी यहाँ तक बढ़ा दी कि वे एक दूसरे के दुश्मन बन गये। पन्नालाल मेहता ने कर्नल माइल्स को इस सीमा तक भड़काया कि महाराणा कुछ अर्से पहले घोड़े से गिर गये थे तब सिर में चोट आई थी जिस के कारण उन का दिमाग़ खराब हो गया है और ज़ुनूनी हो गये हैं। अपनी बात की पुख़्तगी के लिए उस ने डॉ. शैफर्ड से ताईद करवा दी। इस पर माइल्स ने महाराणा के इख़्तयारात छीनने का निश्चय कर लिया और एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल कर्नल ट्रेवर को रिपोर्ट भेजने की तैयारी करने लगा। एक दिन कर्नल माइल्स ने पन्नालाल से पूछा कि एजेन्सी की जो तहरीरें महाराणा के पास जाती हैं उन के जवाब के मस्विदे कौन बनाता है? *''इस पर पन्नालाल ने कहा कि बारहठ किशनजी और कोठारी बलवंतसिंह ही जवाब लिखावते हैं जिन को आप अलग करा देवें तो महाराणा साहब लाचार होकर आपसे दब जावें और जो आप कहें वह कर लेवें। इस पर कर्नल माइल्स ने महाराणा से मिल कर रूबरू कहा कि आप किशनजी और बलवंतसिंह को तो अपने पास रखना बंद कर देवें और महाराज गजसिंह* को छह महीनों के लिए बाहर भेज देवें।''*

इस पर कृष्णसिंह ने महाराणा से आगे हो कर अर्ज़ की कि *''आप हम लोगों को अलग कर एजेन्ट से सफाई कर लेवें तो हम तो ज्यादा नुक़्सान से बच जाएं और सरकारी मामले दुरुस्त हो जावें। इस पर महाराणा ने फ़रमाया कि तुम लोगों को अलग करवा कर फिर मुझ को दबायेगा इसलिए अलग करना मंज़ूर नहीं करूंगा।''* उधर, कर्नल माइल्स ने देवली के पोलिटिकल एजेन्ट को कृष्णसिंह के ख़िलाफ़ शिकायत

---

* **महाराणा के बड़े भाई**

लिखी कि *''किशनजी यहाँ महाराणा साहब को खराब सलाह देता है और वहाँ राजाधिराज को देता होगा इसलिए आप इस शख़्स को वहाँ रियासत में नहीं रहने देवें।''* उस समय कृष्णसिंह सेट्लमेंट के जरुरी काम के सम्बंध में राजाधिराज के बुलाने पर शाहपुरा गया हुआ था। थॉरंटन ने जब राजाधिराज को इस बारे में कहा तो राजाधिराज ने कृष्णसिंह से कहा कि तुम्हारे यहाँ रहने से थॉरटंन नाराज़ है इसलिए फ़ौरन उदयपुर चले जाओ। (देखो भाग द्वितीय, पृ.सं. 253)

(20) एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल कर्नल ट्रेवर का महाराणा के नाम ख़रीता

कर्नल माइल्स ने महाराणा फतहसिंह के ख़िलाफ़ पचपन पृष्ठ की शिकायत ए.जी.जी. कर्नल ट्रेवर को इस मज़मून की भेजी कि *''महाराणा का दिमाग़ रियासत का काम करने लायक नहीं रहा इसलिए महाराणा के इख़्तियारात दो साल के लिए छीन लिए जायें और रियासत का कुल काम पोलिटिकल एजेन्ट की सलाह से होता रहे।''* बद्इंतिज़ामी की इस शिकायत की ताईद में अन्य कई मामलात का ज़िक्र भी किया गया था। इस रिपोर्ट पर ए.जी.जी. का ख़रीता महाराणा के नाम आया जिस में कृष्णसिंह वग़ैरा तीन शख़्सों के खिलाफ़ नीचे लिखे माफिक हुक्म दिया गया :-

''लेकिन और भी ऐसे शख़्स हैं जिनको कि ख़्वाह[1] उस तरह की सज़ा दी जाए या ऐसी जगह बदली कर दी जावे कि जो उदयपुर से दूर हो इनमें से ख़ास कर कोठारी बलवंतसिंह और जोशी नारायणदास और चारण किशनजी कहे गये हैं।'' अन्त में महाराणा को सख़्त चेतावनी देते हुए कर्नल ट्रेवर ने लिखा *''मुआफ़िक़ एक दोस्त के मैं शौक़ से चाहता हूँ कि आप पेश्तर इसके कि इस जिम्मेदारी को अपने ऊपर लें उसके नतीजों पर बहुत होशियारी से ग़ौर फ़र्मा लें। तारीख 10 जनवरी सन् 1893''।*

एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल के उपरोक्त ख़रीते के आने के बाद महाराणा फतहसिंह ने कृष्णसिंह को अपनी नौकरी से निकाल दिया और उसे उदयपुर से भी निकलना पड़ा। उधर, शाहपुरा राजाधिराज नाहरसिंह ने कृष्णसिंह को वकालत से हटा दिया और शाहपुरा में भी रहने की भी मुमानियत कर दी। इस प्रकार कृष्णसिंह को यदि कहीं रहने की इजाज़त थी तो केवल उसके छोटे-से गाँव में। कृष्णसिंह को यह सारी सज़ा केवल स्वामिभक्ति के कारण भोगनी पड़ी जब कि कृष्णसिंह इसके होने वाले परिणामों को अच्छी तरह जानता था। वास्तव में देखा जाए तो अँगरेज सरकार द्वारा कृष्णसिंह को महाराणा की सेवा से राजनीतिक कारणों से निकालने का राजपूताना में यह पहला मौक़ा था। बलवंतसिंह कोठारी तो कुछ समय बाद उदयपुर आ गया और महाराणा की सेवा में ले लिया गया परन्तु कृष्णसिंह को हमेशा के लिए निकाल दिया गया।

(21) श्यामजी कृष्ण वर्मा बार-एट्-लॉ द्वारा महाराणा को मदद मिलना

श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानन्द सरस्वती के अग्रणी शिष्यों में से थे। उन्होंने ही श्यामजी को ऑक्सफोर्ड भेज कर पढ़ाई का प्रबन्ध कराया था। श्यामजी प्रत्युपन्नमति के स्वातंत्र्य-चेता पुरुष थे। कृष्णसिंह की श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ बड़ी आत्मीयता थी और श्यामजी का कृष्णसिंह के साथ बड़ा आदर-भाव था। पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल माइल्स ने जब महाराणा फतहसिंह के इख़्तियारात छीनने बाबत रिपोर्ट एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल के पास भेजी तो महाराणा ने कृष्णसिंह को श्यामजी के पास अजमेर भेजा और कहा कि ''श्यामजी को एक हजार रुपये माहवार में तीन साल के लिए नौकर रख कर लाट साहब के पास भेजो जो वह लाट साहब से मिल कर माइल्स की रिपोर्ट मंज़ूर नहीं होने देने का बंदोबस्त करें।''

---

1. **(फ़ा.) अच्छा लगने वाला, चाहे**

कृष्णसिंह ने श्यामजी से महाराणा की हिदायत के अनुसार नौकरी का इक़ारनामा लिखवाया और उन्हें कलकत्ता रवाना किया। *''श्यामजी तारीख 4 जनवरी सन् 1883 को लॉर्ड लैन्सडोन से मिले और उदयपुर का हाल मुख़्तसर तौर पर बयान किया। वाइसरॉय ने हुक्म दिया कि इन बातों को मैं याद रखूंगा मगर तुम फॉरैन सेक्रेट्री को याददाश्त लिखवा देना। चुनांचे, इस के बाद श्यामजी फॉरैन सेक्रेट्री सर मार्टिमर ड्यूरांड से मिले और कुल हालात से वाक़िफ़ किया तो सेक्रेट्री ने इक़ार किया कि तुम से दरियाफ़्त किए बिना रिपोर्ट मंज़ूर नहीं की जाएगी। श्यामजी ने सेक्रेट्री से कहा कि महाराणा साहब मुझे नौकर रखना चाहते हैं मगर ऐजेन्ट इस बात को रोकेगा इस का आप बन्दोबस्त कर देवें। इस पर सेक्रेट्री ने एक चिट्ठी माइल्स के नाम लिख दी''*। इस के बाद श्यामजी आबू गये और ए.जी.जी. कर्नल ट्रेवर से मिले एवं ड्यूरांड ने जो चिट्ठी माइल्स के नाम दी थी, वह दिखाई जिस पर ट्रेवर ने कहा कि हमने चित्तौड़ से उदयपुर तक रेल बनाने की महाराणा से ताक़ीद की है उस को रोकने के लिए तुमको महाराणा ने नौकर रखा मालूम होता है! इस पर श्यामजी ने कहा कि मैं तो रेल बनाने का तरफ़दार हूँ। जहाँ तक हो सका जल्दी मंज़ूरी दिलवाऊँगा। इस बात से ट्रेवर खुश हो गया और माइल्स के नाम रियासत में श्यामजी को नौकर कराने बाबत चिट्ठी लिख दी। उदयपुर आ कर श्यामजी ने दोनों चिट्ठियाँ माइल्स को दी जिन को देखते ही माइल्स घबरा गया और महकमा-ख़ास के नाम चिट्ठी लिख दी कि इन को रियासत में उम्दा जगह मिलनी चाहिए। चुनांचे, दूसरे ही दिन श्यामजी को महद्राज-सभा का मेम्बर और महाराजकुमार भोपालसिंह का अतालीक[1] मुक़र्रर कर दिया। *''इस के बाद श्यामजी ने महाराणा से अर्ज़ की कि आप को अपना बिगड़ा हुआ मामला दुरुस्त करना है तो चित्तौड़ से उदयपुर तक की रेल बनवाने की मंज़ूरी दे कर एंजीनियर टॉमसन की मीआद जनवरी में ख़त्म हो चुकी इससे वह जाने वाला है जिस को दो वर्ष के लिए फिर रख लीजिए वर्ना इस के बिना कभी दुरुस्ती नहीं होएगी। इस पर महाराणा ने सब तरफ़ से नाउम्मीद हो कर टॉमसन को रखने की व रेल बनाई जाने की मंज़ूरी लिख दी जिस से कर्नल ट्रेवर श्यामजी का मददगार हो कर कर्नल माइल्स को अपने इरादों में ना उम्मीदी हो गयी और बिगड़े हुए मामले में कुछ सुधार मालूम होने लगा।''* (देखो द्वितीय भाग, पृ.सं. 262-264)

इस प्रकार महाराणा फतहसिंह के विरुद्ध जो षड्यंत्र और दुष्चक्र रचे जा कर उन के राज्याधिकार दो साल के लिए ख़त्म कराने की सीमा तक पहुँच चुके थे, उन को श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी सूझबूझ से एकदम विराम लगा दिया और राजपूताना के सिरमौर रईस एक बड़ी फ़ज़ीहत से बच गये। यदि महाराणा के अधिकार छीन लिए जाते तो दूसरे राजा-महाराजाओं का मनोबल टूटने में कुछ भी समय नहीं लगता और यह दो साल की अवधि आगे नहीं बढ़ाई जाती इसकी भी कोई तसल्ली नहीं थी।

स्मरण रहे कि जब देश में स्वतंत्रता-आन्दोलन का सूत्रपात हुआ तो श्यामजी कृष्ण वर्मा क्रांतिकारियों, देशभक्तों के मार्ग-दर्शक और प्रेरणा-श्रोत बने। वे प्रथम-पंक्ति के राष्ट्र-भक्तों में से थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा सन् 1905 में भारत छोड़ कर इंग्लैण्ड चले गये और वहाँ रहते हुए उन्होंने भारतीय विद्यार्थियों के लिए 'इंडिया-होम' की स्थापना की। वहीं से उन्होंने 'SOCIOLOGIST' नामक समाचार पत्र निकाला! ब्रिटेन की साम्राज्यवादी सरकार को श्यामजी की स्वतंत्र विचार-धारा और क्रांतिकारियों के साथ सम्बंध होने से उन पर शक़ हो गया

---

1. **(सु.) शिक्षक, उस्ताद, शिक्षा के साथ शिष्टता सभ्यता, व्यवहार-निष्ठता आदि सिखलाने वाला और चाल-चलन की देख-रेख करने वाला गुरु**

इसलिए उन्हें इग्लैण्ड से निकाल दिया तो वे फ्रांस चले गये। ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण उन्हें फ्रांस भी छोड़ना पड़ा। वहाँ से वे स्विट्जरलैंड चले गये और फिर जीवन-पर्यंत वहीं रहे। वास्तव में श्यामजी कृष्ण वर्मा सही अर्थों में क्रांतिद्रष्टा थे।

(22) ग्रंथकर्ता का वाइसरॉय आदि के दरबार में उपस्थित रहना

उदयपुर महाराणा के अतिथि हो कर जो भी बड़े-बड़े राजा-महाराजा वहाँ आते, उन के सम्मान में आयोजित किए जाने वाले दरबार में महाराणा की तरफ से नियत किए गए सरदारों में कृष्णसिंह उपस्थित रहता था। इस के अतिरिक्त, हर वाइसरॉय अपने सेवा-काल की अवधि में एक बार राजपूताना की बड़ी रियासतों जैसे- उदयपुर, जोधपुर, जयपुर का दौरा अवश्य करता था। उन के आगमन पर जो विशिष्ट दरबार किये जाते उन में कृष्णसिंह अन्य सरदारों के साथ हाजिर रहा करता था। इस अवधि में निम्नलिखित वायसरॉय उदयपुर आए :-

(i) लॉर्ड रिपन [दरबार, चित्तौड़ में]
(ii) लॉर्ड डफरिन
(iii) लॉर्ड लैन्सडोन

इन के अतिरिक्त क्वीन विक्टोरिया के पौत्र (प्रिन्स ऑफ वेल्स का पुत्र) व क्वीन का दूसरा पुत्र ड्यूक ऑफ कैनॉट उदयपुर आए तो उन दरबारों में भी ग्रंथकर्ता मौज़ूद था। उस समय किसी रियासत में ब्रिटिश ताज़ के प्रतिनिधि वाइसरॉय का आगमन बड़ी महत्वपूर्ण घटना मानी जाती थी।

कृष्णसिंह ने प्रस्तुत इतिहास में उन सभी दरबारों का वृत्तांत बड़े विस्तार के साथ लिखा है और छोटी-से-छोटी घटना भी उस के मानस-पटल पर अंकित रहती थी। इस कारण तद्-विषयक वर्णन पढ़ते समय पाठक को ऐसा लगता है मानों वह कोई चल-चित्र देख रहा हो। ऐसा जीवन्त और आँखों देखा वर्णन अन्यत्र मिलना कठिन है।

(23) चित्र-प्राप्ति : स्त्रोत्र

प्रस्तुत ग्रंथ के तीनों भागों में जो चित्र दिए गये हैं वे सम-सामयिक हैं। इस सम्बंध में जिन महानुभावों ने चित्र उपलब्ध कराये उन का आभार स्वीकार किया जाता है:-

i श्री जसवंतसिंहजी सिंघवी (उदयपुर) आई.ए.एस. (से.नि.) भू.पू. फाइनेन्स सेक्रेट्री, राजस्थान। आपका पुस्तकालय प्राचीन पाण्डुलिपियों व इतिहास की दुर्लभ पुस्तकों का ख़जाना है। उन्होंने महाराणा सज्जनसिंह, महाराणा फतहसिंह का युवावस्था और प्रौढ़ावस्था के चित्र एवं महाराजा सवाई माधोसिंह, जयपुर और कविराजा श्यामलदास के चित्र उपलब्ध कराये।

ii डॉ. महेन्द्रसिंहजी नगर, डाइरेक्टर कल्चर, मेहरानगढ़ संग्रहालय, जोधपुर दुर्ग ने महाराजा जसवंतसिंह के युवावस्था का एवं वृद्धावस्था के चित्र और महाराज कर्नल सर प्रतापसिंह, मुसाहिब-आला राज मारवाड़ के चित्र भेजने की व्यवस्था की।

iii श्री पृथ्वीसिंहजी पालकिया, प्राइवेट सेक्रेट्री, पूर्व महाराव कोटा ने महाराव उम्मेदसिंह के राजगद्दी पर बैठने के समय का चित्र भेजा।

vi श्री डॉ. भवानीलालजी भारतीय (जोधपुर) ने तत्कालीन पुस्तकों में उपलब्ध स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र तथा स्वयम् द्वारा लिखित पुस्तक 'श्यामजी कृष्ण वर्मा' के मुख-पृष्ठ का चित्र दिया।

v श्री पृथ्वीराजजी रत्नू, सचिव, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर ने महाराजा गंगासिंह के राज्यारोहण के समय का चित्र उपलब्ध कराया। स्मरण रहे कि महाराजा गंगासिंह ग्यारह वर्ष की उम्र में राजगद्दी पर बैठे थे। अत: उसी समय का चित्र दिया गया है।

(24) संस्कृत श्लोकार्थ सम्बंधी सहयोग

प्रथम भाग के प्रारम्भ में 'चारणों की उत्पत्ति और वर्णन' एवं द्वितीय भाग के अंत में 'शेष-संग्रह' में 'क्षत्रियों की पूर्वापर दशा और कर्त्तव्याकर्त्तव्य' सम्बंधी विशद लेख में ग्रंथकर्ता ने वाल्मीकि रामायण, महाभारत, भर्तृहरि के नीतिशतक, हितोपदेश आदि प्राचीन ग्रंथों के श्लोकों को उद्धृत किया है। ग्रंथ के सम्पादन के समय इन श्लोकों का भावार्थ देना आवश्यक समझा गया क्योंकि भावार्थ के अभाव में साधारण पाठक द्वारा उन का अर्थ समझ पाना असम्भव है। अत: इस संदर्भ में डॉ. भंवरलालजी जोशी, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गवर्न्मेन्ट कॉलेज, अजमेर एवं डॉ. सहदेवजी जोशी, व्याख्याता, किशनगढ़ कॉलेज का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। अत: इन दोनों विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की जाती है।

(25) अनुपलब्ध एवं त्रुटित पृष्ठों का विवरण

प्रथम भाग में कुछ पृष्ठ मूल ग्रंथ में अनुपलब्ध हैं और कुछ त्रुटित हैं जिन का पृष्ठ-वार एवं विषय-वार विवरण परिशिष्ठ सं. 3 में दिया गया है :-

(1)	अनुपलब्ध पृष्ठ सं.	10
(2)	त्रुटित पृष्ठ सं.	24
	कुल	34

मूल ग्रंथ में से दस पृष्ठ कैसे व कब गायब हुए इस के लिए अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार ग्रंथ में 24 पृष्ठ जगह-जगह त्रुटित कैसे हो गए इस सम्बंध में भी सही अनुमान लगाना कठिन है। अत: ग्रंथ के सम्बंधित पृष्ठ संख्या पर इस आशय की आवश्यक टिप्पणी दे दी गई है।

(26) सुसंयोग

नियति का ऐसा नियम है कि जब किसी काम को मूर्त्त-रूप देना मंज़ूर हो तो उस काम को करने वाले माध्यम के सम्मुख अप्रत्याशित रूप से नये-नये रास्ते खुलते जाते हैं और बाधाएं हटती जाती हैं। ठीक ऐसा ही सुसंयोग प्रस्तुत इतिहास के प्रकाशन के सम्बंध में हुआ जिस का विवरण इस प्रकार है कि राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा एक पुस्तक 'क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंह व्यक्तित्व और कृतित्व'* दो भागों में प्रकाशित हुई थी। उस में लिखा था कि केसरीसिंह के पिता कृष्णसिंह द्वारा लिखा हुआ 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' अद्यावधि अप्रकाशित है। जब यह पुस्तक डॉ. कन्हैयालालजी राजपुरोहित व्याख्याता, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने पढ़ी तो उन्होंने मुझे सूचित किया कि उक्त इतिहास के प्रकाशन के लिए जोधपुर के एक पब्लिशर श्री पवन शर्मा तैयार हुए हैं। अत: मूल ग्रंथ को उन के पास पहुँचाने का प्रबन्ध किया जाय ताकि उसे श्री शर्मा को दे कर कम्प्यूटर टाइप का काम शुरू करायें। अस्तु, मैंने नगेन्द्रबालाजी को कोटा सूचित किया तो उन्होंने मूल ग्रंथ के तीनों

* **सम्पादक - डॉ. देवीलाल पालीवाल, डॉ. ब्रज मोहन जावलिया और फतहसिंह मानव**

रजिस्टरों (979 पृष्ठ) की फोटो-स्टेट तैयार करायी और अपने बड़े भ्राता राजेन्द्रसिंहजी के साथ डॉ. कन्हैयालालजी के पास जोधपुर गये और तीनों रजिस्टर डॉ. पवन शर्मा को सौंपे। श्री पवन शर्मा ने कम्प्यूटर टाइप का काम प्रारम्भ करवाया और काफी समय बाद क़रीब 800 पृष्ठ प्रूफ-रीडिंग के लिए मेरे पास ले कर आये।

कुछ समय बाद उन पृष्ठों का प्रूफ देखना शुरू किया तो एक-एक पंक्ति में प्रंद्रह-बीस गलतियाँ पायी गई कि जिस से किसी भी पृष्ठ में प्रूफ-संशोधन के लिए उतना स्थान भी शेष नहीं बचा था कि जहाँ संशोधन किया जा सके। अत: बड़ी समस्या हो गयी कि इस सारी सामग्री का क्या किया जाय? शुरू से ही गलती यह हुई कि कम्प्यूटर पर टाइप कराने के पूर्व मूल ग्रंथ की भाषा शुद्ध करके देना चाहिए था जैसा कि ग्रंथकर्ता ने 'ग्रंथ छापने के नियम और संकेत' शीर्षक के अंतर्गत स्पष्ट आदेश दिए हैं। लेकिन यह काम इतना बड़ा था कि किसी भी पब्लिशर के बल-बूते के बाहर की बात थी। अत: काफी सोच-विचार के बाद यह तय पाया कि उक्त सामग्री पर आगे कोई कार्य सम्भव नहीं है इसलिए सारा काम नये सिरे से शुरू किया जाय। अत: इतने बड़े ग्रंथ की शुद्ध नकल करने वाले की तलाश करायी तो निराशा हाथ लगी। वास्तव में इस समय इतने श्रम-साध्य काम को करने वाले व्यक्ति रहे ही नहीं।

इन सारी परिस्थितियों पर विचार करने के बाद अन्त में यह निश्चय किया कि मूल ग्रंथ की फोटो-स्टेट प्रतियों में ग्रंथकर्ता के दिशा-निर्देशों के अनुसार पहले पेन्सिल से भाषा शुद्ध की जाय। यह दायित्व प्रोफेसर हरिशंकरजी भार्गव, सह-सम्पादक को सौंपा गया। प्रो. भार्गव को उसी समय अपने स्वास्थ्य की जाँच के लिए पोस्ट ग्रेजुएट इन्सिटीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, चण्डीगढ़ जाना था और चिकित्सा के लिए काफी समय तक वहाँ रहना अनिवार्य था। अस्तु, वे अपने साथ प्रस्तुत इतिहास के तीनों भाग ले गये। वहाँ चिकित्सा के अनुसंधान के अंतर्गत कई प्रकार की जाँच होनी थी। अत: वे लम्बे समय तक कॉटेज-वार्ड में लेटे-लेटे इस इतिहास को पढ़ते रहते और पेन्सिल से दुरुस्ती का काम भी करते जाते। जब भी डॉक्टर 'राउंड' में आते वे 'पेशेन्ट' को इसी प्रकार पढ़ने व काम करने में तल्लीन पाते तो कौतूहल-वश प्रो. भार्गव से इसके बारे में पूछते तो उन्होंने इस इतिहास के सम्बंध में संक्षेप में बताया। डॉक्टर्स ने कहा कि जब यह प्रकाशित हो जाय तो वे भी इसे खरीदना चाहेंगे। इस बारे में प्रो. भार्गव के पास अब भी टेलीफोन-कॉल आते रहते हैं।

जब प्रो. भार्गव चण्डीगढ़ से लौटे तो वे ग्रंथ में वाँछित शुद्धियाँ कर के लाये और प्रथम भाग के कम्प्यूटर टाइप हेतु उन के सुपुत्र पंकज भार्गव को दे दिया गया। पंकज ने इसे कड़ी मेहनत व लगन के साथ टाइप किया व ग्रंथ को लम्बे अन्तराल (लगभग 3 वर्ष) तक कम्प्यूटर में सुरक्षित रखा जो कि एक जॉब वर्क करने वाले के लिए असम्भव बात है। यहाँ से प्रस्तुत इतिहास की 'कलम' से 'कम्प्यूटर' तक की लम्बी यात्रा प्रारम्भ होती है। यहाँ एक और सुसंयोग का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि प्रो. भार्गव को 'नोन होनकिन्स लिम्फोमा' के कारण रक्त में 'हीमोग्लोबिन' की अचनाक भारी कमी व ई.एस.आर. के लगातार बढ़ने के कारण चण्डीगढ़ जाना पड़ा था और चिकित्सा के परिणाम-स्वरूप वे ग्रंथ के तीनों भागों में भाषा की वाञ्छित शुद्धियाँ कर के पूर्ण रूप से स्वस्थ हो कर घर लौटे।

इसी शृंखला में सबसे बड़ी सुविधा यह मिली कि प्रो. भार्गव और मेरा निवास शास्त्रीनगर में आए हुए हैं और दोनों के दर्म्यान केवल सौ गज की दूरी है। इस कारण कम्प्यूटर से प्रिंट हुए प्रूफ को लाना और पुन: उसे शुद्धि के लिए देने में कोई असुविधा नहीं रही और समय की भी बचत हो गयी। कम्प्यूटर

पर पहली प्रति तो रजिस्टरों में पेन्सिल से की गयी शुद्धियों का प्रूफ-रीडिंग कर दूसरा प्रिन्ट निकाला गया। प्रूफ जाँचने के बाद आख़िरी शुद्ध प्रिन्ट निकाला गया। इस प्रकार पूरे ग्रंथ के तीन बार प्रिन्ट निकाले गये। इस सारे क्रम में कमी करने की कहीं गुञ्ज़ाइश नहीं थी। यह सब काम कितने श्रम और समय की अपेक्षा रखता है, इस का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस सबसे ऊपर कम्प्यूटर-प्रिन्टर श्री पंकज भार्गव एक अनुभवी, सुयोग्य, परिश्रमी और सरल स्वभाव वाला व्यक्ति है जिस के पास बैठ कर काम करने में संतोष अनुभव होता है। इस सम्बंध में मुझे घंटों कम्प्यूटर के पास बैठना पड़ा। प्रस्तुत काम को सम्पूर्ण करने के लिए श्री पंकज को अनेकानेक धन्यवाद हैं।

(27) प्रस्तावना : प्रो. सतीशचंद्र, Ex. Chairman, University Grants Commission.

सन् 2006 की शर्दियों में दो माह के लिए मेरे बड़े चिरंजीव अश्विनीकुमार के पास दिल्ली जाना हुआ। वह भारत सरकार में ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया के पद पर नियुक्त था। मेरे साथ प्रस्तुत इतिहास के तीनों भागों के रजिस्टरों की फोटो-स्टेट प्रतियाँ एवं प्रूफ-रीडिंग के लिए तीनों भाग थे। इस इतिहास की 'प्रस्तावना' लिखवाने की चिन्ता काफी दिन से थी कि किसी प्रसिद्ध इतिहासज्ञ से सम्पर्क किया जाए। राष्ट्रीय-स्तर के किसी इतिहासज्ञ के साथ मेरा परिचय नहीं था। केवल प्रो. सतीशचंद्रजी से स्वल्प मुलाक़ात अस्सी के दशक में हुई थी जब वे मेरे घर पर आये थे और इस इतिहास को बड़े ग़ौर से देखा था। उस समय वे यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन के चेयरमैन थे। उन्होंने इस इतिहास के प्रकाशन हेतु डॉ. राजेन्द्र जोशी रीडर इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय पदेन, डाइरेक्टर, प्रिजर्वेशन ऑफ मेन्यूस्क्रिपट्स को ग्रान्ट भी दिलाई थी।

एक दिन प्रो. सतीशचंद्रजी से दूरभाष पर सम्पर्क किया तो पता चला कि वे गुड़गाँव में निवास करते हैं और सम्प्रति, सोसाइटी फॉर इंडियन ओशन स्टडीज (Society for Indian Ocean Studies) के अवैतनिक अध्यक्ष हैं। उन का कार्यालय सेक्यूलर हाउस, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, 1-अरुणा आसफअली मार्ग, नई दिल्ली 67 पर आया हुआ है। नियत समय पर उन के कार्यालय में पहुँचा और अपने साथ सारी सामग्री ले कर गया था उसे उन के सामने खोल कर अब तक हुई कार्य की प्रगति से उन्हें अवगत कराया। साथ ही उन्हें प्रथम भाग की भूमिका एवं अन्य चालीस-पचास पृष्ठों की सामग्री भी सूचनार्थ दी जिसे देख कर वे बड़े खुश हुए और कहा ''बहुत बड़ा काम हो रहा है। आप तो मेरे से भी उम्र में बड़े हैं'' और पूछा ''मेरे से आप क्या चाहते हैं?'' मैंने कहा ''आप इस इतिहास की PREFACE लिखने की कृपा करें।'' उन्होंने तत्काल इस की सहमति दे दी और 6 दिसम्बर 2006 PREFACE (प्रस्तावना) लिख कर डाक से भेज दी। उन्होंने ग्रंथकर्ता के लिए लिखा ''I would like to assert that I would write only what I have heard or seen myself so that people have no doubt about the veracity of the account.'' और आगे लिखा ''that memoirs of this type are rare in our country.'' मैं प्रो. सतीशचन्द्रजी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।

(28) आभार-स्वीकार

प्रस्तुत इतिहास के सम्पादन में कई विद्वान् मित्रों की तरफ से प्रोत्साहन मिला। उन के प्रति आभार स्वीकार करना मात्र औपचारिकता ही नहीं अपितु मेरा पुनीत कर्तव्य भी है। सर्व प्रथम डॉ. कन्हैयालालजी राजपुरोहित, व्याख्याता, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर की लगन और निष्ठा के प्रति आभारी हूँ

कि जिस के फलस्वरूप पब्लिशर श्री पवनजी शर्मा, जोधपुर ने इस इतिहास के करीब 800 पृष्ठ कम्प्यूटर से प्रिन्ट किए। इस इतिहास के प्रकाशन का यह प्रथम सोपान था। मेरे अनन्य मित्र, स्वाभिमानी एवं सत्यनिष्ठ श्री ओंकारसिंहजी, आइ.ए.एस. (से.नि.) संस्थापक- सम्पादक 'राजपूत-एकता' (मासिक) सन् 1960 में इस इतिहास की नकल पढ़ने के साथ ही ग्रंथकर्ता के सत्य-लेखन की प्रतिबद्धता के प्रशंसक रहे हैं। राजपूताना के रईसों में एकता स्थापित करने की दिशा में उदयपुर महाराणा फतहसिंह द्वारा कृष्णसिंह के साथ गुप्त रूप से कर्नल सर प्रतापसिंह, मुसाहिब-आला राज मारवाड़ को भेजे गए सवाल और सर प्रतापसिंह के जवाब को उन्होंने 'राजपूत-एकता' में प्रकाशित किया। इस इतिहास के सम्पादन के सम्बंध में उन की बड़ी रुचि रही है और उत्साह-वर्द्धक शब्दों में मुझे कई बार कहते रहते हैं कि बहुत बड़ा काम हो रहा है।

डॉ. ब्रजमोहनजी जावलिया, मूलत: शाहपुरा निवासी हैं लेकिन सम्प्रति उदयपुर रहते हैं। उन्होंने सम्पादन के सम्बंध में महाराणा सज्जनसिंह के समय की पुस्तक से महाराणा सम्बंधी व स्वामी दयानन्द सरस्वती के उदयपुर-प्रवास की सामग्री की नकल प्रेषित की। श्रद्धेय जसवंतसिंहजी सिंघवी, आई.ए.एस. (से.नि.) भूतपूर्व फाइनेन्स सेक्रेट्री राजस्थान, माने हुए इतिहासविद् हैं। उन के द्वारा इस इतिहास के सम-सामयिक कई असली चित्र उपलब्ध कराये गये एवं वे इस कार्य की प्रगति के सम्बंध में बड़ी रुचि रखते हैं। इस इतिहास के सह-सम्पादक प्रो. हरिशंकरजी भार्गव भू.पू. इतिहास विभागाध्यक्ष, गवन्मेन्ट कॉलेज, अजमेर के साथ इस कार्य के सम्बंध में सबसे ज्यादा सम्पर्क रहा। वे प्रस्तुत इतिहास और इस के लेखक के प्रति प्रारम्भ से ही श्रद्धावान् हैं। प्रो. भार्गव से जब भी किसी विषय पर परामर्श करना हुआ तो उन्होंने सदा बड़ी तत्परता से तथ्यात्मक चर्चा की। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं 'राजस्थान पत्रिका' के पूर्व साहित्य सम्पादक डॉ. मनोहर प्रभाकर ने गत वर्ष 'दैनिक भास्कर' में एक सटीक लेख 'कथा सवा सदी पूर्व लिखे अप्रकाशित ग्रंथ की' लिखा। इस को पढ़ कर कई पाठकों ने दूरभाष पर मुझ से पूछताछ की कि यह इतिहास कब छपेगा, कहाँ मिलेगा आदि-आदि। डॉ. प्रभाकर ने बताया कि उन के पास उस दिन इतने फोन आये कि वे जबाव देते-देत थक गये। सहयोग की इस श्रृँखला में एक जाना-माना नाम है भाई डॉ. चन्द्र प्रकाशजी देवल का जिन की हिन्दी एवं राजस्थानी में, गद्य और पद्य में, समान गति है। उन के अनमोल सहयोग की सुरसरि सबसे ज्यादा प्रवाहित हुई जिस से मैं बहुत लाभान्वित हुआ। पुस्तक-सज्जा का कार्य डॉ. शैल चोयल भू.पू. प्रोफेसर, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर और उनके सुयोग्य शिष्य अमित द्वारा किया गया। ज्ञातव्य है कि डॉ. शैल के चित्रों की प्रदर्शनियाँ दिल्ली, बम्बई के अतिरिक्त इंग्लैंड व फ्रान्स में भी लगा करती हैं। मैं उक्त सभी महानुभावों के प्रति हृदय से आभारी हूँ।

इस ग्रंथ के द्वितीय सह-सम्पादक नगेन्द्रबालाजी ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह जी की प्रपौत्री हैं। वे किशोरावस्था में ही सन् 1942 के 'भारत-छोड़ो आन्दोलन' में कूद पड़ी थीं और स्वतंत्रता-सेनानी हैं। उन्होंने इस प्रकार अपने परिवार के बलिदान एवं त्याग की परम्परा को जीवित रखा। उन के सम्बंध में कुछ तथ्य देने समीचीन होंगे। देश में जब सर्व-प्रथम पंचायती-राज का श्री-गणेश हुआ तो वे कोटा जिला परिषद् की प्रमुख चुनी गयीं और उन्हें भारत की प्रथम महिला जिला-प्रमुख होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जब सन् 1961 में 'कोटा-बैराज' का उद्घाटन करने आये तो उन्होंने विशाल जन-सभा में कहा *''स्वतंत्र भारत में ऐसे जन-प्रतिनिधि होने चाहिए जैसे आप के जिला-प्रमुख हैं।''* नगेन्द्रबालाजी कांग्रेस पार्टी के टिकिट पर दो बार विधायक चुनी गयीं। वे राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड की छह साल तक अध्यक्ष रहीं और राजस्थान

महिला आयोग की सदस्य भी रहीं। कृष्णसिंह जी जैसे सुयोग्य पुरुष की सुयोग्य प्रपौत्री नगेन्द्रबालाजी ने इस इतिहास के प्रकाशन हेतु प्रयास करने में कोई कोर-क़सर नहीं छोड़ी।

यह ईश-कृपा का प्रतिफल है कि मुझे घर में ही राजलक्ष्मी देवी साधना के रूप में सम्पादन के कार्य में सतत सहयोग प्राप्त हुआ। वे ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह जी की बड़ी प्रपौत्री हैं और स्वयं विदुषी एवं कवियत्री हैं। मैं दो बार प्रूफ-रीडिंग पूर्ण कर ने के बाद तीसरी बार के प्रूफ-रीडिंग के लिए पृष्ठ उन्हें सौंपता तो वे बड़े मनोनिग्रह-पूर्वक उस काम को करतीं जिस के फलस्वरूप मेरे द्वारा जो कोई त्रुटियाँ रह जातीं वे उन्हें शुद्ध कर देतीं। इस से मुझे 'तीसरी आँख' (Third Eye) के लिए कहीं बाहर नहीं जाना पड़ा। काफी लम्बे समय तक चले इस कार्य के व्यय आदि के सम्बंध में उन्होंने कभी कोई व्यवधान नहीं आने दिया। अस्तु, साधनाजी के अमूल्य सहयोग का सही अंकन कर उसे स्वीकार नहीं किया जाये तो यह कृतघ्नता की परिभाषा में आयेगा।

(29) उपसंहार : भवभूति-कृत श्लोक का सम्बल

ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह ने द्वितीय भाग की समाप्ति के बाद और शेष-संग्रह के विस्तृत आलेख 'क्षत्रियों की पूर्वापर-दशा और कर्त्तव्याकर्त्तव्य' को प्रारम्भ करने के पूर्व भवभूति का निम्न श्लोक दिया है:-

ये नाम केचिदिह न प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्न।
उत्पत्स्यते मम तु कोऽपि समानधर्मा,
*कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥**

भावार्थ:- जो कोई इस (कृति) पर हमारी अवज्ञा को प्रकाशित करते हैं, अज्ञान या मात्सर्य से कल्पित कुछ अनिर्वाच्य रहस्य को प्राप्त करने वाले लोगों के लिए मेरी यह कृति नहीं है। मेरे समान-धर्म वाला भी कोई उत्पन्न होगा अथवा है, वही इस का सम्मान करेगा क्योंकि समय की तो कोई अवधि नहीं और पृथ्वी बड़ी है।

उक्त श्लोक के पहले कृष्णसिंह ने लिखा है कि ''इस भाग की पूर्ति में मैंने बड़े राजकीय गूढ़ विषय बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से उपार्जन करके मेरे सुख और शान्ति भंग करके इस भाग की समाप्ति की है जो यदि यह ग्रंथ छप कर प्रसिद्ध हुआ और इतिहास-विद्या के रसज्ञ विद्वानों को कुछ भी रोचक और लाभदायक हुआ तो मेरा परिश्रम सफल और इसके लिखने का समय कृत-कृत्य हो जाएगा। परन्तु मेरे इतने परिश्रम और सत्य लेखों पर भी विद्वान् लोग इस ग्रंथ को आदर नहीं देवें तो उनकी इच्छा। मुझ को इस (श्लोक) पर विश्वास है।''

प्राय: कोई इतिहासकार अपने ग्रंथ की समाप्ति के पश्चात् उपरोक्त प्रकार के भाव व्यक्त नहीं करता क्योंकि वह जो कुछ लिखता है वह पुरा-लेखागार में उपलब्ध रेकार्ड के आधार पर अथवा अन्य प्रामाणिक इतिहासों के आधार पर लिखता है इसलिए उसे यह चिन्ता करने की जरूरत ही नहीं पड़ती कि विद्वान् पाठक-वृंद उस के इतिहास का आदर करेंगे अथवा नहीं। इस के साथ ही उसे इस बात की आशंका भी नहीं रहती कि उस के द्वारा लिखा गया इतिहास प्रकाशित होगा अथवा नहीं क्योंकि यह काम प्रकाशकों का है। वह वर्तमान समय का ऐसा इतिहास नहीं लिख रहा है जिस के तथ्यों का रेकार्ड उस के पास उपलब्ध

---

* **भवभूति कृत 'मालतीमाधवं' प्रथम अंक, श्लोक सं.-6**

न हो। लेकिन कृष्णसिंह की समस्या इस से बिलकुल भिन्न थी। वह अपने समय का सत्य इतिहास लिख रहा था और इसीलिए उसे प्रस्तुत इतिहास लिखना प्रारम्भ करने के पूर्व इतिहास की प्रामाणिकता के सम्बंध में किसी प्रकार का संदेह नहीं रहे इसलिए यह शपथ लेनी पड़ी '*मैं कृष्णसिंह शपथपूर्वक नियम करता हूँ कि ईर्षा, द्वेष, असूया, लोभ, क्रोध, भय, प्रीति आदि कारणों से मिथ्या लेख कदापि नहीं लिखूंगा।*' एक अन्य ऐसे ही संदर्भ में भवभूति के उपरोक्त श्लोक की तृतीय व चतुर्थ पंक्तियों का उल्लेख कृष्णसिंह ने महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण विरचित 'वंशभास्कर की उदधि-मंथिनी टीका' की पूर्व पीठिका के पृ.सं. 1 पर किया है:-

उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधि र्विपुला च पृथ्वी॥

अर्थात्, ''मेरे समान-धर्म वाला भी कोई उत्पन्न होगा अथवा है क्योंकि समय की तो कोई अवधि नहीं और पृथ्वी बड़ी है।'' इस स्थल पर जिज्ञासा होती है कि ग्रंथकर्ता कृष्णसिंह ने द्वितीय भाग समाप्त करने के बाद भवभूति-कृत उपरोक्त श्लोक क्यों उद्धृत किया? यह प्रश्न मेरे सम्मुख उस समय उपस्थित हुआ जब तृतीय भाग समाप्त हो चुका था और उस के परिशिष्ट में दी जाने वाली कृष्णसिंह द्वारा महाकवि सूर्यमल्ल की अमर कृति 'वंशभास्कर की उदधि-मंथिनी टीका' की पूर्वपीठिका को पढ़ा। टीकाकार ने 'वंशभास्कर' को 'महाभारत' के समकक्ष ग्रंथ माना है और दोनों में पाँच हजार साल का अन्तराल है।

इस श्लोक में निहित अर्थ के अनुसार कृष्णसिंह की मान्यता है कि भविष्य में महाकवि सूर्यमल्ल जैसा कोई कवि भविष्य में उत्पन्न होगा क्योंकि काल की कोई सीमा नहीं है - वह अनन्त है। प्रस्तुत इतिहास भी कृष्णसिंह की एक असाधारण कोटि की अपूर्व कृति है। विचारणीय है कि पिछले सवा सौ वर्षों में कोई इतिहासकार अपने समय का सत्य इतिहास लिखने का साहस नहीं बटोर सका।

उक्त श्लोक के शाश्वत् भावों ने मुझे इस कार्य में परोक्ष रूप से कितना सम्बल प्रदान किया है इस को अभिव्यक्त करना कठिन है। मेरे लिए यह श्लोक सद्प्रेरणा और दृढ़-संकल्प का प्रतीक बन कर आया। उस की शक्ति से मैं बिना किसी प्रकार के प्रमाद अथवा अवसाद के नियमित रूप से यह काम करता रहा। इस श्लोक का सही भाव समझने के बाद ऐसा लगता था मानों कोई अदृश्य शक्ति किसी रस्सी से बाँध कर इस कार्य रूपी नौका को किनारे की ओर खींच रही है। मुझे यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं है कि इसी श्लोक के सम्बल द्वारा ही यह कार्य संपूर्ण हो सका।

गंगा-दशमी, 12 जून 2008 **फतहसिंह मानव**
'मातृ-कृपा'
13, शास्त्रीनगर, अजमेर

बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र
और
राजपूताना का अपूर्व इतिहास
(प्रथम भाग का सूची-पत्र)

क्रम. संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
1.	प्रस्तावना – प्रो. सतीषचंद्र, Ex. Chairman, University Grants Commission	(i)	(i)
2.	प्राक्कथन – श्रीमती नगेन्द्र बाला	(ii)	(iv)
3.	सम्पादकीय – फतह सिंह मानव	(v)	(xxxiv)
4.	भूमिका	17	23
5.	मंगलाचरण	24	25
6.	चारणों की उत्पत्ति और वर्णन	26	32
7.	सौदा बारहठों के गोत्र तथा ग्रंथकर्ता का घरू इतिहास	32	42
8.	ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र	42	63
9.	ग्रंथकर्ता के सिद्धांत और मंतव्या-मंतव्य	63	67
10.	चित्र, ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह युवावस्था में	64	64
11.	ग्रंथकर्ता के पढ़ने का हाल	67	68
12.	ग्रंथ की द्वितीय भूमिका और ग्रंथ लिखने के नियम	69	72
13.	राजपूताना की रियासतों का नम्बरवार नक़्शा जिसमें रियासतों की आमद, रक़बा, रईस की जाति, सलामी तोप आदि हालात	72	75
14.	राजपूताना की रियासतों का मानचित्र	74	74
15.	राजपूताना के रईसों के ख़िताब और उनका शब्दार्थ	76	79
16.	हिन्दुस्तान की बादशाहत का संक्षिप्त-वृत्तांत	79	82
17.	ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह के जीवन-चरित्र में राजपूताना की रियासतों का इतिहास शुरू होना और गुज़रे हुए रईसों का मुख़्तसर हालात	82	83
18.	शाहपुरा के राजाधिराज जगतसिंह का इतिहास	83	83
19.	शाहपुरा के राजाधिराज लछमणसिंह का इतिहास	83	84
20.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह का इतिहास	85	95
21.	उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंह का इतिहास	95	96
22.	उदयपुर के महाराणा शम्भुसिंह का इतिहास	96	97
23.	उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह का इतिहास	97	103
24.	चित्र, महाराणा सज्जनसिंह, उदयपुर	98	98
25.	देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत दलपतसिंह का इतिहास	103	103
26.	देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत उदयसिंह का इतिहास	103	104

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
27.	कोटा के महाराव रामसिंह द्वितीय का इतिहास	104	
28.	कोटा के महाराव शत्रुशाल द्वितीय का इतिहास *(एक पृष्ठ त्रुटित)*	105	
29.	टोंक के नवाब महुम्मद अली ख़ाँ का इतिहास	105	106
30.	टोंक के नवाब इब्राहिम अली का इतिहास *(एक पृष्ठ त्रुटित)*	106	
31.	बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह का इतिहास	106	
32.	बीकानेर के महाराजा डूँगरसिंह का इतिहास	106	
33.	जोधपुर के महाराजा तख़्तसिंह का इतिहास *(दो पृष्ठ अनुपलब्ध व तीन पृष्ठ पूर्ण रूप से त्रुटित)*	107	
34.	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का इतिहास	107	113
35.	चित्र, महाराजा जसवंतसिंह, जोधपुर	108	
36.	अलवर के महाराव राजा शिवदानसिंह का इतिहास *(तीन पृष्ठ त्रुटित)*	113	114
37.	अलवर के महाराव राजा मंगलसिंह का इतिहास *(एक पृष्ठ त्रुटित)*	114	116
38.	झालरापाटन के राजराणा पृथ्वीसिंह का इतिहास	116	117
39.	झालरापाटन के राजराणा जालिमसिंह का इतिहास	117	
40.	सिरोही के राव उम्मेदसिंह का इतिहास	117	118
41.	सिरोही के राव केसरीसिंह की गद्दीनशीनी	118	
42.	करौली के महाराजा अर्जुनपाल का इतिहास	118	
43.	किशनगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंह का इतिहास	119	
44.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह का इतिहास	120	
45.	जयपुर के महाराजा रामसिंह का इतिहास *(तीन पृष्ठ अनुपलब्ध व एक पृष्ठ त्रुटित)*	120	121
46.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह का इतिहास *(आधा पृष्ठ अनुपलब्ध)*	121	123
47.	भरतपुर के महाराजा जसवंतसिंह का इतिहास *(तीन पृष्ठ अनुपलब्ध व दो पृष्ठ त्रुटित)*	123	124
48.	बूंदी के महाराव राजा रामसिंह का इतिहास	124	127
49.	बूंदी के मिश्रण सूर्यमल्ल और ग्रंथ 'वंशभास्कर' का हाल	127	
50.	जैसलमेर के महारावल़ बैरीशाल का इतिहास	127	129
51.	डूँगरपुर के महारावल उदयसिंह का इतिहास	129	
52.	बाँसबहाला के महारावल़ लछमणसिंह का इतिहास	129	130
53.	धौलपुर के महाराजा निहालसिंह का इतिहास	130	
54.	स्वामी दयानंद सरस्वती का इतिहास	130	133
55.	चित्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती	131	

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
56.	इस ग्रंथ 'बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र' की पूर्वापर संगति और चार भाग किए जाने का नियम	133	133
57.	ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह और महाराणा सज्जनसिंह की दिनचर्या	133	136
58.	महाराणा सज्जनसिंह का नासूरों की बीमारी से अच्छा होना	136	137
59.	मेवाड़ के इन्तिज़ाम की तीन महीने की काररवाई का खुलासा	137	138
60.	रियासत इंदौर के इंतिज़ाम की खराबी और वलीअहद का खराब तरीका	138	139
61.	निज़ाम हैदराबाद का पुराना तारीका पलटना	139	
62.	मेवाड़ के सिक्कों की दुरुस्ती करने की तजवीज़	139	140
63.	महाराणा सज्जनसिंह के इख़्तियार बाबत शर्तें की थी उनकी मंसूख़ी	140	141
64.	ग्रंथकर्ता की माता आदि का तीर्थों जाना	141	
65.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह का उदयपुर जाना	141	142
66.	नाथद्वारा के गोस्वामी गोवर्धनलाल को इख़्तियार मिलना	142	143
67.	महाराणा के खिलाफ मेवाड़ के उमराव-सरदारों का गिरोह बनना	143	144
68.	ग्रंथकर्ता की नानी का देहान्त और नानेरा के वंश का हाल *(पृष्ठ अनुपलब्ध)*	144	145
69.	चित्तौड़ से उदयपुर तक रेल बनाई जाने की मंज़ूरी *(पृष्ठ अनुपलब्ध)*	145	
70.	महाराणा सज्जनसिंह की सख़्त बीमारी और बीमारी का सबब *(पृष्ठ अनुपलब्ध)*	145	
71.	महाराणा सज्जनसिंह का जोधपुर पधारना और इस सफ़र के हालात	145	150
72.	रियासत जामनगर में मुसलमान औरत से पैदा हुए बेटे को हक़दार बनाना	150	151
73.	उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह के देहान्त का हाल	152	154
74.	महाराणा सज्जनसिंह का अक़ीदा और उनके गुण-दोष, उनकी उत्तरक्रिया	154	157
75.	उदयपुर की गद्दी पर महाराणा फतहसिंह का बैठना और गद्दीनशीनी का हाल	157	161
76.	चित्र, महाराणा फतहसिंह, उदयपुर	158	
77.	हिदुस्तान के वाइसरॉय का तबादला और लार्ड रिपन व डफरिन का जीवन-चरित्र	161	162
78.	उदयपुर के उमराव व अह्लकारों की खुदग़रज़ी की कोशिशें	162	163
79.	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का मातमपुर्सी के लिए उदयपुर जाना	163	164
80.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह का उदयपुर जाना	164	165
81.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह का उदयपुर से महाराजा किशनगढ़ की वजह से जल्दी लौट जाना	165	166
82.	महाराणा सज्जनसिंह के बाद ग्रंथकर्ता की हालत रही जिसका खुलासा	166	167
83.	ग्रंथकर्ता को महाराणा फतहसिंह की हुज़ूरात से निकालने की कोशिश	167	169
84.	महाराणा फतहसिंह की गद्दीनशीनी के टीके आने का ज़िक्र	169	

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
85.	महाराणा फतहसिंह को रियासत का इख़्तियार मिलना	169	170
86.	अफ्रीका में पैग़म्बर महदी का पैदा होना और सूडान में फ़साद	170	171
87.	हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने का रूस वालों का इरादा और फ़ौजों की दोनों ओर से तैयारी रूस व अफ़ग़ानिस्तान की सरहद का तक़रार	171	172
88.	दुनिया की बड़ी विलायतों की (मील मुरब्बा) जमीन, आबादी, आमदनी व फ़ौज का नक़्शा	172	175
89.	युरोप की रियासतों की जंगी फ़ौज की तादाद और इंग्लिस्तान की फ़ौज की तफ़सील	175	176
90.	महाराणा सज्जनसिंह की मातमपुर्सी को जयपुर के महाराजा माधोसिंह का उदयपुर जाना	177	182
91.	चित्र, महाराजा सवाई माधोसिंह, जयपुर	178	
92.	रावलपिंडी में आमदरबार होकर अब्दुलरहमान ख़ाँ, अमीर काबुल का लॉर्ड डफरिन से मिलना और अमीर काबुल का जीवन-चरित्र *(दो पृष्ठ त्रुटित)*	182	183
93.	ग्रंथकर्ता का प्रतापगढ़ जाना, रियासत प्रतापगढ़ के इंतिज़ाम वग़ैरा का हाल	183	186
94.	ग्रंथकर्ता का ज़ाती हाल	186	
95.	ईडर के महाराजा केसरीसिंह का उदयपुर जाना व महाराणा से नारसाई *(डेढ़ पृष्ठ त्रुटित)*	186	
96.	शाहपुरा के राजाधिराज का मातमपुर्सी के लिए किशनगढ़ जाना *(एक पृष्ठ त्रुटित)*	186	
97.	इंग्लिस्तान की विज़ारत का तबादला *(एक पृष्ठ त्रुटित)*	186	
98.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह की दिनचर्या और उनके हालात *(तीन पृष्ठ त्रुटित)*	186	
99.	अलवर के महाराजा मंगलसिंह का आबू होकर जोधपुर जाना	187	
100.	अफ्रीका में पैदा हुए पैग़म्बर महदी का मरना	187	
101.	महाराणा फतहसिंह को उदयपुर की रियासत के पूरे इख़्तियार मिलना	188	189
102.	कश्मीर के महाराजा रणवीरसिंह का देहान्त और उनके हालात	189	190
103.	मद्रास के गवर्नर ग्राण्ड डफ का उदयपुर जाना	190	
104.	नवाब गवर्नर जनरल हिन्द लॉर्ड डफरिन का उदयपुर जाना	190	194
105	चित्र, पीछोला एवं उदयपुर के राजमहल	193	
106.	लॉर्ड डफरिन का इंदौर, जोधपुर, जयपुर और भरतपुर जाना	194	196
107.	लॉर्ड डफरिन का ग्वालियर जाना और ग्वालियर का किला महाराजा को देना	196	197
108.	बर्मा का मुल्क सरकार अँगरेजी के फ़तह होना	197	198

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
109.	रियासत नैपाल में बड़ी ख़ूरेज़ी का होना	198	200
110.	मेवाड़ का उमराव देवगढ़ के कुँवर जसवंतसिंह को ज़हर देकर मारना	200	202
111.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का हाल	202	203
112.	ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह की दिनचर्या और ज़ाती हाल	203	205
113.	एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना, कर्नल ब्रॉडफोर्ड का उदयपुर का दौरा	205	206
114.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह के खानगी झगड़े और औरतों की नाइत्तिफ़ाक़ी	206	
115.	बहुत बड़े फ़ैयाज़ मूल्जी करमसोत का मरना और उनका हाल	207	208
116.	सरकार अँगरेजी में हिन्दुस्तान के आमद-ख़र्च का हिसाब	208	
117.	हिन्दुस्तान की आबाद हिन्दू क़ौमों का हाल	208	209
118.	राजाधिराज शाहपुरा का रतलाम इंदौर होकर नया किला जाना *(पूर्ण पृष्ठ त्रुटित)*	209	
119.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह के छोटे पुत्र को नया-किला गोद रखने की राजाधिराज की कोशिश और उसमें नाकामयाबी होना*(पूर्ण पृष्ठ त्रुटित्)*	209	
120.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह का कोटा जाना	209	210
121.	रियासत भोपाल की अब्तरी और बेगम के बुरे चाल-चलन	210	211
122.	इंदौर रियासत का हाल और महाराजा तुकोजी राव होल्कर का देहान्त	211	213
123.	ग्वालियर की रियासत का हाल और महाराजा जियाजी राव सिन्धिया का देहान्त	213	216
124.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का सायरा जिले में शिकार जाना	216	
125.	शाहपुरा का उमराव नाथूसिंह ठाकुर खामोर का मरना और उनका हाल	216	218
126.	झाँसी की रियासत और झाँसी की बहादुर रानी लक्ष्मी बाई का हाल	218	219
127.	करौली का महाराजा अर्जुनपाल का देहान्त और भँवरपाल की गद्दीनशीनी	219	
128.	बम्बई के बड़े विद्वान् गट्टूलाल का हाल और उनकी अपूर्व स्मरणशक्ति	219	220
129.	इस ग्रंथकर्ता का निज-वृत्तांत	220	221
130.	जयपुर का उमराव उणियारा का राव राजा संग्रामसिंह का देहान्त	221	222
131.	झालरापाटन के इंतिज़ाम की खराबी और राजराणा जालिमसिंह की शिकायतें	222	223
132.	उदयपुर में मज़हबी लड़ाई और कांकड़ोली के छप्पन-भोग में महाराणा का जाना	223	
133.	उदयपुर के इंतिज़ाम में अब्तरी के चिह्न	223	225
134.	उदयपुर में महाराणा का शिकार के लिए दौरा और महाराणा के तीसरी पुत्री का जन्म	225	
135.	बेदला का राव तख़्तसिंह और मेहता पन्नालाल को ख़िताब मिलना	225	
136.	उदयपुर में चारण-पाठशाला का खोला जाना और महाराणा की सालगिरिह	226	

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
137.	एशिया और यूरोप में लड़ाई होने का भय; ब्रिटिश हुकूमत में बखेड़ा	227	229
138.	क्वीन विक्टोरिया, कैसर-ए-हिन्द की जुबिली का जल्सा	229	230
139.	क्वीन विक्टोरिया क़ैसर-ए-हिंद का जीवन-चरित्र	230	234
140.	उदयपुर के महाराणा का शिकार के लिए मगरा जिले में जाना	234	235
141.	प्रतापगढ़ के महारावत उदयसिंह के महाराजकुमार होना	235	
142.	राजपूताना के एजेंट गवर्नर जनरल ब्रॉडफोर्ड की जगह वाल्टर का मुक़र्रर होना	236	
143.	रामपुरा का नवाब क़ल्बअली ख़ाँ का इंतिक़ाल	236	237
144.	ग्रंथकर्ता का उदयपुर से शाहपुरा जाना और घरू-हाल	237	240
145.	शाहपुरा के इंतिज़ाम का हाल और चाकरी के बाबत जागीरदारों से मुक़द्दमा	240	243
146.	शाहपुरा के राजाधिराज की बदआदतें और उनकी शिकायत	243	245
147.	क्वीन विक्टोरिया, क़ैसर-ए-हिन्द की जुबिली का जल्सा	245	246
148.	खाने-पीने का परहेज़ छोड़ देने से हिन्दुस्तान के रईसों की बदनामी	246	
149.	बीकानेर के महाराजा डूँगरसिंह का देहान्त और गंगासिंह की गद्दीनशीनी	246	249
150.	चित्र, महाराजा गंगासिंह, बीकानेर	248	
151.	उदयपुर के इंतिज़ाम के लिए यूरोपियन शख़्स को नौकर रखने की राय और उसके नुक़्स	249	251
152.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह का उदयपुर जाना और चाकरी की बहस	251	253
153.	राजाधिराज को शाहपुरा की रुख़्सत मिलने पर बहस	253	255
154.	लखनऊ के माज़ूल बादशाह वाजिद अली का इंतिक़ाल	225	256
155.	झालरापाटन के राजाराणा जालिमसिंह का बेदख़्ल होकर रियासत पर अँगरेजी इंतिज़ाम का कायम होना	256	258
156.	जोधपुर के राज्य में कौन्सिल का कायम होना	258	
157.	अफ़ग़ानिस्तान की सरहद-बचाव के नाम से अँगरेजी सरकार का देशी रईसों से फ़ौज व रुपये लेना और सरकार की मंशा	258	261
158.	शाहपुरा के राजाधिराज की रानी खीचण का देहान्त और ग्रंथकर्ता का शाहपुरा जाना	261	262
159.	शाहपुरा का राजाधिराज नाहरसिंह का वसीयतनामा	262	
160.	शाहपुरा के जागीरदारों को चाकरी के मुक़द्दमे बाबत मीआद मिलना	263	
161.	ग्रंथकर्ता का घरू गाँव जाना और ज़ाती हाल	263	
162.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह के दूसरा कुँवर होने पर बहुत बड़ी फ़ैयाजी और महाराणा को जी.सी.एस.आई. का ख़िताब मिलना	263	265

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
163.	हिन्दुस्तान में नेशनल काँग्रेस का क़ायम होना और इसका हाल	265	266
164.	मध्य एशिया में रूस के साथ अफ़ग़ानिस्तान की सरहद-बरारी ख़त्म होना	266	267
165.	मेवाड़ इलाक़े के रूपाहेली में अँगरेजी फ़ौज की क़वाइद और शाहज़ादा कैनाट का आना	267	268
166.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह की माता का गुजरना और स्त्रियों की नाइत्तिफ़ाक़ी	269	
167.	अफ़ग़ान अयूब ख़ाँ का अँगरेजी क़ैद में आना	270	
168.	उदयपुर में कविराजा श्यामलदास और देलवाड़ा राज फतहसिंह को ख़िताब	270	271
169.	शलूम्बर के कुँवर तेजसिंह की मसूदा शादी होने पर अज़ीब इत्तिफ़ाक़	272	
170.	चित्र, कविराजा श्यामलदास दधिवाड़िया, उदयपुर	271	
171.	राजपूताना के क्षत्रियों के शादी-ग़मी का क़ायदा और 'त्याग' का प्रबन्ध	272	278
172.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह की बड़ी राजकुमारी के सम्बंध का फ़िक्र और दूसरी राजकुमारी का बीकानेर के महाराजा से सम्बन्ध होना	278	280
173.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का जहाजपुर की तरफ दौरा	280	
174.	ग्रंथकर्ता के घरू गाँव में मंदिर बनवाना और घरू हाल	280	281
175.	राजपूताना की नवीन तवारीख़ 'तोहफ़े राजस्थान' का रद्द किया जाना	281	283
176.	उदयपुर के हक़दार बागोर के महाराज सकतसिंह की स्त्री के हमल की तहक़ीक़ात और लड़के को जाली क़रार दिया जाना	283	285
177.	मेवाड़ के उमरावों के ठिकानों में महाराणा की पधरावणी	285	286
178.	शाहंशाह जर्मन विलियम पहला का देहान्त व जीवन-चरित्र	286	287
179.	शाहंशाह जर्मन फ्रैडरिक का देहान्त व जीवन-चरित्र	287	289
180.	जर्मन के शाहंशाह विलियम दूसरा की गद्दीनशीनी	289	
181.	शाहपुरा के राजाधिराज व जागीरदारों की नाइत्तिफ़ाक़ी और शाहपुरा अह्लकारों की तरक्क़ी	289	290
182.	इंदौर से उदयपुर के महाराणा के गद्दीनशीनी का टीका भेजने की तैयारी होकर अँगरेजी सरकार की तरफ से रोका जाना	290	291
183.	गवर्न्मेंट हिन्द की क़र्ज़दारी का हाल	291	
184.	चारणों का क़ौमी क़ायदा	291	293
185.	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के छोटे भाई जालिमसिंह को झाबुआ गोद रखा जाने में नाकामयाबी	293	294
186.	नाथद्वारा के गोस्वामी की बदलचलनी और महाराणा से तक़रार	294	296
187.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह को ख़िताब मिलना	296	

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
188.	बूंदी के उमराव कापरैण का ठिकाना ख़ालसा होना	296	298
189.	उदयपुर के महाराणा से उनके प्रधान की नाइत्तिफ़ाक़ी	298	299
190.	महाराणा और कर्नल माइल्स, रजिडेंट मेवाड़ की नाइत्तिफ़ाक़ी का शुरू होना	300	303
191.	सिक्किम की रियासत पर अँगरेजी फ़ौज की चढ़ाई	303	
192.	काला पहाड़ अगरोर की तरफ अँगरेजी फ़ौज की चढ़ाई	304	
193.	ग्रंथकर्ता की व ग्रंथकर्ता के पुत्र की सख़्त बीमारी व इलाज	304	305
194.	उदयपुर के महाराणा के तीसरे कुँवर का जन्म, देलवाड़ा राज को ख़िताब	303	306
195.	उदयपुर के महाराणा का दूसरे कुँवर का देहान्त	306	
196.	मेवाड़ के उमराव-सरदारों की नालायकी और उनके दुर्व्यसन, कर्नल वाल्टर का दौरा	306	308
197.	मेवाड़ के सरदारों में द्वादशाह पर नुख़्ता का रिवाज बंद होकर ब्राह्मण-भोजन का जारी होना	308	
198.	शाहपुरा में बलांड के ठाकुर का मरना और बलांड वग़ैरा ग्राम ज़ब्त होना	309	
199.	शाहपुरा के जागीरदारों को चाकरी बाबत हुक्म और अरवड़ का ज़ब्त होना *(पृष्ठ त्रुटित)*	309	
200.	प्रतापगढ़ के महारावत के कुँवर का जन्म और इंतिज़ाम का तबादला *(पृष्ठ त्रुटित)*	309	
201.	लॉर्ड डफरिन, गवर्नर जनरल हिंद का मुस्तौफ़ी होना और उनकी राजनीति *(पृष्ठ त्रुटित)*	309	
202.	लॉर्ड लेन्सडोन का गवर्नर जनरल हिंद मुक़र्रर होना	309	
203.	भोपाल की रियासत में विज़ारत का तबादला	310	
204.	अलवर के महाराव राजा मंगलसिंह और सिरोही का राव केसरीसिंह को अँगरेजी सरकार से पुस्तैनी ख़िताब मिलना	310	311
205.	हिन्दुस्तान की नेशनल कांग्रेस	311	
206.	उदयपुर के महाराणा का शिकार के लिए दौरा वग़ैरा हाल	311	312
207.	मेवाड़ मारवाड़ की सरहद-बरारी होकर आखिरी तजवीज़ होना	312	313
208.	मेवाड़ और प्रतापगढ़ की सरहद-बरारी का जारी होना	313	
209.	उदयपुर में हाथियों की फाग में हाथी का हमला	313	314
210.	सरहदी झगड़ों में ख़ूरेज़ी होकर मेवाड़ के उमरावों को सज़ा	314	315
211.	बम्बई के गवर्नर लॉर्ड रे का जोधपुर जाना	315	
212.	बम्बई के गवर्नर लार्ड रे का उदयपुर जाना	316	317
213.	हिन्दुस्तान के कमाण्डर-इन्-चीफ सर रावर्टस फ्रैड्रिक का उदयपुर जाना	317	318

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
214.	शाहपुरा के जागीरदारों से चाकरी बाबत राजाधिराज का झगड़ा	318	
215.	अमीर काबुल को मार डालने की कोशिश	319	
216.	अफ़ग़ानिस्तान की सरहद-बचाव के नाम से रईसों से फ़ौज लेना	319	321
217.	ऑस्ट्रिया का शाहज़ादा रुडल्फ का मारा जाना	321	
218.	एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना का दौरा और शादी-ग़मी के कायदे बाबत 'वाल्टर-कृत राजपूत हितकारणी सभा' की काररवाई	321	324
219.	जम्मू का महाराजा प्रतापसिंह का रियासती इख़्तियारात से खारिज होना	324	327
220.	ग्रंथकर्ता का स्वकीय वृत्तांत	327	328
221.	महाराणा की सवारी में हाथी के भय से भग्गी पड़ना	328	329
222.	ग्रंथ का शेष-संग्रह और ग्रंथकर्ता के ज़ेवर का नक़्शा	329	333
223.	ग्रंथकर्ता की जीविका और आमद-ख़र्च का हाल	333	
224.	ग्रंथकर्ता के गाँव में माफ़ी और ऊकर जमीन का हाल	333	334
225.	ग्रंथकर्ता का गाँव में हासिल क्या लगता है जिसकी तफ़सील	334	336
226.	ग्रंथकर्ता का गाँव में आबपाशी, लागत, मापा, चराई, चँवरी, बैठ-बेगार, नज़राना वग़ैरा लागतों का बयान	336	339
227.	ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह का वसीयतनामा	339	343
228.	ग्रंथकर्ता की संतान के लिए चंद नसीहते और प्रथम भाग की समाप्ति	334	349

क्रम संख्या	परिशिष्ट	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
1.	मूल ग्रंथ की भूमिका के प्रथम एवं अंतिम पृष्ठ की कम्प्यूटर फोटो-प्रति	353	356
2.	ग्रंथकर्ता का बीस पीढ़ी का वंश-वृक्ष	357	358
3.	मूल ग्रंथ में अनुपलब्ध एवं त्रुटित पृष्ठों का विवरण	359	360
4.	आलेख, ''कृष्णसिंह बारहठ: एक इतिहासकार,'' डॉ. शकुन्तला कोठारी, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर	361	366
5.	"Krishna Singh Barhat (1850-1907 A.D.) A Historian with Conscience" by Dr. T.K. Mathur विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर	367	373

चित्र-सूची

क्र.सं.	नाम	चित्र पृ. सं.
1.	ग्रंथकर्ता बारहठ कृष्णसिंह युवास्था में	64
2.	राजपूताना की रियासतों का मानचित्र	74
3.	महाराणा सज्जनसिंह, उदयपुर	98
4.	महाराजा जसवंतसिंह, जोधपुर	108
5.	स्वामी दयानन्द सरस्वती	131
6.	महाराणा फतहसिंह, उदयपुर	158
7.	महाराजा माधोसिंह, जयपुर	178
8.	पीछोला झील एवं उदयपुर के राजमहल	193
9.	महाराजा गंगासिंह, बीकानेर	248
10.	कविराजा श्यामलदास दधिवाड़िया	271

बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र
और
राजपूताना का अपूर्व इतिहास

द्वितीय भाग का सूची-पत्र (विक्रमी संवत् 1946 से प्रारम्भ)

क्र.सं.	विषयाः	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
(i)	प्रस्तावना – प्रो. सतीष चंद्र, Ex. Chairman, University Grants Commission	i	—
(ii)	प्राक्कथन – नगेन्द्र बाला	ii	iv
(iii)	सम्पादकीय – फतहसिंह मानव	v	xiv
	(विक्रमी सम्वत् 1946 का सूची-पत्र)		
4.	भूमिका	17	20
5.	मंगलाचरण	21	
6.	क्वीन विक्टोरिया के पुत्र ड्यूक ऑफ कैनॉट का राजपूताना की रियासतों में दौरा और उदयपुर में 'फतह-सागर' की बुनियाद रखना	22	25
7.	बूंदी के महाराव राजा रामसिंह का देहान्त	25	26
8.	बूंदी में मातमपुर्सी के लिए रईसों का जाना और रईसों में मातमपुर्सी का रिवाज	26	27
9.	ग्रंथकर्ता के गाँव में विष्णु के मन्दिर की प्रतिष्ठा और शाहपुरा राजाधिराज का मेहमान होना	27	29
10.	ग्रंथकर्ता के गाँव की तरक़्क़ी वग़ैरा घरू हालात	29	31
11.	उदयपुर में इंतिज़ाम में कुछ तबादला और महाराणा का दौरा	31	32
12.	कोटा के महाराव को ज़हर देने की कोशिश और महाराव के कुँवर गोद रखना व महाराव शत्रुशाल का देहान्त	33	35
13.	बाँसबहला की रियासत से असिस्टेन्टी के ख़र्च में दस हजार रुपये माफ़ होना	35	36
14.	नाथद्वारा के गोस्वामी गोवर्द्धनलाल का बम्बई में क़ैद होना	36	37
15.	शाहपुरा के राजाधिराज को जागीरदारों की चाकरी के मुक़द्दमे में नाउम्मीदी की सूरत	37	40
16.	शाहपुरा के ठिकाने में राजकुमारों व भाइयों के बरताव का नया क़ायदा	40	42
17.	शाहपुरा के छोटे राजकुमार को जागीर का पट्टा	42	43
18.	शाहपुरा के राजकुमारों को अजमेर मेयो कॉलेज में भेजना	43	
19.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह का धाँगधरा में तीसरा विवाह	43	45
20.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह की गद्दीनशीनी और बल्वा होने की सूरत व महाराव की उदयपुर सगाई होना	45	51

21.	चित्र, महाराव उम्मेदसिंह, कोटा	47	
22.	पोलिटिकल एजेन्टों का तबादला	52	
23.	झालावाड़ के राजराणा जालिमसिंह का देशाटन	52	53
24.	ईरान के बादशाह नसीरुद्दौला का यूरोप जाना	53	
25.	बड़ौदा में स्टाम्प के क़ायदे पर हुल्लड़ होना और महाराजा के विलायत जाने पर विचार	54	
26.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह की उदारता	54	55
27.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह के जन्म से लेकर गद्दीनशीनी तक का इतिहास	55	60
28.	चित्र, महाराजा सवाई माधोसिंह, जयपुर	59	
29.	ग्रंथकर्ता के गुरु सीताराम का देहान्त और ग्रंथकर्ता की माता का हाथ टूटना	60	
30.	हिन्दुस्तान की सरहद-बचाव के नाम से रईसों से गवर्न्मेंट का फ़ौज लेना और रईसों के दिलों पर बुरा असर	61	63
31.	उदयपुर में एक अँगरेज का पशुवत् व्यवहार	63	64
32.	नरसिंहगढ़ के महाराजा प्रतापसिंह की जोधपुर में शादी	64	65
33.	जोधपुर के इंतिज़ाम का ज़िक्र और मारवाड़ के सरदारों से जंगलात के लिए गाँव बदलाने पर तक़रार	65	67
34.	कोटा में पोलिटिकल एजेंट और महारानियों से तक़रार	67	69
35.	उदयपुर में बागोर के ठिकाना बाबत मुक़द्दमा होकर ख़ालसा होना	69	71
36.	उदयपुर की इंतिज़ामी हालत	72	
37.	पोलिटिकल एजेन्ट्स का तबादला	72	73
38.	उदयपुर के महाराणा का दौरा और वाल्टर से मुलाक़ात	73	74
39.	उदयपुर के उमराव देलवाड़ा व लावा का ठाकुर का वसीयतनामा	74	
40.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह से महाराणा की नाराज़गी	75	
41.	शाहपुरा के राजाधिराज और जागीरदारों के बीच में चाकरी का मुक़द्दमा खड़ा होकर उसका फ़ैसला होना	75	78
42.	हिन्दुस्तान की नेशनल कांग्रेस का पाँचवा जल्सा	78	79
43.	जैसलमेर व जोधपुर की सरहद-बरारी और जैसलमेर के कामदार व फ़ौजदार की शिकायत	79	80
44.	बूंदी के महाराव राजा रघुवीरसिंह को गद्दीनशीनी का ख़िल्अत् मिलना व पुत्र का जन्म होना	80	81
45.	बाँसबहाला के महारावल लछमनसिंह की बदआदतें	81	84
46.	भोपाल की बेगम के पति सादिक हुसैन का देहान्त	84	
47.	डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह का लोभ	84	85

48.	देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत उदयसिंह का देहान्त और रघुनाथसिंह की गद्दीनशीनी	85	88
49.	शाहपुरा के राजाधिराज की बुआ आनंद कँवर का देहान्त	88	89
50.	उदयपुर के पोलिटिकल एजेंट की बदली और महाराणा का दौरा	89	90
51.	खातोली के महाराज भोपालसिंह का उदयपुर में देहान्त	90	
52.	एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना के ओहदे से कर्नल वाल्टर का जाना और कर्नल ट्रेवर का मुक़र्रर होना	90	91
53.	क्वीन विक्टोरिया के पोते प्रिंस अल्बर्ट विक्टर का हिन्दुस्तान में आना और राजपूताना का दौरा	91	100
54.	चित्र, पीछोला और सिटी पैलेस, उदयपुर	97	
55.	क्वीन विक्टोरिया के तीसरे पुत्र ड्यूक ऑफ कैनॉट का हिन्दुस्तान से	101	
56.	जाना और संवत् 1946 के हाल का ख़ातिमा		
	(विक्रमी 1947 का प्रारम्भ)		
57.	उदयपुर में इंतिज़ामी तबादला और महाराणा का दौरा	102	103
58.	उदयपुर के महाराणा का दौरा और तीसरे राजकुमार का देहान्त	103	104
59.	जयपुर के महाराजा के नाना की मृत्यु और वज़ीर के पुत्र का पिटना	105	
60.	जयपुर के उमराव ईसरदा के ठाकुर का मरना व ईसरदा ख़ालसा होना	106	
61.	शाहपुरा के राजकुमारों का यज्ञोपवीत और रामद्वारा के महंत हिम्मतराम का देहान्त	106	
62.	नरसिंहगढ़ के महाराजा प्रतापसिंह का देहान्त	107	
63.	टोंक के नवाब इब्राहिम अली खाँ व कुचामण के ठाकुर को ख़िताब	107	
64.	कोटा के एजेंट की बदली	107	
65.	ग्रंथकर्ता का उदयपुर से शाहपुरा जाना और दौरे का हाल	107	109
66.	फतहगढ़ का राजा की शादी और किशनगढ़ के महाराजा का फतहगढ़ में मेह्मान होना	109	110
67.	अलवर के महाराजा मंगलसिंह का जोधपुर जाना	110	
68.	जोधपुर के मुसाहिब-आला महाराज प्रतापसिंह का परिहास	111	
69.	नरसिंहगढ़ के महाराजा महताबसिंह की गद्दीनशीनी	111	
79.	जैसलमेर का कामदार नथमल का मौक़ूफ़ होना	111	
71.	काशी के प्रसिद्ध ज्योतिषी बापूदेव का देहान्त	112	
72.	राजपूताना के पोलिटिकल एजेंटों की बेईमानी	112	113
73.	टिहरी की रियासत का हाल	113	114
74.	उदयपुर का इंतिज़ामी व रियासती हाल	114	115

75.	उदयपुर के महाराणा की चौथी राजकुमारी की किशनगढ़ के राजकुमार के साथ सगाई होना	116	
76.	शाहपुरा के कामदार बाबू रामजीवन का निकाला जाना	116	120
77.	बीकानेर की कौंसिल से कविराजा भैरवदान की मौक़ूफ़ी	120	121
78.	इंदौर का महाराजा सियाजी राव के छोटे भाई की मृत्यु और सियाजी का ज़ुल्म	121	122
79.	देवलिया प्रतापगढ़ के राजकुमार का देहान्त और महारावत को इख़्तियार मिलना	122	
80.	काबुल के अमीर का दो वर्ष बाद काबुल में पीछा आना	122	123
81.	खम्भात में बहुत बड़ी ख़ूरेज़ी और नवाब का बेइख़्तियार होना	123	125
82.	गवर्नर जनरल हिन्द लार्ड लैन्सडोन के दौरे का प्रोग्राम	125	126
83.	लॉर्ड लैन्सडोन का पटियाला जाना	127	
84.	लॉर्ड लैन्सडोन का अलवर जाना	127	128
85.	लॉर्ड लैन्सडोन का अजमेर में आम-दरबार करना	128	129
86.	लॉर्ड लैन्सडोन का उदयपुर जाना	129	132
87.	लॉर्ड लैन्सडोन का जोधपुर जाना	132	134
88.	लॉर्ड लैन्सडोन का आबू पर जाना	134	
89.	लॉर्ड लैन्सडोन का जयपुर जाना	136	137
90.	लॉर्ड लैन्सडोन का दिल्ली, आगरा व भरतपुर जाना	137	
91.	राजपूताना के एजेन्टों का तबादला	137	
92.	जोधपुर का उमराव कुचामण के ठाकुर को अँगरेजी सरकार से ख़िताब मिलना व कुचामण के उम्दा क़ायदे	137	139
93.	इंदौर के महाराजा सियाजी राव की रानी का देहान्त और रेजिडेंट हैन्री का रिश्वत लेकर रिटायर होना	139	140
94.	किशनगढ़ में छप्पन-भोग का उत्सव	140	
95.	बीकानेर में रेलवे स्टेशन की बुनियाद डालना	140	141
96.	मद्रास के गवर्नर लॉर्ड कैन्बरा का ज़िनाकारी के सबब इस्तिफा देकर ओहदा छोड़ना	141	142
97.	नेशनल कांग्रेस का छटा जल्सा और परोपकारिण सभा	142	
98.	उदयपुर के महाराणा का दौरा और जोधपुर तोहफ़ा भेजना	142	
99.	उदयपुर में बागोर ख़ालसा करने के मुक़द्दमे का ख़ातिमा	143	
100.	उदयपुर की रेजिडेंसी पर कर्नल माइल्स का आना और कर्नल मेवर का हुक्मन रिटायर होना	143	144
101.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का घोड़े से गिर कर जान-जोखिम से बचना	144	148
102.	चित्र, महाराणा फतहसिंह उदयपुर	145	

103.	उदयपुर के महाराणा व मेहता पन्नालाल की नाइत्तिफ़ाक़ी से यूरोपियन मि. विंगेट का नौकर होना	148	149
104.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह के गुण व दोष	149	152
105.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का देशाटन व कोटा जाना	152	
106.	बूंदी के महाराव राजा रघुवीरसिंह की जोधपुर में दूसरी शादी	153	
107.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह के नाना कल्याणसिंह का देहान्त	153	155
108.	ग्वालियर के महाराजा माधवराव सिंधिया की शादी और रियासत की व ग़रीबों के जीवों की बरबादी	154	155
109.	हिन्दुस्तान में मर्दुमशुमारी होना	155	
110.	कर्नल ट्रेवर का शाहपुरा जाना और भोलानाथ का कामदार मुक़र्रर होना वग़ैरा हाल	155	157
111.	जैसलमेर के महारावल् बैरीशाल का देहान्त और शालिभाण की गद्दीनशीनी	157	158
112.	उदयपुर के कविराजा श्यामलदास की पुत्री का विवाह	158	159
113.	ग्रंथकर्ता का मय ज़नाना के शाहपुरा व घरू गाँव जाना	159	
114.	रूस के वलीअहद जारविच नीकोलस का हिन्दुस्तान में आना	159	162
115.	विक्रमी संवत् 1947 समाप्ति	162	
	(विक्रमी संवत् 1948 के हाल का सूची-पत्र)		
116.	जोधपुर के उमराव कुचामण के ठाकुर केसरीसिंह का देहान्त	162	
117.	शाहपुरा के राजाधिराज का उदयपुर जाना व उनकी दादी माँ का देहान्त	163	
118.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह का उदयपुर जाना	163	164
119.	मसूदा के ठाकुर बहादुरसिंह का उदयपुर जाना	164	
120.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह का वृंदावन जाना	164	
121.	कोटा के महाराव का कश्मीर जाना और उदयपुर का भाणेज, छोटा हो तो उसकी जीविका मुक़र्रर होना	164	165
122.	बूंदी के महाराव राजा रघुवीरसिंह की झाबुवा में शादी व बदचलनी	165	166
123.	झालावाड़ के राजराणा जालिमसिंह को इख़्तियार मिलने की काररवाई होकर उसका बिगाड़ा जाना	166	166
124.	क्वीन विक्टोरिया, क़ैसर-ए-हिन्द की सालगिरिह पर ख़िताब	167	168
125.	ग्रंथकर्ता का शाहपुरा से उदयपुर जाना	168	
126.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह की घबराहट और मेवाड़ के रजिडेंट माइल्स और मि. विंगेट से सख़्त नाइत्तिफ़ाक़ी	169	174
127.	ग्रंथकर्ता का जोधपुर जाना और जोधपुर के महाराजकुमार से महाराणा की राजकुमारी का सम्बन्ध होना	174	175

128.	उदयपुर के महाराणा की तरफ से राजपूताना के रईसों में एकता कराने की कोशिश और महाराज प्रतापसिंह के सवाल-जवाब	175	184
129.	चित्र, महाराज कर्नल सर प्रतापसिंह, जोधपुर	177	
130.	ग्रंथकर्ता को पाँव में सोना पहनने की इज़्ज़त मिलना	184	186
131.	जोधपुर में निर्जलता मिटा कर सजलता करना	186	188
132.	चित्र, महाराजा जसवंतसिंह, जोधपुर	187	
133.	जोधुपर में नये मकानात का बनवाना	188	189
134.	जोधपुर के इंतिज़ाम का तरीका व हाल	189	191
135.	जोधपुर के जागीरदारों का क़ायदा	191	192
136.	जोधपुर को अँगरेजी सरकार की तरफ से मालानी का परगना पीछा मिलना	192	193
137.	बड़ौदा के महाराजा सियाजी राव का जोधपुर जाना	193	196
138.	कोटा का महाराव उम्मेदसिंह का उदयपुर जाना	196	197
139.	शाहपुरा के राजाधिराज की रानी झाली का देहान्त	197	198
140.	ग्रंथकर्ता का उदयपुर से शाहपुरा जाना	198	
141.	राजपूताना में सख़्त क़हत्साली और अजमेरा में लूट	198	199
142.	मणिपुर में अँगरेजी अफसरों का क़त्ल होना और मणिपुर का अँगरेजों के फ़तह होना	199	202
143.	पामीर का मुल्क रूसियों के क़ब्ज़े होना	202	203
144.	लॉर्ड लैन्सडोन का रियासतों में दौरा और गवर्न्मेंट की राजनीति	203	205
145.	उदयपुर का उमराव देलवाड़ा के राज को इख़्तियार मिलना	205	206
146.	जोधपुर में हैजा होने से महाराजा का देसूरी जाना	206	207
147.	ग्रंथकर्ता का शाहपुरा से अजमेर, जयपुर होकर उदयपुर जाना	207	
148.	जयपुर में 'रामनाथ-का-समय', नाम का गुप्त ग्रंथ बनना	208	
149.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह की गाँव खामोर में शादी व जयपुर के इंतिज़ाम का हाल	208	
150.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह का इलाज के लिए दिल्ली जाना और महाराजा को ख़िताब मिलना	208	211
151.	बीकानेर में रेल का जारी होना	211	
152.	शाहपुरा के राजाधिराज का जयपुर के महाराजा से मिलना	212	213
153.	शाहज़ादा अल्बर्ट विक्टर का देहान्त	213	214
154.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह का पाँचवाँ विवाह	214	
155.	जयपुर का उमराव डिग्गी के ठाकुर प्रतापसिंह का देहान्त	215	
156.	देवलिया प्रतापगढ़ के महारावत रघुनाथसिंह की शादी	215	

157.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का नाहर-मगरा जाना और महाराणा को जोधपुर बुलाने का निमंत्रण	215	216
158.	ग्रंथकर्ता की गाँव गीहड़िया की पाँती का झगड़ा	216	217
159.	जोधपुर के महाराजकुमार सरदारसिंह की शादी का राजसूर्य-यज्ञ के माफिक जल्सा	217	223
160.	हिन्दुस्तान की मर्दुमशुमारी का नतीज़ा	223	224
161.	संवत् 1948 के हाल की समाप्ति	224	
	(विक्रमी संवत् 1949 के हाल का सूची-पत्र)		
162.	ग्रंथकर्ता का जोधपुर जाना व घरू मुक़द्दमे का हाल	224	
163.	कर्नल ट्रेवर का उदयपुर का दौरा और महाराणा पर दबाव	225	227
164.	उदयपुर का उमराव बेदला का राव तख़्तसिंह का देहान्त	227	228
165.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह की पुत्री का देहान्त	228	
166.	शाहपुरा की इन्तिज़ामी हालत का तबादला	228	229
167.	अलवर के महाराजा मंगलसिंह का देहान्त और जयसिंह की गद्दीनशीनी	229	230
168.	अलवर के कामदार कुंजबिहारी लाल का क़त्ल होना	230	
169.	किशनगढ़ के महाराजा को ख़िताब देने का दरबार	231	
170.	क्वीन विक्टोरिया, क़ैसर हिंद की सालगिरिह पर रियासतों में ख़िताब	231	
171.	कोटा का उमराव कोयला का आप प्रथ्वीसिंह का देहान्त	231	
172.	भिणाय का राजा मंगलसिंह का देहान्त	232	
173.	जोधपुर में नवाब फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ का देहान्त	232	
174.	बड़ौदा के महाराजा सियाजी राव का विलायत जाना	232	
175.	शाहपुरा के राजाधिराज की जोधपुर के महाराजा से आबू पर मुलाकात होना	232	234
176.	उदयपुर के महाराणा का रेजिडेंट की आफ़त से बचने के लिए जोधपुर जाना और नाकामयाब होना	234	239
177.	उदयपुर का उमराव सलूंबर के मृत्यु की मृत्यु	239	
178.	इंग्लैण्ड की पार्लामेंट में होमरूल होना और एक पारसी का मेम्बर बनना	239	
179.	अफ़ग़ानिस्तान के अमीर पर शुब्हा होकर अँगरेजी सरकार की तरफ से कमीशन भेजने की तजवीज़	240	
180.	ग्रंथकर्ता की गीहड़िया की पाँती का फैसला होकर रोका जाना	240	241
181.	राजपूताना के रईस अजमेर स्टेशन पर रेल में बैठे निकल जाएं उनकी पेशवाई का बंद होना	242	
182.	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का बीकानेर जाना	242	243
183.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का जोधपुर जाना	243	244

184.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का उदयपुर में विवाह होना और रियासत का कुछ इख़्तियार मिलना	244	247
185.	झालरापाटन का राजराणा जालिमसिंह को कुछ इख़्तियार देना	247	
186.	बूंदी के महाराव राजा रघुवीरसिंह का जोधपुर जाना	247	
187.	ईडर के महाराजा केसरीसिंह का उदयपुर जाना	247	248
188.	अलवर के दीवान कुँजबिहारी लाल के क़त्ल के मुकद्दमे का ख़ातिमा होकर मुज़रिमों को सज़ा होना	248	249
189.	शाहपुरा के राजाधिराज का जयपुर जाना और महाराजा की मुलाक़ात में नाकामयाबी	249	251
190.	ग्रंथकर्ता का उदयपुर से निकाला जाना	251	255
191.	उदयपुर के महाराणा के इख़्तियारात छीनने बाबत रेजिडेंट की रिपोर्ट और अपने बचाव के लिए महाराणा के उपाय	255	265
192.	चित्र, श्यामजी कृष्ण वर्मा, बार-एट-लॉ	263	
193.	जोधपुर का महाराजा जसवंतसिंह का अलवर व जयपुर जाना	265	266
194.	रतलाम के महाराजा रणजीतसिंह का देहान्त	266	267
195.	संवत् 1949 के हाल की समाप्ति	267	
	(विक्रमी संवत् 1950 के हाल का सूची-पत्र)		
196.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह की छोटा उदयपुर में शादी	267	268
197.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह की रानी राठौड़ का देहान्त	268	
198.	कोटा की कौन्सिल के मेम्बर पंडित शिवशंकर का देहान्त	268	
199.	क्वीन विक्टोरिया क़ैसर-ए-हिंद की सालगिरिह पर ख़िताब	269	
200.	जोधपुर के मुसाहिब-आला महाराज प्रतापसिंह का शेखावाटी में जाना	269	
201.	उदयपुर के रेजिडेंट कर्नल माइल्स का छुट्टी पर जाना और माइल्स की राय का पलटा जाना	269	271
202.	ग्रंथकर्ता का हमेशा के लिए उदयपुर को छोड़ना और शाहपुरा की वकालत से मौक़ूफ़ होना व पौत्र का जन्म	271	274
203.	उदयपुर से मि. विंगेट और कर्नल माइल्स का जाना	274	
204.	हिन्दुस्तान के कमाण्डर-इन् चीफ की बदली	274	275
205.	डूंगरपुर के वलीअहद खुमाणसिंह का देहान्त	275	
206.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का घोड़े से गिरना	275	
207.	आर्य-समाज की हानि होकर समाज के दो टुकड़े होना	275	278
208.	जोधपुर के राज्य में भोमियों का बल्वा होकर रफ़ा होना	278	
209.	ग्रंथकर्ता का जोधपुर व उदयपुर जाना	278	279

210.	देवलिया प्रतापगढ़ के कामदार मोहनलाल को इज़्ज़त व जीविका मिलना	280	
211.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह के पुत्र-जन्म और राजाधिराज का 'परोपकारिणी सभा' का सभापति होना	280	281
212.	बम्बई में हिन्दु-मुसलमानों की लड़ाई से बहुत बड़ी ख़ूरेज़ी होना	281	283
213.	हिन्दु-मुसलमानों के झगड़ों बाबत लॉर्ड लॅन्सडोन का स्पीच	283	284
214.	काबुल के अमीर अब्दुलरहमान ख़ाँ से अँगरेजी सरकार का नया अह्दनामा होना	284	285
215.	भरतपुर के महाराजा जसवंतसिंह का देहान्त और रामसिंह की गद्दीनशीनी	285	286
216.	बूंदी के महाराव राजा रघुवीरसिंह व करौली का महाराजा भँवरपाल को ख़िताब मिलना और अँगरेजी खिताबों की क़द्र	286	287
217.	हिन्दुस्तान की नेशनल कांग्रेस	287	
218.	लॉर्ड एल्गिन का वाइसरॉय मुक़र्रर होना और लैन्सडोन का जाना	288	289
219.	हिन्दुस्तान से अफीम की ज़िराअत व तिज़ारत बंद करने बाबत पादरियों की कोशिश व कमीशन की तहक़ीक़ात	289	290
220.	टोंक नवाब पर गवर्न्मेंट का दवाब	290	
221.	इंग्लैण्ड के आज़म-वज़ीर मि. ग्लैडस्टन का इस्तिफ़ा और लॉर्ड रोजबरी का वज़ीर होना	291	
222.	जम्मू के महाराजा प्रतापसिंह की पुत्री का विवाह और किशनगढ़ के महाराजा का जम्मू जाना	291	292
223.	उदयपुर के बिगड़े हुए मामले में कुछ सुधार	292	293
224.	जोधपुर के महाराजा के नाम पर अलंकारों का नया ग्रंथ बनना व महाराजा की उदारता	293	294
225.	जोधपुर के राज्य में 'जसवंत-सागर' तालाब का नया बनना व महाराजा साहब की महाराज प्रतापसिंह से रंजिश	294	296
226.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह को चोमू का ठाकुर गोविंदसिंह के आगे शर्मिंदगी उठाना	296	297
227.	ग्रंथकर्ता के जोधपुर में रहने की पुख़्तगी करना व ग्रंथकर्ता का आख़िरी वसीयतनामा	297	303
228.	ग्रंथ के द्वितीय भाग की समाप्ति	303	304
229.	ग्रंथ के शेष-संग्रह में क्षत्रियों की पूर्वापर-दशा और कर्तव्याकर्तव्य पर लेख	305	
230.	(i) क्षत्रियों का प्राचीन समय का बड़पन्न	305	307
231.	(ii) क्षत्रियों की मध्यम-दशा का वर्णन	307	309
232.	(iii) क्षत्रियों की अधम-दशा का वर्णन	309	312
233.	(iv) क्षत्रियों की फूट और क्षुद्र लोभादिक अवगुणों के संक्षिप्त उदाहरण	312	

234.	(v) गुहिलोतों में मेवाड़ के राजाओं का चरित्र	313	319
235.	(vi) राठौड़ वंश में जोधपुर के राजाओं का चरित्र	320	323
236.	(vii) राठौड़ वंश में बीकानेर के राजाओं का चरित्र	323	324
237.	(viii) राठौड़ वंश में कृष्णगढ़ के राजाओं का चरित्र	324	325
238.	(ix) कछवाहों में जयपुर के राजाओं का चरित्र	325	326
239.	(x) अलवर के राजाओं का चरित्र	326	327
240.	(xi) चंद्रवंशियों में जैसलमेर के राजाओं का चरित्र	327	328
241.	(xii) करौली के राजाओं के चरित्र	328	329
242.	(xiii) अग्निवंशियों में बूंदी के राजाओं के चरित्र	329	330
243.	(xiv) कोटा के राजाओं के चरित्र	330	331
244.	(xv) सिरोही के राजाओं के चरित्र	331	332
245.	(xvi) झालरापाटन के राजाओं के चरित्र	332	
246.	(xvii) राजाओं के चरित्र का सारांश	332	334
247.	(xviii) क्षत्रियों की अधमाधम-दशा	334	335
248.	(xix) वर्तमान राजा-महाराजाओं के चरित्र	335	343
249.	(xx) उमराव-जागीरदारों के चरित्र	343	346
250.	(xxi) कृषि करने वाले क्षत्रिय	346	
251.	(xxii) सेवकाई तथा चोरी-धाड़ा करने वाले क्षत्रिय	347	
252.	(xxviii) क्षत्रिय जाति के सुधार के उपाय	347	
253.	(xxiv) प्रथम उपाय	348	
254.	(xxv) द्वितीय उपाय	349	
255.	(xxvi) तृतीय उपाय	351	
256.	(xxvii) चतुर्थ उपाय	352	355

	परिशिष्ट		
	परिशिष्ठ संख्या - 1		
	1. मूल ग्रंथ की भूमिका के प्रथम एवं द्वितीय पृ. का डिजिटल प्रिंट	359	360

बारहठ कृष्णसिंह का जीवन-चरित्र
और
राजपूताना का अपूर्व इतिहास
(तृतीय भाग का सूची-पत्र)

क्रम. संख्या	विषय	पृष्ठ सं. से	पृष्ठ सं. तक
i	प्रस्तावना – प्रो. सतीष चंद्र – Ex. Chairman, University Grants Commission	(i)	—
ii	प्राक्कथन – नगेन्द्र बाला	(ii)	(iv)
iii	सम्पादकीय – फतह सिंह मानव	(v)	(xv)
1.	भूमिका	17	18
2.	मंगलाचरण	19	
3.	शाहपुरा के राजकुमार उम्मेदसिंह की सगाई होना	20	21
4.	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का बूंदी और कोटा जाना और पातर नन्हीं का भागना व रियासती इंतिज़ाम का हाल	21	25
5.	डूँगरपुर के महारावल व उनके उमराव – सरदारों का झगड़ा	25	26
6.	प्रतापगढ़ में असिस्टेंट का रहना नये सिरे तजवीज़ होना	26	27
7.	उदयपुर के महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास का देहान्त	27	31
8.	चित्र, महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास, उदयपुर	29	
9.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह की अनुचित राजनीति	31	39
10.	चित्र, महाराणा फतहसिंह, उदयपुर	33	
11.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का जोधपुर जाना	39	40
12.	क्वीन विक्टोरिया, क़ैसर-ए-हिन्द के प्रपौत्र का जन्म	40	
13.	चारण रामनाथ रत्नू का विलायत जाना	40	
14.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का उदयुपर जाना	41	
15.	जोधपुर के इंतिज़ाम में कुछ फेरफार	41	42
16.	झालरापाटण के राजराणा जालिमसिंह को पूरे इख़्तियारात मिलना	42	
17.	बाँसबहाला के राजकुमार शम्भूसिंह का क़ैद से निकलना	42	44
18.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का उदयपुर से शाहपुरा जाना वग़ैरा ज़ाती हाल	44	46
19.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह व उनके प्रधान मेहता पन्नालाल की लड़ाई का आखिरी नतीजा	46	48
20.	राजपूताना के पोलिटिकल अफसरों का शिमला जाना	48	
21.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह और शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह के बीच चाकरी का मुक़द्दमा शुरू होना	49	50
22.	बाँकानेर का राजा मानसिंह से मिलने राजाधिराज का अजमेर जाना	50	51

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
23.	कोटा की कौन्सिल के मेम्बरों में नाइत्तिफ़ाक़ी	51	
24.	रूस के जार एलैक्जैंडर तीसरे का देहान्त और जार निकोलस का तख़्तनशीन होना	51	52
25.	टोंक में असिस्टेंट पोलिटिकल एजेन्ट का जुदा मुक़र्रर होना	52	53
26.	जोधपुर राज्य में नई रेलवे लाइन बनने की तजवीज़	53	
27.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह को फिर कुछ इख़्तियार मिलना	54	
28.	जैसलमेर के महारावल शालिभाण का अजमेर मेयो कॉलेज जाना	54	55
29.	उदयपुर के महाराणा व रजिडेंट दौरा	55	
30.	बीकानेर के महाराजा गंगासिंह का अजमेर जाना	56	
31.	ग्वालियर के महाराजा माधवराव सिंधिया को रियासत का इख़्तियार मिलना	56	
32.	मैसोर के महाराजा चामराजेन्द्र वाडियार का देहान्त	56	57
33.	शाहपुरा के राजाधिराज का आगरा जाना और राजकुमार की शादी मुक़र्रर होना	58	
34.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का जोधपुर में नौकर होना	58	59
35.	भरतपुर के महाराजा रामसिंह और उनके दीवान पण्डित बिशनलाल का विरोध	60	61
36.	जयपुर के चलते हुए इंतिज़ाम में खराबी पड़ने के चिह्न	61	64
37.	जयपुर के इंतिज़ाम में फरेफार होना व ठाकुर गोविंदसिंह से तक़रार और महाराजा माधोसिंह का दुष्टाचार	64	68
38.	भरतपुर के महाराजा रामसिंह का माज़ूल होना	68	69
39.	झालावाड़ के राजराणा को इख़्तियार मिलने का सही हाल और राजराणा का खराब बरताव	69	71
40.	शाहपुरा के राजकुमार उम्मेदसिंह की शादी	71	73
41.	जोधपुर में घोड़ों का मेला के नाम से बड़ा जल्सा होना	73	74
42.	टोंक में जुदी पोलिटिकल एजेंसी का मुक़र्रर होना	74	75
43.	सिरोही महाराव केसरीसिंह को ख़िताब मिलने का दरबार	75	76
44.	उदयपुर से श्यामजी कृष्ण वर्मा का जाना और मेहता राय पन्नालाल सी.आई.ई. का इस्तीफ़ा	76	80
45.	चित्र, श्यामजी कृष्ण वर्मा, बार-एट-लॉ	77	
46.	कर्नल ट्रेवर का पेंशन लेकर विलायत जाना और क्रॉथवेस्ट का एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना के ओहदे पर मुक़र्रर होना और ट्रेवर की राजनीति का सारांश	81	82
47.	सीतामऊ के राजा भवानीसिंह का बेइख़्तियार होना	82	

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
48.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का सकुटुम्ब जोधपुर जाना और उदयपुर की तनख़्वाह का बहाल रहना	83	84
49.	संवत् 1951 विक्रमी के हाल की समाप्ति	85	
50.	सम्वत् 1952 विक्रमी का प्रारम्भ	85	
51.	उदयपुर के महाराणा का दौरा व पन्नालाल का पीछा आना, रेल बनना वग़ैरा और शाहपुरा की चाकरी का मुक़द्दमा	85	88
52.	किशनगढ़ में सोम-यज्ञ होना	88	89
53.	जोधपुर में जागीरदारों की चाकरी का नया क़ायदा व गोढवाड़ के भोमियों की बग़ावत वग़ैरा हाल	89	90
54.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह के राजकुमार होने की उम्मीद, आदि	90	
55.	जयपुर के रेजिडेंट की बदली और महाराजा के खुश होने का मौक़ा	90	
56.	देवलिया प्रतापगढ़ के राजकुमार मानसिंह का अजमेर मेयो कॉलेज में जाना	91	
57.	मलिका क्वीन विक्टोरिया के सालगिरिह पर ख़िताब	91	
58.	जामनगर के महाराजा जाम वीभाजी का देहान्त और मुसलमान पासवान के पेट से पैदा हुआ पासवानिया जसवन्तसिंह का गद्दी बैठना	91	92
59.	चित्राल का मुल्क अँगरेजी सरकार के फ़तह होना	92	93
60.	अफ़गानिस्तान के अमीर के छोट पुत्र नसरुल्ला खां का विलायत जाना	94	
61.	चीन और जापान के युद्ध में जापान की विजय	94	96
62.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का जोधपुर के राजकुमार से मिलना, रेल खोला जाना और श्यामजी को पीछा रखना	96	98
63.	शाहपुरा के राजाधिराज का चाकरी के मुक़द्दमे के फैसले बाबत उदयपुर जाना और आपस में फैसले की नाउम्मेदी	98	99
64.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह की रानी का देहान्त और नई सगाई	99	100
65.	जोधपुर में गोढवाड़ के भोमियों से सुलह होना और महाराजा जसवंतसिंह की बीमारी	100	102
66.	जयपुर में उमराव-सरदारों की कमजोरी और बाबू कांतिचंद्र की पार्टी का ताक़तवर होना	102	104
67.	भरतपुर के महाराजा को मसूरी भेजना	104	
68.	चित्राल पर शुजाउल्मुल्क का मिहतर मुक़र्रर होना	104	
69.	पामीर की सीमा क़ायम होना	104	105
70.	इंग्लिस्तान में होम-रूल होकर कंसरवेटिवों की फ़तह होना	105	
71.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) की माता का बीमार होकर आराम होना	105	
72.	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का खेदकारक परलोकवास होना और महाराजा सरदारसिंह की गद्दीनशीनी का हाल	106	112

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
73.	चित्र, महाराजा जसवंतसिंह, जोधपुर	108	
74.	बूंदी के महाराव राजा रधुवीरसिंह का जोधपुर आना	112	
75.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह का जोधपुर आना	112	113
76.	महाराजा सरदारसिंह की गद्दीनशीनी का हाल	113	115
77.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का जोधपुर आना	115	116
78.	बीकानेर के महाराजा गंगासिंह का जोधपुर आना	116	
79.	जोधपुर के मुसाहिब-आला की जगह लेने की पण्डित सुकदेवप्रसाद की कोशिश	116	117
80.	पातर नन्हीं को आज़ाद किया जाना वग़ैरा हाल	117	119
81.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का जोधपुर आना	119	120
82.	मातमी के वक़्त पेशवाई और हमेशा के लिए पहुँचाने जाने का कायदा बंद करने की काररवाई	121	
83.	बैठक वग़ैरा तक़रारों के सबब तीन रईसों के जोधपुर आने का इरादा मुल्तवी होना	121	122
84.	महाराजा सरदारसिंह का महाराज प्रतापसिंह के बंगले से अलग होकर जुदा रहना	122	123
85.	मेवाड़ के उमराव आसींद के रावत अर्जुनसिंह का पागल होना और कुराबड़ के रावत जैतसिंह का ज़हर से मरना	123	124
86.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह का हरिद्वार जाना और माँ-बेटों की रंजिश का सबब	124	125
87.	राजपूताना के एजेंट गर्वनर जनरल क्रॉथवेस्ट हुए	125	
88.	सैलाना के राजा दूल्हेसिंह का देहान्त और जसवंतसिंह की गद्दीनशीनी	125	126
89.	नवाब गवर्नर जनरल हिन्द, लॉर्ड एल्गिन का दौरा	126	128
90.	रीवाँ के महाराजा वैंकटेश्वररमण रामानुजप्रसाद को रियासत का इख़्तियार मिलना	128	
91.	काबुल में अँगरेजी एजेंट का मारा जाना	128	129
92.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह का मातमपुर्सी के लिए जोधपुर जाना और वहाँ का बरताव	129	132
93.	जयपुर के महाराजा माधोसिंह की दिनचर्या और उनके छोटे खयालातों का ज़िक्र और सलामी की तोपों का बढ़ना	132	134
94.	जोधपुर के महाराजा सरदारसिंह का जयपुर जाना	134	135
95.	जोधपुर का राज्य-कारोबार महाराज प्रतापसिंह के सिपुर्द होना	135	136

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
96.	धौलपुर के राणा निहालसिंह का जोधपुर आना	136	
97.	इन्दौर के महाराजा सियाजीराव होल्कर को राज-काज सुधारने के लिए छह महीनों की मोहलत मिलना	136	
98.	झालारापाटन के राजराणा जालिमसिंह को गद्दी से उतारना और गद्दी से उतारने की काररवाई का हाल	137	142
99.	कोटा के महाराव का झालावाड़ मिलने की कोशिश के लिए इधर-उधर जाना व रीवाँ की सगाई का मुल्तवी रहना	142	143
100.	रीवाँ के महाराजा वैंकटेश्वरमण रामानुजप्रसाद की रतलाम में शादी	143	
101.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह की पुत्री का विवाह	143	144
102.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का कोटा और शाहपुरा होकर पीछा जोधपुर आना	145	
103.	सम्वत् 1952 के हालात की समाप्ति	145	
104.	सम्वत् 1953 के हाल का प्रारम्भ होना	145	
105.	जोधपुर में घोड़ों का मेला व रियासत में नाइत्तिफ़ाक़ी	145	149
106.	उदयपुर में अशांति फैलने के चिह्न और रईसों के हाथ से गीराई का महकमा लेने का गवर्न्मेंट का उद्योग और महाराणा की पेशवाई का बंद किया जाना	149	151
107.	शाहपुरा के राजाधिराज व उनके कामदार की नाइत्तिफ़ाक़ी और राजाधिराज की सफ़र	151	152
108.	जयपुर की कौंसिल से बगरू के ठाकुर का निकाला जाना	152	153
109.	मद्रास के गर्वनर की बदली	153	
110.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह का भुज में सम्बन्ध होना और रईसों का आबू जाना	153	
111.	देवलिया प्रतापगढ़ के कामदार मोहनलाल पंड्या का निकाला जाना	154	
112.	झालारापाटन के पदच्युत राजाराणा जालिमसिंह का बनारस जाना और इनके लिए पार्लामेंट में बहस होना	154	155
113.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का उदयपुर जाना	155	
114.	ईरान के बादशाह नासिरुद्दीन का मारा जाना और मुज़फ़्फ़रुद्दीन का तख़्त बैठना	155	156
115.	जयपुर राज्य के कारोबार में अँगरेजी सरकार की ख़राब मंशा	156	157
116.	शाहपुरा के राज्य में बुरे दिन आने के चिह्न	157	158
117.	देवलिया प्रतापगढ़ में पारसी फ्रामजी का पधान होना	158	
118.	कोटा महाराव उम्मेदसिंह के विवाह की तैयारी	158	159
119.	बीकानेर के महाराजा गंगासिंह का बम्बई जाना	159	
120.	बाँसबहाला के राजकुमार शम्भूसिंह की मूर्खता	159	160

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
121.	उदयुपर के मगरा जिला के भीलों से महाराणा की हुकूमत उठा देने का अँगरेजी सरकार का इरादा	160	163
122.	जोधपुर में महाराजा सरदारसिंह और महाराज प्रतापसिंह की नाइत्तिफ़ाक़ी	163	166
123.	चित्र, महाराज कर्नल सर प्रतापसिंह, जोधपुर	165	
124.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का उदयपुर व शाहपुरा जाना	166	167
125.	शाहपुरा के राम-द्वारा का महंत दलसुधराम का देहान्त	167	
126.	काबुल में अँगरेजी नये एजेंट का मुक़र्रर होना	167	
127.	वाइसरॉय, गवर्नर जनरल हिन्द का रियासतों में दौरा	167	168
128.	लाट साहब का अजमेर जाना	168	
129.	लाट साहब का उदयपुर जाना और पेशवाई की बहस	168	169
130.	लाट साहब का जयपुर जाना और पेशवाई पर तक़रार	169	170
131.	लाट साहब का बीकानेर जाना	170	
132.	लाट साहब का जोधपुर जाना	170	171
133.	लाट साहब का बड़ौदा जाना और बत्तीस मनुष्यों की मृत्यु	171	
134.	लाट साहब का इन्दौर व उज्जैन जाना और दौरे का समाप्त होना	171	172
135.	जोधपुर में महाराज प्रतापसिंह का इस्तीफ़ा नामंज़ूर होना और मेले का हाल	172	173
136.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह को राज्य का पूरा इख़्तियार मिलना	173	
137.	जयपुर के आम-दरबार में सीकर व खेतड़ी वालों का हत्क़	174	
138.	भारतवर्ष में सर्वव्यापी दुर्भिक्ष और महामारी का रोग	174	175
139.	उदयपुर के उमरावों की मृत्यु और तलवार-बँधाई वग़ैरा हाल	175	176
140.	जोधपुर के महाराजा सरदारसिंह की सख़्त बीमारी और कुछ रियायती इख़्तियार का मिलना	176	177
141.	जयपुर के रजिडेंट की बदली	177	
142.	महामारी की बीमारी का हाल	178	
143.	विक्रमी सम्वत् 1953 के हालात की समाप्ति	178	
144.	विक्रमी सम्वत् 1954 का प्रारम्भ होना	178	
145.	झालावाड़ के राज्य की बरबादी और कोटा के राज्य की आबादी	178	180
146.	कोटा के महाराव उम्मेदसिंह की शादी और रियासती इंतिज़ाम में फेरफार	181	181
147.	जोधपुर में महाराजा सरदारसिंह का आबू जाना और महाराज प्रतापसिंह का विलायत जाना व बड़ी इज़्ज़त होना	181	182
148.	खेतड़ी के राजा अजीतसिंह व शाहपुरा के राजकुमार उम्मेदसिंह का इंग्लैण्ड जाना और वहाँ का हाल	182	183
149.	भिणाय के राजा उदयसिंह का देहान्त	183	

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
150.	बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की उदयपुर से नाइत्तिफ़ाक़ी होकर देविलया प्रतापगढ़ शादी होना	183	184
151.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह की सलामी में दो तोप का इज़ाफ़ा और महाराणा व उनके उमरावों में नाइत्तिफ़ाक़ी वग़ैरा हाल	184	186
152.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का हवेली बनवाने को शाहपुरा जाना	186	
153.	कलकत्ता के मुसलमानों का बाग़ी होना और उनका मारा जाना	186	187
154.	हिन्दुस्तान की उत्तरी सीमा पर अफ़गान लोगों के साथ अँगरेजों का युद्ध और देशी रियासतों की मदद	187	188
155.	महाराज प्रतापसिंह का विलायत से आकर अफ़ग़ानों की लड़ाई में जाना और महाराजा सरदारसिंह को कुछ इख़्तियार मिलना	188	189
156.	उदयपुर के महाराणा व वहाँ के रेजिडेंट की नाइत्तिफ़ाक़ी और ए.जी.जी. का उदयपुर जाना वग़ैरा हाल	189	190
157.	शाहपुरा के राजाधिराज की माता का देहान्त और उदयपुर का मुक़द्दमा	190	191
158.	इन्दौर के महाराजा सियाजी राव होल्कर का राजपूताना में दौरा	191	193
159.	शाहपुरा के राजकुमार उम्मेदसिंह और खेतड़ी के राजा अजीतसिंह का इंग्लैण्ड से पीछा आना	173	
160.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) के दूसरे पुत्र किशोरसिंह का विवाह	193	194
161.	किशनगढ़ के महाराजा शार्दूलसिंह की राजकुमारी का अलवर के महाराजा जयसिंह के साथ विवाह होना	194	
162.	अफ़ग़ानिस्तान की सीमा के युद्ध से कर्नल सर प्रतापसिंह का विजयी होकर जोधपुर पीछा आना	194	195
163.	झालरापाटन पर भवानीसिंह का रईस होना	195	
164.	उदयपुर (मेवाड़) में 'भोमट' और सिरोही राज्य की सरहद-बरारी और राजकुमार की सख़्त बीमारी	195	196
165.	जोधुपर के महाराजा सरदारसिंह के राजपुत्र का जन्म और महाराजा को अपनी रियासत का पूरा इख़्तियार मिलना और महाराजा व उनके चाचा प्रतापसिंह की नाइत्तिफ़ाक़ी में प्रतापसिंह का एक बड़ा भारी अवगुण का कथन और महाराजा की अय्याशी	196	200
166.	उदयपुर के महाराणा का दौरा और उदयपुर के इंतिज़ाम में फिर खराबी पड़ने की सूरत	200	201
167.	शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह का सुलह करने को उदयपुर जाकर नाकामयाबी के साथ पीछा आना	201	202

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
168.	झालारापाटन के राज्य को बाँटने की काररवाई का मुल्तवी रहना	202	
169.	डूँगरपुर के महारावल उदयसिंह का देहान्त	202	203
170.	एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना के ओहदे से क्रॉथवेस्ट का जाना और मार्टिण्डेल का मुक़र्रर होना व रईसों का आबू जाना	203	
171.	हिन्दुस्तान के मुसलमानों में मज़हबी जोश और बग़ावत करना	203	204
172.	हिन्दुस्तान में महामारी की बीमारी का जोर	204	
173.	भारतवर्ष के बड़े विद्वान् गट्टूलाल का देहान्त	204	205
174.	विक्रमी सम्वत् 1954 के हालात का समाप्त होना	205	
175.	विक्रमी सम्वत् 1955 के हाल का प्रारम्भ होना	205	
176.	जोधपुर के महाराजा सरदारसिंह का प्राण-हानि से बचना और प्रतापसिंह के साथ अधिक नाराज़गी	205	207
177.	उदयपुर के महाराणा फतहसिंह का अनुचित लोभ, बदमिज़ाजी व रजिडेंट की नाराज़गी	207	208
178.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का शाहपुरा और उदयपुर जाना	208	—
179.	'वंशभास्कर' नामक ग्रंथ पर टीका बनाना	209	
180.	चित्र, महाकवि सूर्यमल मिश्रण	210	
181.	स्पेन और अमेरिका में घोर युद्ध	209	
182.	इंग्लिस्तान के प्रधानमंत्री मि. विलियम ईवर्ट ग्लैडस्टन का देहान्त	209	211
183.	करौली के महाराजा भँवरपाल की बनेड़ा में शादी	211	212
184.	कश्मीर और भोपाल के सिक्कों का बंद होना	212	
185.	उदयपुर के इन्तिज़ाम को सुधारने की बड़े साहब की हिदायत आदि	212	213
186.	जोधपुर का हाल, महाराजा का बूंदी जाना	213	214
187.	अलवर के महाराजा को पीछा अजमेर मेयो कॉलेज भेजना	214	
188.	प्रिंस ऑफ वेल्स के पाँव में चोट आकर लँगड़ा होना	214	
189.	शाहपुरा के राजाधिराज की सफ़र और राजकुमार की बीमारी	214	215
190.	ग्रंथकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) का शाहपुरा जाना	215	
191.	जर्मनी के प्रधानमंत्री प्रिंस बिस्मार्क का देहान्त	215	
192.	चीन के राज्य का वृत्तान्त	215	216
193.	इस ग्रंथ की समाप्ति और ग्रन्थकर्ता (बारहठ कृष्णसिंह) की बीमारी	216	

परिशिष्ट सूची

क्र.सं.	विवरण	पृ. सं. से	पृ. सं. तक
1.	मूल ग्रंथ की भूमिका के पृ.सं. 1 व 2 का डिजिटल प्रिन्ट	219	220
2.	वंशभास्करटीकाया: पूर्वपीठिका, लेखक- बारहठ कृष्णसिंह	221	230
3.	'कृष्ण नाममला डिंगल कोश' की भूमिका, लेखक- श्री अगरचंद नाहटा	231	240
4.	काव्य-उदधि के कुशल मंथक : कृष्णसिंह बारहठ लेखक- डॉ.सी.पी.देवल	241	246
5.	कृष्णसिंह बारहठ का ग्रूप-फोटोग्राफ	247	
6.	शाहपुरा की हवेली का चित्र	249	
7.	राज्य सरकार का नोटिफिकेशन	251	